दो शब्द

अग्रेजी के सुप्रसिद्ध लेखक रस्किन ने एक जगह लिखा है–" ससार मे शायद ही ऐसी कोई वस्तु हो जिसे कोई व्यक्ति अन्य की अपेक्षा अधिक सस्ती न वना सकता हो। और ऐसे व्यक्ति के शिकार होते है वे लोग जो केवल वस्तु के मूल्य से ही निर्देशित होते है, उसके गुण से नही।" भारत मे औपध उद्योग के सदर्भ मे रस्किन की यह उक्ति बिल्कुल सही वैठती है। गत् ३५ वर्षो से आयुर्वेद सेवाश्रम आयुर्वेदिक औषधियॉ के क्षेत्र मे जनता की सेवा मे प्रयत्नशील है। कई कारणो से हम कुछ चुने हुए उत्पादन ही जनता को दे पा रहे थे – जैसे कि ब्राह्मी आवला तैल, दन्त-मजन, मातृ-जीवन, ब्राह्मीजीवन सार्सापरिला, द्राक्षासव, च्यवनप्राश आदि। हमारे कई शुभैषी वैद्यो व ग्राहको का बराबर आग्रह रहा कि हम अपन न म के अनुकूल विशुद्ध आयुर्वेदिक औपधियो का उत्पादन व्यापक आधार पर करे।

किन्तु आज के युग मे ऐसी औषधियो का निर्माण करना हमारे लिए एक दुविधा का विषय वन गया। आज वाजार मे इतनी कृत्रिम और सस्ती औपधियॉ विकती है कि विशुद्ध (और कुछ अधिक मूल्यवाली) औपधियॉ उनकी प्रतिस्पर्द्धा मे कहॉ तक ठहर पाएँगी यह सदेहास्पद ही था। किन्तु फिर भी लोक-स्वास्थ्य की प्रधानता को स्वीकार कर आयुर्वेद सेवाश्रम ने विशुद्ध औषधियो के निर्माण का साहसिक कदम उठाया भले ही इस प्रयास मे आर्थिक लाभ अपेक्षाकृत कम ही क्यो न हो। आयुर्वेदिक औषधियो का निर्माण हमारा व्यापार ही नही वह हमारा ध्येय (मिशन) है। प्रचार के इस युग मे भी सेवाश्रम का यह सतत प्रयास है कि वह शास्त्रोक्त पद्धति से औपधियॉ तैयार करके वेचे, भले ही फिर कीमते कुछ अधिक ही क्यो न रखनी पडे और अधिकाधिक ग्राहको तक पहुॅचने मे हमे कुछ अधिक समय ही क्यो न लगे।

वास्तविकता की शक्ति और जनता के बदलते हुए दृष्टिकोण मे हमारी दृढ आस्था है और इसी आस्था के आधार पर हमारा विश्वास है कि आयुर्वेद सेवाश्रम की औषधियॉ अधिकाधिक गुणकारी व लोकप्रिय सिद्ध होगी।

— अनुक्रमणिका —

❁ आधार-ग्रंथ ❁

१.	अ. हृ.	१.	अष्टागहृदय
२.	औ गु. शा	२.	औषधीगुणधर्मशास्त्र
३.	च. सं. चि	३.	चरकसहिता चिकित्सा
४.	नि. र.	४.	निघंटुरत्नाकर
५.	बृ. यो. त.	५.	बृहद्योगतरगिणी
६.	भा. भै र	६.	भारतभैषज्यरत्नाकर
७.	भै. र.	७.	भैषज्यरत्नावली
८.	यो. र	८.	योगरत्नाकर
९.	र. चं.	९.	रसचण्डाशु
१०.	र. प्र. सु.	१०.	रसप्रकाशसुधाकर
११.	र. सा. सं	११	रसायनसारसग्रह
१२	र.र.स.	१२.	रसरत्नसमुच्चय
१३	र. र.	१३	रसरत्नाकर
१४.	र. यो. सा.	१४.	रसयोगसागर
१५.	वृ. वै.	१५	वृद्धवैद्याधार
१६.	वै. जी.	१६.	वैद्यजीवन
१७.	वै. सा. सं.	१७.	वैद्यसारसंग्रह
१८.	शा. र.	१८.	शाङर्गधर
१९.	ना. नौ.	१९.	नावनीतकम्

आयुर्वेदिक उपचार

तथा

सेवाश्रम की औषधियाँ

मनुष्य कई कारणो से रोगी बनता है। प्रकृति माता के व्यावहारिक शास्त्रीय नियमो को जानकर अगर इस चराचर-सृष्टि के किसी भी पदार्थ का सशोधन करे तो उसे अवश्य ही यश की प्राप्ति हो सकती है। परन्तु यहाँ हमारा विचार मानव तक ही सीमित है। सिर्फ अब मानव सबन्धी विचार ही कर्तव्य है।

आजकल वैद्यकशास्त्र एक सक्रातिकाल की अवस्थाओ से गुजर रहा है। चक्र फिरने से फिर पहले स्थान पर जैसे आ जाता है वैसे ही वैदिक काल से जो वैद्यक-शास्त्र का चक्र परिभ्रमण कर रहा है वह अनेक अवस्थाओ से गुजरते-गुजरते प्रथम चरकमुनि ने जो वैद्यक शास्त्र के मूल सिद्धान्तो को कहा फिर उसी मूल-स्थान पर आएगा ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है, क्योकि वह नैसर्गिक अर्थात् शास्त्रीय एव वैज्ञानिक है।

परन्तु इस नैसर्गिक शास्त्र का आकलन हम वैद्यक-वर्ग को ही होना मुश्किल है। तब सर्वसाधारण समाज के विषय मे क्या कहा जाय ? वर्तमान समय मे प्रतिदिन नये-नये वैद्यक सिद्धान्त निर्मित होते जा रहे है और उतनी ही शीघ्रता से नष्ट भी हो रहे है। यह तो आजकल की वास्तविक परिस्थिति है। इसे ही विकसित-शास्त्र कहने की विशेषतया प्रथा चल पडी है ?

गतिशील जीवन के सिद्धान्त

जीवन तो गतिशील है। जहाँ-जहाँ गति है वहाँ घर्षण भी है। यह पहला सिद्धान्त है। जहाँ घर्षण है वहाँ गन्दा याने मल का सचय होता है। मल का सचय अगर विशिष्ट मर्यादा से अधिक निर्मित या सचित हो तो विकृति या विकार उत्पन्न होता है। इसे ही रोग कहते है। मानव-जीवन भी ऐसा ही

गतिशील है। वह हमेशा ही कर्मशील रहता है अर्थात् कुछ न कुछ काम करता ही रहता है। विचार, पठन, पाठन, व्यायाम, भोजन और निद्रा आदि ये सब काम ही है। इसी कारण जीवन को गतिशील या गतिमान कहते है। अत निसर्ग नियम के अनुसार वहाँ मल का सचय होना अनिवार्य याने लाजिमी है।

जहाँ गन्दगी जमा हुई वहाँ से उसे हटाना भी आवश्यक होता है। इस तरह की प्राकृतिक आवश्यकताओ को ही वैज्ञानिक तत्व या सिद्धात ऐसा नाम दिया गया है। इस गन्दगी को हटाने की क्रिया को ही आयुर्वेद मे 'शोधन-चिकित्सा' ऐसा नाम दिया गया है और वही चिकित्सा-शास्त्र का मूल सिद्धान्त माना जाता है।

जीवन तो शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा इन सब का पुजीभूतरूप या सम्मिलन ही है। वह तो गतिशील है। जहाँ वेग या गति है वहाँ उष्णता याने गर्मी भी जरूर रहती है यही दूसरा सिद्धान्त है। गति और उष्णता इन दो शक्तियो को काब मे रखते हुए कार्यकारी बनाने के लिये और एक तीसरी शक्ति की नितान्त आवश्यकता रहती है। वह तीसरी शक्ति स्नेह है। इनको ही आयुर्वेद-शास्त्र मे त्रिधातु, त्रिदोष (वात, पित्त, कफ,) ऐसे शास्त्रीय नाम है।

ये तीन शक्तियाँ स्वाभाविक रीति से समान प्रमाण मे रहे तो जीवन निरोग रहता है, और अस्वाभाविक रीति से (विषम) विद्यमान हो तो जीवन रोगी बनता है ऐसा कहते है। किसी भी शक्ति या गुण का प्रकट होना और कार्यकारी होना दूसरे द्रव्य की सहायता के बिना नही होता। इसीलिये तीनो शक्तिया द्रव्य कही जाती है। इस प्रकार इन तीन द्रव्यो के स्वभाव, स्वरूप और गुण इस तरह वर्णन किया गया है। अत आयुर्वेद वैद्यक-शास्त्र मे प्रत्येक द्रव्य का गुणधर्म इन शब्दो मे व्यक्त किया है। ये गुण बीस माने जाते है।

रोग-चिकित्सा

चराचर सृष्टि पचमहाभूतात्मक याने वैद्यक शास्त्र के अनुसार त्रिदोषात्मक होने से मानव के जीवन मे इस गुणात्मक अभाव और आधिक्य को उन गुणो से युक्त द्रव्य से किया जाता है। इस गुण-युक्त विशेष चिकित्सा-पद्धति को ही पथ्यापथ्य चिकित्सा और औषधि-चिकित्सा ऐसा आयुर्वेद के अनुयायी वैद्यको ने कहा है।

पथ्यापथ्य चिकित्सा –इस चिकित्सा के तत्व को आयुर्वेद के वैद्यको ने प्रथमत महत्व का स्थान दिया है, क्योकि पथ्यापथ्य चिकित्सा के पालन के सिवा औषधि-चिकित्सा का रोग-विमुक्ति की दृष्टि से कभी भी उपयोग नही हो सकता है। यह तो शास्त्र को ध्यानपूर्वक परिशीलन करने से सहज ही ध्यान मे आ जायगा। इसी कारण वैद्यक चिकित्सा शास्त्र का पहला सिद्धान्त पथ्यापथ्य माना गया होगा।

"पथ्ये सतिगदार्तस्य किमौषधि निषेवनम्।
पथ्येऽसति गदार्तस्य किमौषधि निषेवनम्॥"

अर्थ –पथ्य के आचरण करने मे औषधि की क्या आवश्यकता है? अपथ्य के आचरण मे औषधि के सेवन से भी क्या लाभ है?

औषधि-चिकित्सा

औषधि-चिकित्सा प्रधानतया दो प्रकार की है। १ निदान परिवर्जन (शोधन) २ शमन। इन दोनो चिकित्सा-पद्धतियो मे औषधि-चिकित्सा का सबन्ध आता है। आयुर्वेदिक वैद्यक शास्त्रज्ञो ने मूल द्रव्य से गुणदायी तथा प्रभावी औषधियो के निर्माण मे तीन तत्वो को माना है।

१ सयोगीकरण
२ मर्दन
३ सूक्ष्मीकरण

१. सयोगीकरण – आयुर्वेद वैद्यक मे औषधियो का समिश्रण किया जाता है। यह जीवन त्रिगुणात्मक होने से उसमे जो विषमता पैदा होती है वह भी सयोगात्मक होने से ऐसी अवस्था मे उसका साधनोपाय भी एक द्रव्यात्मक होना उचित नही होगा। अत सयोगीकरण यह शास्त्रीय तत्व है। उदाहरण के तौर पर जैसे सुदर्शन चूर्ण है। यह बहुत से द्रव्यो का समिश्रण है। हमने एक बार उसमे विद्यमान कुछ द्रव्यो की अनावश्यकता जानकर उन द्रव्यो को कम करके जीर्ण-शीतज्वर पर याने जाडे के बुखार पर इस्तेमाल करके देखा। तीन सप्ताह रोगी को सेवन कराने पर भी गुण नही हुआ। मूल पाठानुसार सुदर्शन चूर्ण देते ही गुण दिखाई देने लगा। तब शास्त्रीय-सिद्धान्त और अनुभव इस तरह के प्रयोग द्वारा ही पाठ मे निश्चित किए गये होगे इस निर्णय को हम पहुँचे।

२. **मर्दन** –"मर्दन गुणवर्धनम्" यह तत्व बहुत ही सुप्रसिद्ध है। मूल द्रव्यो को शुद्ध स्वरूप मे लेकर जितना मर्दन याने घोटा जाता है उतने ही अधिक प्रमाण मे उस मूल द्रव्य के गुण वृद्धिगत होते है और वे शरीर मे शीघ्र ही शोषित होते है तथा पचते भी है । अतएव द्रव्यो का मर्दन उत्तम रीति से होने से मूल वस्तु के गुणवर्धन, शोषण और पाचन ये तीनो गुण उस द्रव्य मे निर्माण होते है। मूल गुण–गुणवर्धन याने शक्तिवर्धन नही यह समझ लेना अत्यावश्यक है।

३. **सूक्ष्मीकरण** –स्थूल द्रव्य के जो गुण होते है उनके विरुद्ध गुण वे ही द्रव्य अगर परमाणु स्वरूप मे लाये जाये तो निर्माण होते है। उदाहरण :– सुवर्ण सूतशेखर इसमे ताम्र याने तावा है। अथवा किसी भी ताम्र भस्म के योग को देखिए। वाति अर्थात् कय पर उसका निश्चित उपयोग होता है। ताम्र का गुण वाति को निर्माण करने का है। परन्तु उसका सूक्ष्मीकरण होने से उसमे विरुद्ध गुण उत्पन्न हुए । मर्दन से सिर्फ कुछ विशिष्ट द्रव्यो की मदद से सूक्ष्मीकरण हो सकता है।

इन तीन शास्त्रीय तत्वो से ही आयुर्वेद शास्त्र की औपधीकरण प्रक्रिया निश्चित की गयी है। जितना शास्त्र-शुद्ध प्रक्रिया का अवलव किया जायगा उतने ही प्रमाण मे औपधि प्रभावशाली तथा गुणकारी सिद्ध होगी। तब पथ्या-पथ्य, निदान परिवर्जन (शोधन) और शमन इन तीन चिकित्सा के तत्वो को ध्यान मे रखकर वैद्य समाज जितना इन नियमो का पालन करेगा उतने ही परिमाण मे आयुर्वेद-चिकित्सा-पद्धति यशस्वी याने कामयाब होगी । नही तो हम नूतन चिकित्सा पद्धति अर्थात् ऐलोपैथिक की शान और शौकत से मोहित होकर सत्यमय चिकित्सा शास्त्र को बाजू मे रखते हुए केवल रोग को दवाके रखनेवाले चिकित्सा-तन्त्र का अवलम्बन कर रहे है। अस्तु।

सक्षेपत आयुर्वेद शास्त्रानुसार रोग-विकार औषधि और पथ्यापथ्य विचार इन तीनो के बारे मे यहाँ विचार उपस्थित किया है। इसी दृष्टिकोण से अगले प्रकरणो मे पथ्यापथ्य विचार तथा औपधि-चिकित्सा का विचार किया गया है।

★

रोग-चिकित्सा के कुछ महत्त्वपूर्ण नियम

एक ही रोग मे अनेक औषधियो का उपयोग किया जाता है। परन्तु अवस्था-भेद मे उनका उपयोग करना चाहिए। रोग-निदान और औषधि की योजना करने समय निम्नलिखित बातो का विचार करना विशेष महत्व रखता है।

(१) १ देश, काल।

२ प्रकृति, शरीर-बल, अग्नि-बल और वय।

३ सात्म्यासात्म्य याने अनुकूल तथा प्रतिकूल (आदते)।

४ दोष-बल, व्याधि-स्थान और व्याधि की अवस्था।

५ पथ्यापथ्य, औषधि और औषधि की मात्रा।

(२) **अनुपान** – यथा तैल जले क्षिप्त क्षणेनैव प्रसर्पति।
अनुपानबलादगे तथा सर्पति भेषजम्।

अर्थ – जिस तरह तैल-बिन्दु पानी मे एक क्षण मे चारो तरफ तत्काल फैल जाता है उसी तरह औषधि भी अनुपान के कारण शरीर मे जल्दी-फैल जाती है। इसीसे औषधि का गुण शरीर मे शीघ्र कार्यकारी बनता है।

अनुपान –योजना मे इस शास्त्रीय तत्व के बारे मे अधिक सशोधन होने की आवश्यकता है। इस तरह वैज्ञानिक-पद्धति से सशोधन होने पर इस प्राप्त अनुभव को ही शास्त्रीयता का महत्व प्राप्त होता है।

तुलसी का रस और अदरक का रस ये दोनो अनुपान कुछ तीक्ष्ण है इस लिए आधा तोला (१ चाय का चम्मच) इससे अधिक नही लेना चाहिए। मोरावला याने आँवले का मुरब्बा तथा अनार का अवलेह आदि सर्व प्रकार के लेह्य साधारणत दो चाय के चम्मच (१ तोला) लेने मे कोई हर्ज नही है। घी, शहद ये सब साधारणत दो चम्मच (१ तोला) लेना चाहिए, किन्तु घी+मधु ये समिश्र अनुपान विषम लेना चाहिए। चावल का धोया पानी, छाछ, दूध, गरम पानी ये सब ५ तोले तक लेने मे कोई हर्ज नही है।

पथ्यापथ्य

पथ्य याने स्वास्थ्य की और रोग की अवस्था मे शरीर और मन के हितकारक आहार-विहार, रोग मे रोगी मनुष्य की प्रकृति (Temperament), अग्नि ,आदते और मानसिक शक्ति आदि को ध्यान मे रख कर जो गुणवृद्धि या क्षय के कारण अर्थात् दोप-दृष्टि के हेतू से रोग उत्पन्न हुआ हो तो उसी के अनुसार पथ्यापथ्य की योजना करनी चाहिए। औपधि-योजना के जैसे ही पथ्य और अनुपान योजना भी चिकित्सा ही का एक भाग है। अत पथ्य, अनुपान, औपधि ये तीन अग परस्पर कार्यकारी बनने मे सहायक हो इस दृष्टि से योजना करनी होगी ।

औषधियों का विवरण-पत्र

१ अग्निमांद्य-

औषधियाँ -स्वर्णमालिनीवसंत, महालक्ष्मीविलास, आरोग्यवर्धिनी (समान काल में) अग्निकुमार, हिंग्वाष्टक, द्राक्षारिष्ट, कुमारी आसव, शक्तिवर्धक मिश्रण। **अनुपान**-उष्णजल, पाचकरस, पान का रस, पंचतिक्तकषाय, कनकासव, चणकक्षार। **पथ्य**-तक्र, योग्य नियमित समय में ताजा अन्न, अमचूर, जीरा, लहसुन, नीबू, सैंधव, चूकापत्र, अनार, आंवला, चचेडा, हलके अन्न, पुराने चावल का पानी, मूंग का यूष, अदरक, सहजना, व्यायाम। **अपथ्य**-भारी पदार्थ का सेवन, केला भैंस का दुग्ध, दही, तिल, भोजनोपरान्त नींद लेना।

२ अजीर्ण (अपचन)-

औषधियाँ -संजीवनी-गुटी, विषूचिकावटी, क्रव्यादिरस, पाचकगुटी, कपर्दिकभस्म, प्रवाल (अग्निपुटी, मौक्तिकभस्म, शंखभस्म, वाडवानलचूर्ण, अग्नितुंडी, अग्निकुमार, रामबाणरस, चविकासव, **अनुपान**-हिंग, सैंधवयुक्त तक्र, पोदीने का रस, सौंफ का अर्क, प्याज का रस, नीबू का रस, अजवायन का अर्क, उष्णजल। **पथ्य**-पूर्व का सेवन किया हुआ जब तक पच न जाय तब तक उपवास करना, पोदीना, लहसुन, धनिया, मूली इ सेवन। **अपथ्य**.- अग्निमांद्यानुसार।

३ अतिसार-

औषधियाँ -आनंदभैरव, अमृतवटी, रसोनवटी, संजीवनी गुटी, कुटजावलेह, कुटजारिष्ट, लघुगंगाधरचूर्ण, वृद्धगंगाधरचूर्ण, अजमोदादिचूर्ण, दाडिमाष्टक, अतिसार चूर्ण। **अनुपान**-बेलफल का मुरब्बा, चावल का धोवन, कुडात्वक **पथ्य**-अपचन के कारण रोगारंभ हो तो उपवास, पुराने चावल का धोवन, तक्र, दही, नोनिया, चूका, उष्ण जल, मक्खन, अमचूर, रात को सोने के पूर्व अल्प मात्रा में विजया, आराम करना, मन का समाधान, बेलगिरी, मसूर का यूष, कपित्थ, अनार, लाई, चौलाई, बकरी का दूध, सोंठ, शहद। **अपथ्य** -अधिक जल का सेवन, भारी पदार्थ, अति शीतल पदार्थों का सेवन, विरुद्ध भोजन।

४ अपस्मार–

औषधियाँ –स्मृतिसागर, कल्याणघृत, लशुनादितैल, ब्राह्मीवटी सारस्वता-रिष्ट, अभ्रकभस्म, कूष्माण्ड पाक, नारायणतैल । **अनुपान**–घृत, ब्राह्मीरस, कल्याणघृत, ब्राह्मीघृत, कूष्माण्ड का जल, सारस्वतारिष्ट । **पथ्य**–पुराने चावल, गेहूं, अभ्यंग, वच, ब्राह्मी, चूका, अगस्ति, नोनिया, लाई, मूंग, घृत, दूध, स्नान, द्राक्ष, आवला, चचेंडा, पुराना कूष्माण्ड, नारियल का जल, मीठा अनार । **अपथ्य**–मन क्षोभ, शोक और चिंता, क्रोध उत्पन्न करनेवाले प्रसंग कारण ।

५ आम्लपित्त–

औषधियाँ–सूतशेखर, गुडुची सत्व, आमलकी चूर्ण, कामदुधा, प्रवालभस्म, स्वर्णमाक्षिकभस्म, अविपत्तिकर चूर्ण, प्रवालपञ्चामृत, कपर्दिकभस्म, मौक्तिकभस्म, **अनुपान**–पचतिक्तकाषाय, आर्द्रकरस, मिश्री, आवले का मुरब्बा, दूध, घृत, अनाररस, शर्करा, चदन, मिश्री का क्वाथ, आमलकीचूर्ण शर्करा । **पथ्य**–चावल, गेहूँ, मूंग, उबाला हुआ ठडा पानी, नोनिया, शर्करा, कटोली, करेला, चचेंडा केले के फूल ,पुराना कूष्माड, कपित्थ, अनार, आवला, खट्टुरस, खजूर यव, शहद । **अपथ्य**–तैलयुक्त पदार्थ ,आम्ल, चरपरे पदार्थ, नया चावल कुल्थी, उडद, नमक, उष्णजल और विदाहि पदार्थ ।

६ अरुचि–

औषधियाँ–दाडिमाष्टकचूर्ण, तालीसादिचूर्ण पानकगुटी हिंग्वाष्टक, सितोपलादिचूर्ण । **अनुपान**–आद्रक, बिजोरा-नीबू, अनार का रस पाचकरस, आमलकीचूर्ण, सीतोपला और शहद । **पथ्य**–रुचिप्रद पदार्थ, आलूबुखारा, चूका, पोदीना, मेथी, गेहूँ, वैगन, लहसुन, तक्र, दही, हिंग, जीरा अजवायन, चचेंडा, अनार, द्राक्ष, वेर, कपित्थ, ककडी, मूली, तूवर, सहजना, सूरण, मूँग, करेला । **अपथ्य**–भूख, प्यास, इ वेगावरोध, अप्रिय अन्न, क्रोधादिदमन, क्रोधोत्पन्न वाते, अतिशीत जल, अजीर्ण के कारण ।

७ अरुंतिका (तत्सदृश फुन्सियाँ)

औषधियाँ–गधकरसायन, विडगारिष्ट, खदिरारिष्ट । **अनुपान**–घृतशर्करा, शहद, त्रिफलाचूर्ण, उष्णजल, बावचीचूर्ण ओर शहद, तिक्तकघृत । **पथ्य**–चावल, गेहू, मूँग, चचेडा, गोमूत्र, उष्णजल । **अपथ्य**–तिल, उडद, गन्ना दही, दूध, नमक ।

८ अर्श (बवासीर) –

औषधियाँ–अर्शयोग, अर्शकुठार, हिंग्वादिचूर्ण, सूरणवटक, कुटजावलेह, अभयारिष्ट, दत्यारिष्ट, सजीवनीगुटी, भल्लातकघृत । **अनुपान**–घृत, अरगवध और जल, त्रिफला क्वाथ, अभयारिष्ट । **पथ्य**–अमचूर, चावल, लहसुन, (रक्त-स्राव की अवस्था मे तथा पित्तज अर्श मे लहसुन वर्ज्य) पुनर्नवा, सोठ, तक्र, प्याज, शर्करा, कपित्थ, चचेडा, मक्खन, धनियाँ, मीठा सूरण, गोमूत्र, मूली, कुलित्थ, (वातज तथा वातकफज अर्श, रक्तस्रावी तथा पित्तज अर्श मे कुलित्थ वर्ज्य) । **अपथ्य**–मछली, दही, पिष्ठ, कूदना, कराहना, खासना, जागरण, बाजरा, उष्ण पदार्थ, बद्धकोष्ठकारक पदार्थ ।

९ अश्मरी (पथरी) –

औषधियाँ–चद्रप्रभा, उशीरासव, गोक्षुरादिगुग्गुल, शिलाजीत **अनुपान**–शहदपानी, तृणपचमूलक्वाथ, चावल का धोवन, शहद । **पथ्य**–पुराने चावल, अद्रक, पाषाणभेद, स्वेदन कराना, सैधव, पुराना कूष्माड, चौलाई, ककडी, गोखरुपचाग, **अपथ्य**–भारी पदार्थ ।

१० आनाह (पेट फूलना) –

औषधियाँ–वज्रवटी, हिंग्वाष्टक चूर्ण, विषूचिकावटी, शखभस्म, शखवटी । **अनुपान**–घृत, उष्णजल, नीबू का रस, अद्रकरस, एरडतैल । **पथ्य**–गेहूँ, तिल, स्वेदन कराना, चौलाई, नरम मूली, कुलित्थ, हिंग । **अपथ्य**–वेगधारण, कद, जडपदार्थ, बद्धकोष्ठकारक पदार्थ, दाल इ ।

११ आमवात–

औषधियाँ–एरडपाक, सिहनादगुग्गुल, महारास्नादिकाषाय, गोक्षुरादिगुग्गुल, अजमोदादिचूर्ण, (वेदनाहरतैल, ऊपर से मालिश के लिये) । **अनुपान**–उष्णजल, एरडतैल, भृंगराजासव, सहचर तैल, वातनाशक सेवनीय तैल, घृत, दशमूलारिष्ट, महारास्नादि क्वाथ **अपथ्य**–पुराने चावल, तक्र, एरडतैल, बैगन, उष्णजल, अद्रक, लहसुन, गेहूँ, करेला, चचेडा, अमचूर, कुलित्थ, सहजना, नरम मूली, गोमूत्र । **अपथ्य**–गुड, उडद, तिल, जागरण, भारी पदार्थ, दही ।

१२ आमातिसार–

औषधियाँ–प्रमदानदरस, कनकसुदररस, आमाश पर केशरी गोलियाँ, रसोनवटी, वेलफल का मुरब्बा, पाचकगुटी, शखवटी । **अनुपान**–वेल का मुरब्बा,

कुटज, धान्यपचक, उष्णजल । पथ्य—स्नान, तक्र, पीयूष, उष्णजल । अपथ्य—भारी पदार्थ सेवन, दाले, स्निग्ध पदार्थ ।

१३ आमांश—

औषधियाँ—आमाश पर केशरी गोलियाँ, कनकसुन्दर, कुटजारिष्ट, कुटजावलेह, बेलफल का मुरब्बा। अनुपान—तक्र, मरोड़ के साथ रक्तस्राव हो तो लहसुन, सिद्धतैल, भल्लातक, इसबगोल, हिंग, ज्वरयुक्त हो तो तक्र, रक्तमिश्रित हो तो मक्खन, ककडीला जल, अद्रकरस, बेलफल चूर्ण क्वाथ । पथ्य—स्नान, लघु-आहार, तक्र अपथ्य—गुरुभोजन, गेहू, और दाल के पदार्थ ।

१४ आंत्रवृद्धि—

औषधियाँ—सुकुमारघृत, सहचर तैल । अनुपान—उष्णजल, महारास्नादिकाषाय । पथ्य—लघु और अनुलोमक आहार। अपथ्य—वातज पदार्थ, खाँसना,कराहना, कूदना, जोर से चिल्लाना ।

१५ आंत्र-सन्निपात

औषधियाँ—लक्ष्मीनारायणरस, सूतशेखर, मृतसंजीवनी, महावातविध्वंस प्रवालभस्म, गुडूचीसत्व, चन्द्रकला, कुमारीआसव, लक्ष्मीविलासगुटी । अनुपान—मधु, दूध, आवले का मुरब्बा, शर्करा, भृंगराजरस पथ्य—दूध, फलों के रस, पतले अन्न, पूर्ण विश्राम । अपथ्य—घनपदार्थ सेवन, विरेचन, स्वेदल औषधियाँ, अधिक हलचल ।

१६ इन्द्रलुप्त—चाई पर मलम, जलोका लगाना

१७ हिक्का—

औषधियाँ—कनकासव, चौसठपिप्पलीयोग, श्वासकुठार, कामदुघा, शखभस्म अनुपान—मयूरपुच्छ की राख, पिपल्यासव, दशमूलारिष्ट, बेर का गूदा शहद के साथ, चावल का धोवन और शर्करा । पथ्य—स्वेद कराना, नीद, गरम जल, भाका कैंथ, शुद्ध उद्गार लानेवाला अन्न, लहसुन, कुलित्थ, शौचशोधक पदार्थ । अपथ्य—वेगधारण, श्रम इ ।

१८ उदर—

औषधियाँ—नारायणचूर्ण, वज्रक्षार, जलोदरारिरस, इच्छाभेदीरस, योगराज-गुग्गुल, लवणत्रियादिचूर्ण, ताम्रभस्म, कुमारीआसव । अनुपान—तक्र, एरंडतैल,

पुनर्नवा काढा, पर्पटाद्यरिष्ट, कुमारी आसव, रोहितकारिष्ट, मूलीरस, गौमूत्र। पथ्य–पुराने चावल, तक्र, अभ्यंग, मासरस, घृत, उटनी का दूध, कुलित्थ यव, लहसुन, हरे शाक, सहजना, हिंग, शहद, नरम मूली। अपथ्य–अति जलपान, दिन को सोना, वेगधारण, पिष्ट पदार्थ।

१९ उदर्द (शरीर पर चकते पडना)

औषधियाँ–शीतपित्त प्रभजन, सौभाग्यसुंठी, कृमि के उपचार। अनुपान–अद्रक रस, शहद, घृत, काली मिर्च। पथ्य–लंघन, हलका अन्न, शोधन। अपथ्य–शीत वायु, शीत जल।

२० उदावर्त–

औषधियाँ–नारायणचूर्ण इच्छाभेदीरस, वज्रवटी। पथ्य–एरंडतैल, दूध, यव, गौमूत्र, निशोत्तर, यवक्षार, थूहरदुग्ध। अपथ्य–मल-मूल वेगावरोध, दाल, भारी पदार्थ, कसैले पदार्थ।

२१ उन्माद–

औषधियाँ–ब्राह्मी तैल, ब्राह्मी जीवन, कल्याणघृत, अभ्रकभस्म, कूष्मांडावलेह। अनुपान–घृत या ब्राह्मीरस, कल्याणघृत, कुष्मांडजल, सारस्वतारिष्ट। पथ्य–गेहूँ, ब्राह्मी, कपित्थ, मन शांति, मूँग, धारोष्ण दूध, घृत भूमिप्रत्यूषामांड, चचेडा, द्राक्ष, शर्करा, चौलाई, हरे शाक, कूष्मांड। अपथ्य–शहद, प्रत्यूषाअन्न, उष्णपदार्थ मन क्षोभ कारक पदार्थ।

२२ उपदंश–

औषधियाँ–माणिक्यरस, अष्टमूर्ति, रक्तशोधन, उपदंशसूर्य, मंजिष्ठादि-काढा। अनुपान–घृत, मावा, रक्तशोधन, उपदंशारितैल, सारिवाद्याव, सारिवावलेह, नागरपान, कनकपत्ररस। पथ्य–चावल, तिलतैल, सैंधव, मासरस, मूँग का यूप, चचेडा, कडवे व कसैले रस, दूध, बकरी का दूध, मिश्री, करेला, नरम मूली, सहजना। अपथ्य–दिन को सोना, तक्र, गुड, राई इ उष्ण पदार्थ।

२३ उरोग्रह (हृद्रोग)–

औषधियाँ–च्यवनप्राश, पार्थाद्यरिष्ट, लक्ष्मीविलासगुटी, सिद्धलक्ष्मीविलास। अनुपान–दूध, शहद, आवले का मुरब्बा, मक्खनमिश्री। पथ्य–वर्षाजल, पुराना गुड, हराधनियाँ, मासरस, तक्र, सैंधव, चचेडा, द्राक्ष, कुलित्थ, मूग का यूष, चटनी, अचार. अपथ्य–अधिक भोजन, वातावरोधक पदार्थ।

२४ उष्णता–

औषधियाँ–चंदनादिवटी, उशीरासव, सारिवासव मौक्तिकभस्म, इत्यादि औषध। **अनुपान**–उशीरासव, गुलकंद, चावल का धोवन, गोक्षुर क्वाथ, दूध, जल, पलाशपुष्प, धनियाँक्वाथ-मिश्री। **पथ्य**–मूत्रकृच्छानुसार।

२५ ओष्ठरोग–

औषधियाँ–प्रवाल, जीरकाद्यरिष्ट, इरिमेदादितैल, (ऊपर में लगाने के लिए) शोधनतैल, रोपणतैल। **अनुपान**–शहद, घृत, मुलेठी क्वाथ, हरड़ क्वाथ। **पथ्य**–मुखरोग देखो।

२६ कर्णरोग–

औषधियाँ–योगराजगुग्गुल, मृगशृंग, स्वर्णराज वंगेश्वर, (सेवनीय) कर्णतैल क्षारतैल, बिल्वादितैल, शोधनतैल (कान में डालने के लिए)। **अनुपान**–घृत, शहद, मुलेठी का क्वाथ, दूध, मिश्री। **पथ्य**–चावल, गेहूँ, ब्रह्मचर्य, मौनव्रत, बैंगन, मूंग, पुराना घी, चचेंडा, सहजना। **अपथ्य**–दतकाष्ट शिरस्नान, व्यायाम रात को शीतजल सेवन, शीतवायु।

२७ मोतिया बिंदु (नेत्र–रोग)

औषधियाँ–(नवीन रोग में) शंखभस्म, जसदभस्म, नेत्र चंद्रोदयावर्ति, रसांजन, त्रिफलाचूर्ण, वृद्धावस्था का मोतिया बिंदु औषधि से ठीक नहीं होता है। **अनुपान**–शहद, घृत। **पथ्य**–नेत्ररोग देखो।

२८ कामला–

औषधियाँ–मंडूरवटक, ताप्यादिलोह, कामदुधा, मंडूर, लोहासव और नवायसचूर्ण, चंद्रोदयरस। **अनुपान**–त्रिफला और शर्करा, कुटकीचूर्ण शर्करा, मूली का रस। **पथ्य**–पांडुरोगानुसार।

२९ कास (खाँसी)–

औषधियाँ–कर्पूरादिवटी, द्राक्षारिष्ट, सितोफलादिचूर्ण, अगस्तिहरीतकी लेह, रससिंदूर, आनंदभैरव, च्यवनप्राश, जीवनामृत, अमृतप्राश, मृगशृंगभस्म, वासावलेह, खदिरादिगुटी, लवंगादिगुटी। **अनुपान**–द्राक्षावलेह, अडूसारस, शहद, द्राक्ष, मुलेठी, बहेडा–अडूसाक्वाथ, पथ्याद्यरिष्ट। **पथ्य**–चावल, गेहूँ, शाली,

चावल, उडद, गेहू, जव, बिजोरा नीबू, लहसुन, उष्णजल, ब्राह्मी, अनार, मक्खन लाई, कुलित्थ, मूली, गोमूत्र, हिंग, लौग। अपथ्य—शीत हवा, शीतजल, वेगावरोध मछली, भारी पदार्थ, अम्लपदार्थ, दिन को सोना।

३० कास (बालकों की खासी मे)—

औषधियाँ—बालसजीवनीचूर्ण, मृगशृंगभस्म, कुमारी आसव न ३। अनुपान—दूध शहद, अनारपाक मिश्रीपाक, बालकडू, जल। पथ्य—रोगग्रस्त दूध पीनेवाले बच्चे की माता हलका अन्न सेवन करे, कफकारक आहारविहार का त्याग। अपथ्य—माता दिन को सोना छोड दे, शीतजल सेवन, खट्टे पदार्थ का सेवन।

३१ कॉलरा—विपूचिका देखो।

३२ कृमि—

औषधियाँ—कृमिविकार पर अर्क, कृमिकुठार, विडगारिष्ट। अनुपान—कर्पूरादितैल, विडगादितैल, वायविडग और शहद, देवदार्वारिष्ट। पथ्य—शाली चावल, लहसुन, बैंगन, गेहूँ, राई, अमचूर, पोदीना, धनिया, चवेडा, गौमूत्र, वायविडग का जल, तक्र, हिंग, कुलित्थ। अपथ्य—कोष्ठानुसार मृत्तिका भक्षणादि।

३३ कुष्ठरोग—

औषधियाँ—समशोधन, रक्तशुद्धि पर गोलियाँ, भूतभैरवरस, मकरध्वज, तालसिदूर, कैशोरगुग्गुल, कासीसादितैल, कुष्ठकुठार, कासीसभस्म, गधकरसायन, मजिष्ठादिक्वाथ, तालभस्म, खदिरारिष्ट, बब्बुलारिष्ट, निबतैल, करजतैल, (उपर से लगाने के लिए), । अनुपान—मजिष्ठादिकाढ़ा, समशोधन, बावचीचूर्ण, तिक्तघृत, विडगारिष्ट, खदिरारिष्ट। पथ्य—चावल, गेहूँ, बैंगन, बावची, तूअर, लहसुन, ब्राह्मी, मूग, मसूर, चचेडा, चूका, गोमूत्र, शहद, उष्णजल, यव,। अपथ्य—तिल, उडद, गन्ना, दही, दूध, नमक।

३४ बाल पकना व झड़ना—

औषधियाँ—मकरध्वज, वगभस्म, ब्राह्मी उपयोगार्थ बकुलतेल, भृगराजतैल, निवबीजतैल। अनुपान—घृत, शहद। पथ्य—साठी शाली, रसाला गेहूँ, मूग, लाई, दूध, घृत, मक्खन, शर्करा, फल, शहद, तथा कुष्ठरोग मे वर्णित पथ्य। अपथ्य—राई, अम्ल पदार्थ, स्वेद आने पर अकस्मात शीतजल सिचन इ ।

३५ गर्भवती के रोग–

औषधियाँ–मातृजीवन (मातृजीवन) अवला सजीवन कल्प, गर्भपालरस, मधुमालिनीवसत, प्रमदानदरस, सिद्धलक्ष्मीविलास, कामदुधा, प्रवालभस्म, स्वर्णमाक्षिक, मौक्तिकभस्म, लघुमालिनीवमत । **अनुपान**–दूध, मक्खन, मिश्री, घृत, शहद । **पथ्य**–हलके व पतले पदार्थ, समशीतोष्ण, मुग्रास पदार्थो का सेवन, विश्राम, योग्य व्यायाम । **अपथ्य**–श्रम, मद्य, कठिन स्थानो पर बैठना, शोक, क्रोध, भय, उलटा सोना ।

३६ गले के रोग–

औषधियाँ–गोक्षुरादि गुग्गुल, द्राक्षारिष्ट, काचनार गुग्गुल, लोकनाथ कर्पूरादिवटी । **अनुपान**–शहद । **पथ्य**–चावल । लहसुन, तक्र, नमक, अद्रक, दूध, पटोल, पका कपित्थ, हरड । **अपथ्य**–शीतवायु, शीतजल, शरीर मे जलराशि को बढानेवाले दही जैसे पर्दाथ, रात को शीतजल का सेवन ।

३७ गुल्म–

औषधियाँ–भास्करलवणचूर्ण, हिग्वादिचूर्ण, मजीवनीगुटी, हिग्वाप्टक, सहचरतैल, प्रवालपचामृत, नारायणचूर्ण, चित्रकादिचूर्ण, रोहितकारिप्ट, वज्रक्षार, ताम्रभस्म, लोकनाथ, भल्लातकघृत, । **अनुपान**–एरडतैल, गौमूत्र, पुनर्नवादिक्वाथ, मूलीरस । **पथ्य**–एरड, चौलाई, चूका, लहसुन, तक्र, मासरस, हिग, विजोरानिवू, अमचूर, चावल, अनार, द्राक्ष, वकरी का दूध, कुलित्थ का क्याथ, गौमूत्र । **अपथ्य**–पिष्ठमय, भारी वद्धकोष्ठकारक पदार्थ, सूखे साग, दाल, शीतजल ।

३८ गडमाला (अपची)–

औषधियाँ—नागभस्म, त्रिवगभस्म, स्वर्णभस्म लोकनाथ, काचनार और कैशोरगुग्गुल, गडमालकडनरस, जसदभस्म, वाह्य उपयोग के लिए ग्रथीभेदनलेप, निर्गुडयादितैल, शोधनतैल, रोपणतैल । **अनुपान**–घृत, दूध, मुलेठीकल्प, त्रिफला-क्वाथ, मूलीक्वाथ । **पथ्य**–पुराने चावल, घृत, मूग का यूप, चचेडा, सहजना, हरेशाक, कटोली । **अपथ्य**–पिप्टमय पदार्थ, अम्ल पदार्थ, भारी पदार्थ कफकारक पदार्थ , दही आदि ।

३९ ज्वर–

औषधियाँ–महामृत्युंजय, महाज्वरांकुश, ज्वरांकुश, ज्वरहर, राजचंडेश्वर, लक्ष्मीनारायण, त्रिभुवनकीर्ति, ज्वरमुरारी, ज्वरघ्नीगुटी, प्रवालभस्म गोरोचनमिश्रण, चन्द्रकला। **अनुपान**–ज्वरादिपाचनकाषाय, तुलसीफाट, तुलसीपत्ररस और मिश्री, शर्करा, जल, दाडिमावलेह (फलों का रस, निहार इ) शहद, अद्रकरस। **पथ्य**–लंघन, पाचक दीपक अन्न, पुराने चावल, उष्णजल, ताजा तक्र, चावल की कन्हेरी, गेहूं, बैंगन, लौकी, अमचूर का जल, मसूर का यूष, करेला, कुलथी। **अपथ्य**–भारी धान्य, विरुद्धान्न, ठंडी वायु, कलौंदा, पिष्टपदार्थ, व्यायाम, ज्वर-मुक्त होते ही शीघ्र ही अन्न का सेवन, स्नान।

४० जीर्णज्वर–

औषधियाँ–लघुमालिनीवसंत, स्वर्णमालिनीवसंत, मधुमालिनीवसंत, गुडुचीसत्व, सुदर्शनचूर्ण, कल्याणघृत, रोहितकारिष्ट। **अनुपान**–जीरा, और गुड, वर्धमानपिप्पलीकाषाय, सितोपलादिघृत, सितोपलादिचूर्ण, दूध, जीरा, मिश्री, धारोष्ण या गरम किया दूध, गुटी चूर्ण–शर्करा, शहदपिपली, सुदर्शनकल्प। **पथ्य**–विश्राम, गेहूं, मांसरस, दूध, घृत, आमलकी। **अपथ्य**– व्यायाम, शोधन।

४१ सन्निपातज्वर–

औषधियाँ–लक्ष्मीनारायण, मृतशेखर, त्रिभुवनकीर्ति, महाज्वरांकुश, महामृत्युंजय, लक्ष्मीविलासगुटी, चंद्रकला। **अनुपान**–अद्रकरस और शहद, भृंगराजरस, अनारपाक, आंवले का मुरब्बा, तुलसीरस, सहजना छालका रस और शहद। **पथ्य**–लंघन, दूध, तक्र, मोसंबीरस, अनार, पतला अन्न, तपाकर ठंडा किया जल, विश्राम। **अपथ्य**–भोजन, घनअन्न, ठंडा पानी, व्यायाम, अतिव्यवाय, चिंता।

४२ शीतज्वर (मलेरिया, जूडी बुखार)

औषधियाँ–सूक्ष्मीसमीरपन्नग, ज्वरहर, ज्वरांकुश, शेफालीकल्प, अमृतारिष्ट, शीतज्वरारि, नारायणज्वरांकुश, महाज्वरांकुश, राजचंडेश्वर, दूर्जलजेतारस। **अनुपान**–हारसिंगारपत्र का क्वाथ, अद्रकरस, अमृतारिष्ट, भृंगराजरस, निर्गुंडीरस, काली मिर्चक्वाथ, पंचतिक्तकाषाय, शहद, पान का रस, उबालकर ठंडा किया पानी, सततज्वर के काषाय, शहद। **पथ्य**–लघु आहार, कोष्ठशुद्धि, तक्र, अमचूर का

पानी, उष्णजल, दूध, चावल, दाल का पानी, हरेशाक। अपथ्य—अतिस्वेदल औपधियो का उपयोग, भारी आहार, वातज-पादर्थ, दाल, शीतजल, स्नान, मच्छरो से वचाव, दलदल के स्थान, अति शीत जल सेवन, भोजन के पश्चात नीद लेना ।

४३ काली खांसी (whooping-cough) –

औषधियाँ—काली खासी मिश्रण कर्पूरादिवटी, वासकासव। **अनुपान**—मुलेठी, शहद, प्याज, अडुसापत्र मिश्री, क्वाथ, मक्खन, मिश्री, आँवले का मुरब्बा, मिश्रीपाक, अनार का अवलेह, द्राक्षारिष्ट, शहद। **पथ्य**—कास केअ नुसार हलका अन्न, कोष्ठ शुद्धी रखना, दिन को भोजन, मक्खन। **अपथ्य**—खट्टे और लवण पदार्थो का अतियोग, शीतजल, रात को भोजन ।

४४ मस्तिष्क की फुन्सियाँ—

औषधियाँ—मजिष्ठादिकाषाय, मृगश्रृंगभस्म, वगभस्म, वाह्य प्रयोगार्थ करजतैल, वृहन्मरीच्यादितैल। **अनुपान**—शहद। **पथ्यापथ्य**—कुष्ठ के अनुसार।

४५ प्यास—

औषधियाँ—तृष्णाभ्रंशरस, उशीरासव, चदनासव। **अनुपान**—शहद, अनार पाक, आँवले का मुरब्बा, तृणपचमूल। **पथ्य**—चावल, चावल का माड, तक्र, कपित्थ, इमली, अमचूर, धनियाँ, हिंग, प्याज, कबावचीनी, नीहार, कैरी का शरवत, मिश्री, आवला, वेर, अगूर, लाई, भुनी मूग, लोग आदि। **अपथ्य**—स्वेदन कराना, धूम्रपान, व्यायाम, लवण, कसैले तथा भारी मीठे पदार्थ।

४६ दमा (श्वास)—

औषधियाँ—रसमिदूर, कर्पूरादिवटी, द्राक्षारिष्ट, दशमूलारिष्ट, रिगणी-कल्प, मगीरपन्नग, श्वासकुठार, शखभस्म, चोसष्ठीपिप्पली, अगस्तिहरीतकीलेह। **अनुपान**—शहद, अदरकरस, च्यवनप्राश, द्राक्षारिष्ट। **पथ्य**—ताम्र, चावल, गेहूँ, तक्र, उष्णजल, वेगन, नीवू, विजोरा नीवू, कपित्थ, मूली, मूंग, घृत, बकरी का दूध, अगूर, चौलाई, वडी इलायची, कुलित्थ, लहसुन, धूम्रपान, मीठासूरण, लोग, पान, सेक करना। **अपथ्य**—भैस का दूध, दही, उडद, कद, व्यायाम, शीतवायु-सेवन, रात को शीत जलसेवन, दिन को नीद, वातज पदार्थ।

४७ दाहज्वर–

औषधियाँ–गुडूचीसत्व, जीरकाद्यरिष्ट, अमृतारिष्ट, कामदुधा, प्रवाल-भस्म, चद्रकला, मौक्तिकभस्म, उशीरासव। अनुपान–आवले का मुरब्बा, नीबू का शरबत, औदुबरावलेह, अनार का अवलेह, गारिवावलेह, घी, कुवार का रस, नीहार, धनियाजल, शर्करापानी, दूध। पथ्य–दूध, तक्र, मासरस, लाई, घृत, चदन, धनिया का पानी, मिश्री, ककडी, अनार, अगूर, चौलाई, पके उमर के फल। अपथ्य–विग्दग्धान्न, उष्ण पित्तकारक पदार्थ, राई, कुलित्थ, नमक।

४८ धनुर्वात–

औषधियाँ–कालकूटरस, महायोगराजगुग्गुल, महावातविध्वस, ताप्यादि-लोह, रौप्यभस्म। अनुपान–वातरोग देखो। पथ्य–वातरोग देखो।

४९ नपुंसकत्व–

औषधियाँ–मकरध्वज, त्रिवगभस्म, रससिदूर, प्रमदानदरस, वसत कुसु-माकर, ताम्रभस्म, कदर्पपाक, वृष्यवटी, वृहत्पूर्णचद्रोदय, स्वर्णराजवगेश्वर। अनुपान–घृत, शहद, दूधमिश्री, मक्खनमिश्री, त्रयोदशगुणी, ताबूल। पथ्य–अभ्यंगस्नान, गेहूँ, मुर्गी और बकरे का मास, प्याज, लहसुन, भूमिकूष्माड, हरण-खुरीशाक, बकरे का अडकोश, मुर्गी के अडे, उडद, चावल, दूध, घृत मुलेठी, व्यायाम, षोडशगुणवतपान, स्त्रीस्मरण, आलिगन इ। अपथ्य–ब्रह्मचर्यभग, मन की उदासीनता, शुक्रगतिधारण, गाजर, कलौंदा, कुलित्थ, गाजा, माजूम, ककडी, करेला, सोफ आदि।

५० नाड़ीव्रण–

औषधियाँ–सप्रविशतिगुग्गुल बाह्य प्रयोगार्थ–निर्गुडयादि तैल, शोधनतैल, रोपनतैल। पथ्य–व्रण देखो। अपथ्य–व्रण देखो।

५१ निद्रानाश–

औषधियाँ–सारस्वतारिष्ट, पारसिकयवानीआसव, माक्षिकमिश्रण, प्रवाल-भस्म, पिपलमूलाचूर्ण+गुड। अनुपान–भैस का दूध, मिश्री, शहद, घृत। पथ्य–मधुर, अल्प आम्ल पदार्थ, शीतपेय। अपथ्य–चिता, शोक, वातज पदार्थ।

५२ नेत्ररोग–

औषधियाँ–स्वर्णभूपति, माक्षिकभस्म, प्रवालभस्म, जसदभस्म, शखभस्म, चद्रोदयवर्ति, त्रिफलाचूर्ण रसाजन, सौविराजन, नयनामृताजन। **अनुपान**–आवले का मुरब्बा, मक्खन, दूध और शहद, गुलकद, अनारपाक, घृत और त्रिफला, लोध्र का क्वाथ। **पथ्य**–चावल, गेहू, मूली, सैधव, तक्र, मक्खन, हाथपैर के तलवो मे तैल मर्दन, शिर तथा कान मे तैल डालना, मूग, गौघृत, शर्करा, आवला, शीत-जल, चौलाई, बकरी के दूध मे भिगोकर नेत्रो पर पट्टिया रखना, रसाजन, त्रिफला, यव, शहद। **अपथ्य**–राई, धूप मे घूमना, उप्ण शरीर पर शीतजल का स्पर्श, वासा अन्न, पैरो का गरम होना, छोटे अक्षरो की छपी पुस्तके आदि पढना।

५३ सुजाक–

औषधियाँ–चदनादिवटी, गधकरसायन, चदनासव, रौप्यभस्म, उशीरासव, सारीवाद्यासव, स्वर्णराजवगेश्वर, पिचकारी के लिये शोधन तैल। **पथ्य**–गेहूँ, हरा टमाटर, चावल, घृत, दूध, शर्करा, खस, गोखरू, नीहार, त्रिफला, हरेशाक। **अनुपान**–नीबू का रस, मिश्री, घृतशर्करा, शहद, चदन का शरबत, चदनकल्प, दूध मिश्री, शहद पानी, शरबत, ऊमर के जड का जल। **अपथ्य**–उप्ण पदार्थ, व्रणरोगमे वर्णित सब अपथ्य।

५४ पांडुरोग–

औषधियाँ–कल्याणघृत, पुनर्नवासव, कातलोहभस्म, ताप्यादिलोह, नवायास-चूर्ण, लोहासव, मडूरभस्म, कुमारीआसव, खदिरारिष्ट, योगराजलोह, लोहभस्म, ताम्रभस्म। **अनुपान**–कल्याणघृत, त्रिफला-मिश्री, त्रिफला और शहद, गौमूत्र, लोहासव, कुमारीआसव, जवासव, लोध्रासव, रोहितकारिष्ट, अमृतारिष्ट। **पथ्य**–गेहू, तक्र, मासरस, वथुआ, प्याज, आवला, लहसुन, मुन्नका, चावल, लाई, घृत, मक्खन, मूग, मसूर, तुअर, पटोल, कूष्माड, चौलाई, यव, हल्दी, मूली, टमाटर। **अपथ्य**–वेगावरोध, सहजना, हिग, उडद, आम्लपदार्थ, भारी पदार्थ।

५५ प्रदर–

औषधियाँ–स्वर्णमालिनीवसत, मधुमालिनीवसत, वैक्रातभस्म, प्रदरारिलोह, प्रदरारि, मातृजीवन चन्द्रप्रभावटी चद्रोदयरस, पुप्यानुगचूर्ण, जवासव, जवावलेह, वग-भस्म, रसाजन, रौप्यभस्म। **अनुपान**–अवलामजीवनकल्प, अशोककल्प, आवले का

क्वाथ, जीरा । मिश्री, प्याज का रस, आवले का मुरब्बा, चावल का धोवन, अनार-पाक, गुलकद, दारुहल्दी, अडूसा, गुडूचीक्वाथ, आम, जामुन, वड के अतर छाल का काढा । पथ्य–उत्तरवस्ति, नियमित व्यवहार, मन की शातता, ब्रह्मचर्य, स्वच्छता । अपथ्य–अतिव्यवायी, अस्वच्छ रहना, वातज आहार ।

५६ प्रमेह–

औषधियाँ–चद्रप्रभावटी, गोक्षुरादिगुग्गुल, प्रमेहगजकेसरी, मेहातकरसायन, दशमुलारिष्ट, चद्रोदयरस, वगभस्म, जवासव, लोध्रासव, जवावलेह, देवदार्व्यारिष्ट बब्बुलारिष्ट, इक्षुमेहारि, प्रमेहारी, शुद्धशिलाजीत । **पथ्य**–मीठा तक्र, लहसुन आवला, चचेडा, हरेशाक, गोखरु, लाई, लघन, विरेचन, यव पुराने चावल, गेहू, कुलित्थ, चना, महिपमूत्र, सहजना, शहद, टहलने का व्यायाम । **अनुपान**–गुडूचिरस या क्वाथ, हलदी+शर्करा, आम, आर्करा, शहद, त्रिफला, जवासव, लोध्रासव । **अपथ्य**–वेगधारण, दिन को सोना, व्यायाम न करना, भारी और मीठे पदार्थ, नया गुड, नया पानी, अम्ल पदार्थ ।

५७ बहुमूत्र प्रमेह–

औषधियाँ–इक्षुमेहारी, वगभस्म, नागभस्म । **अनुपान**–हरसिगार का क्वाथ, जवावलेह, पुराना शहद, नीमपत्रस्वरस क्षीरवृक्ष की अतर्छाल का क्वाथ । **पथ्य**–प्रमेह के अनुसार, पानी कम पीना चाहिये, अजीर्ण न हो इस तरफ ध्यान देना चाहिये ।

५८ प्लीहोदर–

औषधियाँ–वज्रक्षार, लोकनाथरस, शौक्तिकभस्म, कुमारी आसव, प्लीहोदरारिचूर्ण, रोहितकारिष्ट, प्लीहारिगुटी, ताम्रभस्म । **अनुपान**–कुमारीरस, गौमूत्र, रक्तरोहिडक्वाथ, दूध, शहद, तक्र, **पथ्य**– 'उदर' देखो । अपथ्य–'उदर' देखो ।

५९ कपोल्वण–सन्निपात (न्यूमोनिया)–

औषधियाँ–रससिंदूर, पचसूत, कर्पूरादिवटी, समीरपन्नग, पुनर्नवासव, चद्रकला, मृगशृग, सितोपलादिचूर्ण, वासावलेह, द्राक्षारिष्ट, लक्ष्मीविलासगुटी, मल्लसिंदूर । **अनुपान**–शहद, उबाला जल, मुलेठी, अडूसा, बहेडा, पोखरमूल

मिश्री, द्राक्षारिष्ट, दशमूलारिष्ट, अगस्तिहरीतकीलेह। **पथ्यापथ्य**–ज्वर, कास रोग के अनुसार, शीत से रक्षा करनी चाहिये।

६० फुफ्फुसावरण शोथ (Pleurisy)

औषधियाँ–पचसूत, सितोपलादिचूर्ण, समीरपन्नग, मृगश्रृग, मल्लसिंदूर, श्वासकुठार, महावातविध्वस, महायोगराजगुग्गुल। **अनुपान**– और **पथ्य**–ज्वर और कासरोगानुसार।

६१ बद्धकोष्ठ–

औषधियाँ–द्राक्षादिगुटी, स्वादिष्टविरेचनचूर्ण, अभयारिष्ट, घोडाचोली, आरोग्यवर्धिनी। **अनुपान**–उष्णजल। **पथ्य**–योग्य समय भोजन करना, उदर के व्यायाम, योग्य मात्रा मे जलसेवन, घृत, गेहू, शर्करा, दूध, हरेशाक, उडद। **अपथ्य**–कूथना, भारी पिष्टमय पदार्थ सेवन, आलस्यपन बैठे रहना।

६२ बालग्रह–

औषधियाँ–कल्याणघृत, सर्वागसुदर न १ ब्राह्मीअर्क, सारस्वतारिष्ट, अरविंदासव, बालग्रहपर चूर्ण। **अनुपान**–शहद। **पथ्य**–राई के जल मे बैठाना, सुगधित धूप देना, माताके दुग्ध को शोधन करनेवाली औषधि देना, उदरशुद्धि, बालक को डर नही बताना चाहिये। **अपथ्य**–मानस पुष्टिकारक व्यवहार।

६३ बालरोग–

औषधियाँ–बालगुटी ,बालकडू, सितोपलादिचूर्ण, सर्वागसुदर, बालसजीवनीचूर्ण, कुमारी आसव, द्राक्षारिष्ट। **अनुपान**–गाय का या माता का दूध, अरविदासव, कुमारी आसव न ३ । **पथ्य**–माता को पथ्य से रहना चाहिये। **अपथ्य**–दिन को सोना, अति ठडे जल का सेवन, कफकारक पदार्थ नही खाना चाहिये।

६४ प्रसूतिरोग–

औषधियाँ–बालतकाढा न १ और २, दशमूलारिष्ट, प्रतापलकेश्वर, सूतिकाभरण, महायोगराजगुग्गुल, अमृतारिष्ट, अश्वगधारिष्ट, जीरकाद्यरिष्ट, महासुदर्शनचूर्ण। **अनुपान**–भृगराज और गुडूचि रस, बालतकाढा न २, तुलसी, अदरक रस। **पथ्य**–अभ्यग, लहसुन, वेगन, मूली, जवीरा, चावल, दूध, घृत, शर्करा, कुलथी, सहजना पान। **अपथ्य**–श्रम, वजन उठाना।

६५ भगंदर और भगंदर पीटिका

औषधियाॅ–काचनारगुग्गुल, नवायसचूर्ण, ताप्यादिलोह, बाह्यप्रयोगार्थ-शोधन, रोपणतैल, ग्रथिभेदनलेप, विडगादितैल । **अनुपान**–घृत, दूध, त्रिफला क्वाथ। **पथ्य**–चावल, तिलतैल, मूली, गेहूँ, मासरस, गरम पानी, मूँग, करेला, सहजना, शहद, राई का तैल । **अपथ्य**–व्यायाम, भारी अन्न सेवन, कूँथना, व्रण ठीक हो जाने पर भी एक वर्ष तक पथ्य पालन करना आवश्यक है।

६६ चक्कर (भ्रम)–

औषधियाॅ–सूतशेखर, प्रवालमिश्रण। **अनुपान**–ब्राह्मीरस, आवले का मुरब्बा, धमासा, क्वाथ, घृत+मिश्री, अनारपाक, गुलकद, शीतजल+शर्करा, शहद और उबाला हुआ ठडा पानी। **पथ्यापथ्य**–मूर्च्छा के अनुसार।

६७ भस्मक विकार पर–

औषधियाॅ–प्रवाल, मौक्तिक, चद्रकला, स्वर्णमाक्षिक । **अनुपान**–अपामार्गक बीजो की क्षीर, पका केला नग २ और घृत २ तोले। **पथ्य**–गुरुभोजन। **अपथ्य**–लघु और अग्निवर्धक पदार्थ।

६८ मधुमेह–

औषधियाॅ–नागभस्म, मकरध्वज, पुष्पधन्वा, वसतकुसुमाकर, स्वर्णसिदूर, जवासव, वगभस्म, इक्षुमेहारि, त्रिवग, शिलाजीत। **अनुपान**–शहद, सप्तकपीक्वाथ, जामुनबीजचूर्ण, गुडमार। **पथ्यापथ्य**–प्रमेह के अनुसार।

६९ मुखरोग–

औषधियाॅ–कर्पूरादिवटी, मृगश्रृगभस्म, बाह्यप्रयोगार्थ–शोधन, रोपण, इरिमेदादितैल, काला दतमजन, ताम्र औषधियाॅ, वेदनाहर तैल, । **अनुपान**–शहद, हरकक्वाथ, त्रिफलाकाषाय, दूध, शर्कराजल। **पथ्य**–मुख स्वच्छ रखना, उदरशुद्धी, त्रिफला क्वाथ की गडूष करना, मूली, उष्णजल, मूँग, चचेडा, कुलथी, तृणधान्य, करेला, पान । **अपथ्य**–दिन को सोना, अजीर्ण, शीत जलसेवन, दही, गुड ।

७० मूर्च्छा–

औषधियाँ–कल्याणघृत, चद्रकला, कामदुधा, रससिदूर, ताप्यादिलोह।

नस्य—कल्याणघृत, उन्मत्तरस, श्वासकुठार, तालिसादिचूर्ण। **अनुपान**—ब्राह्मीरस, आवले का मुरब्बा, दूधमिश्री, धमासाक्वाथ, अनाररस, उबाल कर ठडा पानी। **पथ्य**—आराम करना, शटधौतघृत, लाई, गौघृत, कूष्माड, शर्करा, अनार, मुनक्का, चदन, शहदपानी। **अपथ्य**—धूप मे घूमना, विग्दग्ध भोजन, मलमूत्र, वेगधारण, चरपरे पदार्थ का सेवन।

७१ मृद्वस्थि (Rickets)

औषधियाँ—गुडचीसत्व, स्वर्णसिदूर, प्रवालभस्म, मडूरभस्म, भृगशृगभस्म, कुमारीआसव । **अनुपान**—शहद, शहद+घृत, दूध+शहद, अनारपाक। **पथ्य**—केला, स्नान, मास, अडे, दूध, चूने का पानी, लाई, शर्करा, मक्खन,। **अपथ्य**—मट्टी खाना, दस्त तथा वामक औषधि का उपयोग।

७२ मूत्रकृच्छ—

औषधियाँ—गोक्षुरादिगुग्गुल, उन्हालीकी औषधि, चद्रकला, सारिवासव, उशीरासव, चद्रप्रभावटी, पलाशपुष्पासव, पुनर्नवासव। **अनुपान**—उशीरासव, दशमूलारिष्ट, वकुलबीज, सौवर्चल, चावल का धोवन, पलाशपुष्प+धनियाक्वाथ, तृणपचमूलक्वाथ, पुनर्नवासव, सारिवासव। **पथ्य**—टवक्वाथ, कोष्ठशुद्धि रखना चावल का धोवन, गेहूँ, मासरस, ककोल, इलायची, मूग, चदन पानी, चौलाई, गोखरूपचाग की शाक, खजूर का हिम, यव। **अपथ्य**—मद्य, तीक्ष्ण उष्णपदार्थ, अदरक, नमक, हिग, बाजरी, मूत्रावेगधारण।

७३ मेदोरोग—

औषधियाँ—गोक्षुरादिगुग्गुल, चद्रप्रभा, आरोग्यवर्धिनी, शहद+जल, शिलाजीत, व्योपादिगुग्गुल, लोध्रासव, अभयारिष्ट, त्रिफला, महायोगराजगुग्गुल। **अनुपान**—शहद, उबाल कर ठडा किया पानी, वायविडग क्वाथ। **पथ्य**—तक्र, चना, मसूर, मूग, लाई, पुराने चावल, सत्तू, तृणधान्य, कुलित्थ, तुअर, शहद+जल, श्रम, चिता। **अपथ्य**—किसी भी प्रकार के सुखदायक व्यवहार, दूध, दही, उडद, दिन को सोना, गन्ने के पदार्थ, गुड।

७४ यकृतोदर—

औषधियाँ—जलोदरारि, मडूरभस्म, लोहासव, कुमारीआसव, ताम्रभस्म। **अनुपान और पथ्यापथ्य**—उदररोगानुसार।

७५ योनिरोग–

औषधियाँ–अवलासजीवनी, मातृजीवन अशोक कल्प, अशोकारिष्ट, दशमूलारिष्ट, फलघृत, शतावरीघृत, चदन तैल, लोध्रासव, सहचर तैल, बाह्य उपयोगार्थ शोधन और वलातैल का पिचु रखना, वगेश्वर, रक्त या कृष्णवोल। **अनुपान**– अशोक कल्प, अवलासजीवन, कल्प,, आमलकीक्वाथ, जीरा, मिश्री, आवले का मुरब्बा, चावल का धोवन, चदनासव, उशीरासव, रक्तवोल। **पथ्य**–ब्रह्मचर्य, विश्राम, मूली, गेहूँ, मूग, घृत, दूध, चचेडा, जामुन, बेर, गोखरू, शहद, सहजना। **अपथ्य**–शोथ, वासा अन्न, अजीर्ण, अस्वच्छता।

७६ रक्तातिसार–

औषधियॉ–बेल का मुरब्बा, प्रवाल, चद्रकला, कुटजारिष्ट, कुटजावलेह, कुडाकल्प, पुष्यानुग चूर्ण ,उशीरासव। **अनुपान**–बकरी का दूध, गौदूध, कुडा, खस, **बेलगिरी**, शर्करा। **पथ्य**–अतिसार अनुसार। **अपथ्य**–उष्ण क्षौर चरपरे पदार्थ।

७७ रक्तपित्त–

औषधियॉ–कूष्माडावलेह, दाडिमावलेह, चद्रकला, प्रवालभस्म, मौक्तिक, कामदुधा, गुलकद, प्रवालपचामृत, अडूमाक्षार। **अनुपान**–वासावलेह, दाडिमावलेह, शहद, गुलावी, शरवत, खस का शरवत। **पथ्य**–शाली, साठी चावल, चौलाई, शीतजल, मन्नुका, दूध, कूष्माड, आवला, चौलाई, शहद–पानी, चना, तूअर, शुठी, केला, मक्खन खरगोश मास आदि। **अपथ्य**–तैल, व्यायाम, राई, स्वेदन करना, वेगन, मद्य, नमकीन, खट्टे पदार्थ, शोक करना, कुलथी, मार्गक्रमण।

७८ रक्तशुद्धि के लिए–

औषधियॉ–रक्तशोधन, रक्तशुद्धीकर गोलियॉ, गधक रसायन, मजिष्ठादिकापाय, खदिरारिष्ट, आरोग्यवर्धिनी। **अनुपान**–घृत, शर्करा, शहद, शहद+जल। **पथ्य**–कुष्ठ के अनुसार।

७९ रक्तक्षीणता पर–

औषधियॉ–च्यवनप्राश, कातलोहभस्म, स्वर्णमाक्षिकभस्म, लोहभस्म मडूरभस्म। **अनुपान**–शहद, अनारपाक, आवले का मुरब्बा। **पथ्य**–मन शाति, घृत, बादाम, पिस्ते, चिरोजी, गेहूँ, नीबू, मक्खन, मिश्री, चावल, मूँग, अदरक, कुलथी। **अपथ्य**–अति व्यायाम, अम्लपदार्थ का अतियोग, मन क्षोभ, रक्तस्राव।

८० रेचक औषधियाँ–

औषधियाँ–आरग्वधकल्प, स्वादिष्टविरेचनचूर्ण, इच्छाभेदी, अश्वकचुकी, घोडाचोली, जलोदरारि, कफनाशकगुटी । **अनुपान**–उष्णजल । **पथ्य**–रेचक लेने के पश्चात चावल, घृत, दाल का पानी, उष्णजल सेवन । **अपथ्य**–दिन को सोना, व्यायाम, क्रोध, शीतजल, धूप मे फिरना, प्रवास करना आदि ।

८१ वाजीकर (रतिसुखवर्धक–)

औषधियाँ–वृष्यवटी न १, २, ३, मकरध्वज, पूर्णचद्रोदय, सिद्रकल्प-मकरध्वज, स्वर्णभस्म, रसोनकल्प, दशमूलारिष्ट, हीरकभस्म, अश्वगधादिघृत, लशुनपाक, कदर्पपाक । **अनुपान**–उबाला दूध, घृत + शहद, दूध, घृत, असगधचूर्ण, धारोष्णदूध+मुलेठीचूर्ण मिश्री, त्रयोदशगुणी पान । **पथ्य**–हर्पोत्पादक कार्य, स्त्री दर्शन, आलिगन, बादाम का हलुआ, गेहूँ, दूध, घृत, शर्करा, भाग ।

८२ वातकफप्रधानज्वर (Influenza)

औषधियाँ–कर्पूरादिवटी, नागगुटी, त्रिभुवनकीर्ति लक्ष्मीनारायण । **अनुपान**–शहद, अदरक रस, उबालकर ठडा किया जल । **पथ्य**–आराम करना, स्वेदक और मूत्रल उपचार, लघन, द्रवाहार । **अपथ्य**–वातकारक और कफकारक पदार्थ सेवन ।

८३ वातपित्तज्वर–

औषधियाँ–सूतशेखर, चद्रकला, कामदुधा, ज्वराकुश, प्रवाल, गुडूचिसत्व । **अनुपान**–दूध, मिश्री, शहद, अनारपाक, आवले का मुरब्बा, शरबत । **पथ्य**–दूध, मोसबी रस, नीहार । **अपथ्य**–गरम पानी, धूप, सेक ।

८४ वातरक्त–

औषधियाँ–गोक्षुरादि गुग्गुल, कैशोर गुग्गुल, सिहनाद गुग्गुल, मजिष्ठादि क्वाथ, सारीवासव, चदनासव, अमृतारिष्ट, एरडतैल । **अनुपान**–शहद, उबाला पानी, गुडुचि क्वाथ, शुठी, क्वाथ । **पथ्य**–मेंढी का दूध, साठी चावल, गेहूँ, मासरस, एरडतैल, ब्राह्मी, ककोल, मक्खन का अभ्यग, मूग, घृत, चौलाई, कूष्माड, चचेडा, ताजा मक्खन, चना, लहसुन, करेला । **अपथ्य**–दिन को सोना, धूप, श्रम, कुलथी, नमक, दही, शहद, चरपरे नमकीन, भारी पदार्थ सेवन ।

८५ वातरोग–

औषधियाँ–ताप्यादिलोह, एकागवीर, वातविध्वम, वातराक्षस, महावात-विध्वस, महारास्नादि काढा, एरडपाक, वातगजाकुश, वातारि, सब प्रकार के गुग्गुल, वाह्योपचारार्थ–नारायणतैल, महामाषादितैल, वातनाशकतैल, तिलतैल। **अनुपान**–भृंगराजतैल, शहद, घृत, अदरकरस, एरडतैल, प्याज का रस, दशमुलारिष्ट, भृगराजासव, भिन्न भिन्न प्रकार के घृत, आसवारिष्ट। **पथ्य**–अभ्यग, (मालिश) नीद लेना, विश्राम, खिचडी, गरम जल, गेहू, तिल, साठी लाई उडद, एरडतैल, मासरस, लहसुन, हिंग, दूध, घृत, मूँग, कपित्थ। **अपथ्य**–चिंता, जागरण, वेगावरोध, अति व्यायाम, मूँग, सुपारी, जामुन।

८६ वमन–

औषधियाँ–वातिहृद्रस, स्वर्णमाक्षिक, सूतशेखर, कामदुधा। **अनुपान**–नीबू का रस, गन्ने का रस, पिपलक्षार, चदन, आमलकी–शहद चाटन। **पथ्य**–रुचिकर हलके पदार्थ, गन्ने का, रस, धनियाँ, मासरस, लाई का जल, मन्नुका, फलो के रस, द्राक्षारस, बेर, पक्का कुपित्य, नारियल का पानी जामुन-गौमूत्र, लोग, अनार, नीहार। **अपथ्य**–एक वार मे अधिक भोजन करना, अरुचिकर पदार्थों का सेवन, लहसुन, व्यायाम, स्निग्ध पदार्थ, भोजन के पश्चात् व्यायाम।

८७ विद्रधि–

औषधियाँ–गुग्गुल के सब प्रकार, आरोग्यवर्धिनी, बाह्य उचारार्थ ग्रथी-भेदनलेप, शोधन और रोपणतैल, शोथहर लेप। **अनुपान**–घृत, दूध, त्रिफला-क्वाथ, सहजना, छाल का क्वाथ। **पथ्य**–शाली चावल, गेहूँ, बेलफल, लहसुन, मास रस, केला, मूँग, एरड, गन्ना, चचेडा, त्रिफला, सहजना, करेला, जलौका लगाकर रक्त निकालना। **अपथ्य**–शोथ के अनुसार।

८८ विषूचिका–

औषधियाँ– विषूचिकावटी, सजिवनीगुटी, सूतशेखर, स्वर्णसूतशेखर, धूप की दवाई, भल्लातकवटी, शखवटी, चद्रप्रभा, ताम्रभस्म। **अनुपान**–अजीर्ण के सब अनुपान, चणकक्षार, लहसुन, चटनी, कर्पूरजल, नीबू का रस, उष्णजल, प्याज का रस। **पथ्य**–लघन, उबाल कर ठडा किया पानी। **अपथ्य**–भारी अन्न, अजीर्ण न होने पाए।

८९ वंध्यत्व–

औषधियाँ–पुष्पधन्वा, दशमूलारिष्ट, फलघृत, पुष्यानुगचूर्ण, अशोकारिष्ट। **अनुपान**–घृत, शहद, दूध। **पथ्य**–उडद, तले हुए पदार्थ पान। **अपथ्य**–जननेंद्रिय को दुर्बलता लानेवाले कारण, दिन को सोना।

९० व्रण–

औषधियाँ–बाह्यप्रयोगार्थ शोधनतैल, रोपणतैल, निर्गुण्ड्यादितैल, पारिभद्रादिमरहम, सेवनार्थ रक्तशोधन, सारिवासव। **पथ्य**–गेहूँ, अमचूर, सैंधव, घृत, शर्करा, दूध, चावल, अनार, मनुका, फलो का रस, व्यायाम, ठंडा जल, पिष्ठ के पदार्थ, चना।

९१ वृषणवृद्धि–

औषधियाँ–सहचरतैल, (सेवनार्थ) आरोग्यवर्धिनी, ग्रंथिभेदनलेप (उदर से लेप करने के लिये)। **अनुपान**–उष्णजल। **पथ्य**–गेहूँ, एरंडतैल, शाली और पुराने चावल, लहसुन, तक्र, दूध, घृत, स्वेदन कराना सहजना। **अपथ्य**–दही, उडद, भारी और वासे पदार्थ, मलावरोध, अतिभोजन।

९२ वृष्य (शुक्रवर्धक)–

औषधियाँ–कूष्माण्डपाक, बादामपाक, स्वर्णमालिनीवसंत, स्वर्णभस्म जीवनामृत, च्यवनप्राश, कर्पूरादिवटी, अश्वगंधपाक, कदर्पपाक शतावरीघृत, गोखरुपाक, चोपचिन्यादिपाक। **अनुपान**–दूध। **पथ्य**–पौष्टिक आहार। **अपथ्य**–अति व्यवाय।

९३ शक्तिपात–

औषधिया–महालक्ष्मीविलास, स्वर्णकल्प, हीरकभस्म, महावातविध्वंस, समीरपन्नग, हेमगर्भ, लक्ष्मीविलासगुटी, पंचसूत, त्रैलोक्यचिंतामणीरस, चतुर्मुख। **अनुपान**–शहद, अदरकरस, बारबार थोडा थोडा दूध लेना। **पथ्य**–विश्राम, सोना तपाकर जल मे वुझाकर सेवन करना, अनार, मोसंबी का रस। **अपथ्य**–परिश्रम न करना, शरीर को थकानेवाले कार्यो का त्याग।

९४ शक्तिवर्धक–

औषधियाँ–सिद्धलक्ष्मीविलास, महालक्ष्मीविलास, मकरध्वज, स्वर्णमालिनी-

वसत, मधुमालिनीवसत, शक्तिवर्धक मिश्रण, कान्तलोहभस्म, मडूरभस्म। अनुपान–दूध+मिश्री, मक्खन,+ मिश्री, शहद+घृत, त्रयोदशगुणीताबूल। **पथ्य**–गेहूँ, उडद के लड्डू, मक्खनमिश्री, मिश्रीदूध, मूँग के लड्डू, चना।

९५ शिरोरोग–

औषधियाँ–सूतशेखर, त्रिभुवनकीर्ति, लघुसूतशेखर, स्वर्ण माक्षिकभस्म, महावातविध्वस, वेदनाहरतैल, कुकुमनस्य, प्रवालमिश्रण। **अनुपान**–घृत, गुड, सारस्वतारिप्ट, शर्करा, सोठ, गेरू। **पथ्य**–बस्ति लेना, लघन। **अपथ्य**–बद्धकोष्ठ, अजीर्ण, वातज आहार।

९६ शीतपित्त–

औषधियाँ–शीतपित्तप्रभजन, सूतशेखर, ताम्रभस्म। **अनुपान**–छुआरो का क्वाथ, अदरकरस और घृत, घृत+कालीमिर्च, पारसिकयवानी। **पथ्य**–घृतसेवन, लघुआहार। **अपथ्य**–तैलयुक्त पदार्थ, ठडी हवा मे घूमना, शीतजल स्नान।

९७ शूल–

औषधियाँ–शखवटी, विपूचिकावटी, वज्रवटी, शखभस्म, हिग्वाष्टकचूर्ण, लवणभास्करचूर्ण, सजीवनीगुटी, अमृतवटी। **अनुपान**–अजीर्ण से शूल मे नीबू का रस, चणकक्षार, प्याजरस, अदरकरस आदि। **पथ्य**–शाली, एरड, काला नमक, हिग, सोठ, लहसुन, मासरस, चौलाई, चूका, नमक, तक्र, अमचूर, गरम पानी, मनुका, कपित्थ, मक्खन, सहजना, बेगन। **अपथ्य**–जागरण, रूक्ष, कडवे, कसैले, ठडे भारी पदार्थ सेवन करना, अतिश्रम करना, द्विदल धान्य का सेवन, वेगावरोध, शोक, क्रोध, दिन को सोना।

९८ शूल–(मासिक धर्म के समय) अत्यार्तव देखो–

औषधियाँ–पारसिकयवान्यासव, दशमूलारिष्ट, योगराजगुग्गुल, यवक्षार, करज, हिंग+घृत, प्रमदानद, शखवटी, कृष्णवोलवद्धरस। **अनुपान**–अशोककल्प, अशोकारिष्ट, दशमूलारिष्ट, उष्णजल, घृत। **पथ्य**–सेकना, उष्णजल। **अपथ्य**–वातज पदार्थ।

९९ शोथोदर–

औषधियां–पुनर्नवासव, पुनर्नवामडूर, सूरणवटक, अर्जुनकल्प। **अनुपान**–पथ्यादि-उदररोग देखो।

१०० सर्दी, जुकाम–

औषधियाँ–सितोपलादिचूर्ण, मृगश्रृंगभस्म, नागगुटी, नागामृतगुटी तालीसादिचूर्ण, द्राक्षारिष्ट, त्रिभुवनकीर्ति, लक्ष्मीनारायण, महावातविध्वंस। **पथ्य**–सेकना, शुष्क उष्ण आहार। **अपथ्य**–ठंडी हवा, ठंडा जल सेवन।

१०१ सारक–

औषधियाँ–द्राक्षादिगुटी, स्वादिष्टविरेचनचूर्ण, सारकचूर्ण, त्रिफलाचूर्ण, अभयारिष्ट, आरग्वधकल्प, विजयामृत, आरोग्यवर्धिनी। अनुपान–उष्णजल, **पथ्य**–पश्चात घृत और चावल। **अपथ्य**–भारी पदार्थ, कसैले स्तंभक पदार्थ, शीत पदार्थ।

१०२ शोथ–(सूजन)

औषधियाँ–(सेवनीय) पुनर्नवासव, गोक्षुरादिगुग्गुल, नवायसचूर्ण, वाह्य प्रयोगार्थ शोथहरलेप, ग्रंथिभेदनलेप, दशांगलेप। **अनुपान**–पुनर्नवाचूर्ण, गोक्षुरादि-गुग्गुल, चौलाई, मूल, गोखरू, कुमारी आसव। **पथ्य**–तक्र, एरंडतैल, मांसरस, मूली, ब्राह्मी, गेहूँ, मूँग, घृत, आंवला, चौलाई, सहजना, कुलथी, गौमूत्र, शहद, हल्दी। **अपथ्य**–नमक, नया अन्न, गुड के तथा अम्ल पदार्थ, खिचडी, तिल, दही, दिन को सोना, सूखे शाक।

१०३ सूर्यावर्त–(आधासीसी)

औषधियाँ–लघुसूतशेखर, स्वर्णयुक्तसूतशेखर, चंद्रकला, नस्य-कुंकुमनस्य, अर्धसीसी का नस्य। **पथ्य**पेठा, चावल, गेहूं, अमचूर, दूध, जायफल, सोंठ, अफीम आदि का लेप। **अपथ्य**–बद्धकोष्ठकारक पदार्थ, धूप में घूमना।

१०४ संग्रहणी–

औषधियां–पर्पटीकल्प, ग्रहणीकपाट, दशमूलारिष्ट, चतुर्मुख, सर्वांगसुंदर, अमृतवटी, जातिफलादिगुटी, कुटजावलेह, चित्रकादिचूर्ण, लाहीचूर्ण, कुमारीआसव नं २। **अनुपान**–तक्र, वेल का मुरब्बा, कुटजावलेह, दही का पानी, मूली रस। **पथ्य**–ताजा तक्र, चावल, दही, बेलगिरी, लाई का पानी, गाय या बकरी का दूध, फलो के रस, अनार, मक्खन, मुनक्का, धनियाँ, तूअर, मूँग, शहद, पोदीना। **अपथ्य**–अनियमित भोजन, भारी अन्न, पिष्टमय पदार्थ, कंद, सुपारी, गन्ना, नारियल।

१०५ संधिवात–

औषधियाँ– महायोगराजगुग्गुल, गोक्षुरादिगुग्गुल, उन्हाली की दवा, बाह्य-संधिवातहरतैल, वातघ्नलेप । **अनुपान–**गरम पानी, रास्नापचकाषाय, अदरकरस, शहद । **पथ्य–**विश्राम, एरंडतैल, चावल, तक्र, विरेचन, गोखरू, पुनर्नवा, लंघन, कुलथी । **अपथ्य–**वातज पदार्थ ।

१०६ स्वप्नावस्था–

औषधियाँ–वंगमिश्रण, वंदेजगुटी, वंगभस्म, त्रिवंगभस्म, चंद्रप्रभावटी । **अनुपान–**हरणखुरीचूर्ण, कुमारीरस १ तो, शहद -।।- तोला, मिश्री -।।- तोला, दूध, मिश्री । **पथ्य–**मलशुद्धी, मन शांति होना चाहिये, चावल, गेहूँ, दूध, घृत, शर्करा, हलका अन्न, ब्रह्मचर्य पालन । **अपथ्य–**मलमूत्रादिवेग का अवरोध मन-क्षोभ के कारण ।

१०७ स्वरभेद–

औषधियाँ–कर्पूरादिवटी, कंठ्यटिकडी तालिसादिचूर्ण, सितोपलादिचूर्ण, अष्टमूर्ति (सूक्ष्म) । **अनुपान–**द्राक्षारिष्ट, मुलेठी+मुनक्का, क्वाथ, मक्खन और मिश्री, गरम दूध और हल्दी । **पथ्य–**गरम पानी, **अपथ्य–**ठंडा पानी, ठंडी हवा, भारी भोजन ।

१०८ क्षयरोग–

औषधियाँ–स्वर्णभस्म, हेमाभ्रकरससिंदूर, राजमृगांक, स्वर्णभूपति, अभ्रकभस्म, हीरकभस्म, सितोपलादिचूर्ण, च्यवनप्राश, भृंगराजासव, षटफलघृत, जीवंत्यादिरस, स्वर्णमालिनीवसंत, सिद्धलक्ष्मीविलास, सूक्ष्मसिद्ध, स्वर्णकल्प, त्रैलोक्यचिंतामणी, स्वर्णसूतशेखर, वैक्रांतभस्म, महालक्ष्मीविलास, तालीसादिचूर्ण, द्राक्षासव, द्राक्षारिष्ट । **अनुपान–**बकरी का दूध, अमृतप्राश, च्यवनप्राश, मक्खन, शहद, मिश्री, द्राक्षासव, द्राक्षारिष्ट, खाँसी के सब अनुपान । **पथ्य–**विश्राम, शक्तिपात की सब औषधियाँ, मन शांति, भोजन के पूर्व और पश्चात विश्राम, चावल, टमाटर, तक्र, दही, मांसरस, गेहूँ, शर्करा, मक्खन, फल, द्राक्ष, केला, खजूर, आवला, बकूल, कपूर, चंदन । **अपथ्य–**वेगधारण, क्षोभ, रोगविषयक चिंता, दिन को सोना, रात का जागरण, साहस, कर्म, अनियमित भोजन, अतिश्रम ।

१०९ वातदोष–

अनुपान–भृंगराजरस, घृत, अदरक रस, एरंडतैल, प्याज का रस, दशमूलारिष्ट, भृंगराजासव, भिन्न भिन्न प्रकार के घृत और तैल, गरम पानी, मध ।

११० पित्तदोष–

अनुपान–आवले का मुरब्बा, घृत मिश्री, गुलकद कुमारी का रस, नीहार, अनारपाक, उशीरासव, सारिवासव, सिद्धघृत, शर्कराजल ।

१११ कफदोष–

अनुपान– आद्रक रस, अदरकरस + शहद, पान का रस, आसवारिष्ट-क्षार द्रव्य, तुलसीरस, मध ।

विविध भस्म

१ अभ्रकभस्म १००० पुटी (औ. गु. शा.)

मात्रा– -।- से -।।- रत्ती। सब भस्मो मे यह एक अतिश्रेष्ठ औषधि है। एक हजार पुट इसे देने से अभ्रक का रूपातर परमाणुओ मे हो जाता है। इससे शारीरिक जीवनशक्ति (Mataboilsm) से सहज ही समिश्र होकर प्रभाव दिखलाती है। सहस्त्रपुटी होने से स्त्रियो और निर्बल को भी लाभप्रद है। **ग्रंथोक्त-गुण–**वात, कफ, प्रमेह, कुष्ठ, श्वास, विभ्रम, सग्रहणी, पाडू, कामला सतक्षय आदि रोगो मे लाभदायक है। **स्वानुभव गुणवर्णन–** इसका मुख्य कार्य तरल तथा सरलतर परमाणुओ का निर्माण करना है। शरीर की प्रधान सचालक इन्द्रियो को पोषक द्रव्य की पूर्ति करना और उन्हे बनाना है। वातवाहिनियो का क्षोभ, स्नायु दौर्बल्य, इन्द्रिय शैथिल्य तथा ज्ञानततु की क्षीणता को मिटाकर शरीर की सचालक शक्ति को उत्तेजित करता है। सब इन्द्रियो को कार्यक्षम बनानेवाली यह एकही महौषधि है। यह कफक्षय, श्वास, उर क्षत्तकास, फुप्फुस-विकार, अपस्मार, पाडू, धातुक्षय, प्रसूतिविकार, निर्बलता, मानसिक दौर्बल्य, इद्रिय, शोथ, जीर्णत्वचा, शक्तिपात, निद्रानाश, स्मृतिनाश, उन्मादगर्भा, क्षयोन्माद, अस्थिर विचारवृत्ति, चिडचिडापन, सशयवृत्ति, (शक्की स्वभाव) आदि मे अति सफल कार्य करता है।

इससे रक्त-प्रवहन क्रिया मे सुधार होने से यह अनेक प्रकार के मस्तिष्क, विकारो मे उत्तम कार्य करता है। फुफ्फुस निर्बलता को हटाने के लिये इससे उत्तम औषधि दूसरी नही है। **अनुपान–**च्यवनप्राश, मिश्री और दूध, अनार का मुरब्बा, शहद, द्राक्षारिष्ट।

२ अभ्रकभस्म ५०० पुटी (औ. गु. शा.)–

गुणधर्म–उर्ध्वलिखित अनुसार परतु कुछ अल्प।

३ अभ्रकभस्म १०० पुटी (औ. गु. शा.)–

गुणधर्म–सहस्त्रपुटी अभ्रकभस्मानुसार, परतु अल्प प्रभावी, इसीलिये यह मात्रा मे अधिक देनी पडती है। राजयक्ष्मा, क्षतक्षीणग्रस्त रोगी सहस्रपुटी को सहन नही कर सके तब उपयोग करना चाहिये। **अनुपान–**सहस्त्रपुटी के अनुसार।

४ कपर्दिक भस्म (औ. गु. शा.)–

मात्रा–१ से २ रत्ती। गुणधर्म–अग्निमांद्य, [illegible], [illegible] [illegible], अम्लपित्त, कोष्ठगतवात, [illegible], [illegible] और परिणामशूल में लाभदायक है। कफभूयिष्ठ नेत्ररोग में अंजन करने से उत्तम [illegible] कार्य करता है। विशेष गुण–अन्नस्थ पित्त की तीव्रता और अम्लत्व को कम करती है और दाह भी कम करता है। पूतिकर्ण में १ रत्ती भस्म कान में डालकर ऊपर से [illegible] डालना चाहिये। पित्त की विदग्धता को कम करता है। अनुपान–नींबू रस, [illegible] जल, दूध, वेलफल का मुरब्बा, [illegible] काढा।

५ कासीस भस्म (औ. गु. शा.)–

मात्रा–१ से २ रत्ती। गुणधर्म–जीर्ण विकारों में [illegible] करता है। वातकफनाशक, आमशोषक, दीपक, बालों का सफेद होना और झड़ना, नेत्रों में जलस्राव, नेत्रव्रण, गुल्म, प्लीहा, रक्तार्श, शूलनाशक है। इस भस्म का [illegible] गुण व्रण के लिये विशेष हितावह सिद्ध होता है। शरीर घटकों के मन्द निर्माणत्व को दूर करता है। शरीर घटको की शिथिलता नाशक, व्रण रोपक और शोषक है। सग्रहणी, अतिसार, प्रवाहिका में नागकेशर और मिश्री के साथ, मधुमेह की प्रथमावस्था मे जामुन बीज के चूर्ण के साथ देने से मूत्रराशि को अल्प करता है। जव्वासव के साथ भी उपयोग करते है। अनुपान–नागकेशर, मिश्री, जव्वासव, जामुनबीजचूर्ण, पुराना शहद, नीमपत्ररस, क्षीरवृक्षो के काढे।

६ कान्तलोह भस्म (औ. गु. शा.)

गुणधर्म–अग्निमाद्य, पाडुरोग, धातुक्षय, क्लायखज, वातवाहिनियो की क्षीणता, अस्थिक्षय, चक्कर, प्रसूति के पश्चात की निर्बलता मे देना चाहिये। यह शक्तिदायक गुणयुक्त होने से सूक्ष्म मात्रा मे उपयोग करने से जीर्ण विकारो मे विशेष लाभदायक सिद्ध होता है। वातवाहिनियो की क्षीणता के कारण चक्कर आना, हाथपैर काँपना, छाती मे धडकन आदि मे सूक्ष्म मात्रा मे इसका उपयोग करे। कुष्ठरोग मे मजिष्ठा कापाय के साथ, श्वासकास मे अदरक रस के साथ, कमजोरी मे अनार के शरवत के साथ देना चाहिये। स्वस्थ मनुष्य की वातवाहिनियो, स्नायु, शिरा मे सकोचन होकर शूल होना, चेहरेपर फीकापन, कमजोरी प्रतीत होना इस अवस्था मे विशेष लाभदायक है। इससे वातवाहिनियां वलवान होकर रक्त-कण की वृद्धि होती है। अनुपान–मिश्रीदूध, घृतशर्करा, मजिष्ठा कापाय, रक्तशोधन।

७ गोदन्ती हरताल भस्म (औ. गु. शा.)

गुणधर्म–इसका उपयोग जीर्णज्वर, नासागम, उर्ध्वगामी और अधोगामी रक्तपित्त, दाह, मूत्रदाह, अतर्दाह और गर्भ सबधी बिकारो मे किया जाता है। यह बल्य है। **अनुपान**–दूध और शक्कर, घी और शक्कर, गुलकद, मोरावला।

८ जसद भस्म (औ. गु. शा.)

गुणधर्म–नेत्रविकारो मे -।।- तोला गौघृत मे २ रत्ती, भस्म को घोट करके अजन करे। इससे कनीनिका तथा उसके आसपास व्रणो (Corneallulcers) का रोपण हो जाता है। जीर्णज्वर (कडकी), धातुक्षय, हाथपैरो मे जलन, पित्तज मेह गडमाला, गलगड़, गले के रोग (टॉन्सिल्सवृद्धि), अनुलोम क्षय मे लाभदायक है। यह उत्तम कफपित्तनाशक है। रसवाहिनियाँ, रसावहपिड विकृति और आत्रशोथ मे अति लाभदायक हैं। **अनुपान**–घृतशर्करा, दूध, आवले का मुरब्बा, अनार का अवलेह, शहद, कुमारीआसव, लोध्रासब।

९ ताम्र भस्म (औ. गु. शा.)

गुणधर्म–कफोदर, प्लीहोदर, उदरशूल, यकृतवृद्धि, प्लीहावृद्धि, पाडुरोग, शोथ, गुल्म, परिणामशूल, अग्निमाद्य, मासार्बुद मे सूक्ष्म मात्रा से उपयोग करे। कामला मे पित्तस्रावी कार्य करता है। विशेष **गुण**–कॉलरा के आक्षेप, यकृतपित्त घन स्फटिक वनना, गरविष आदि मे लाभप्रद है। **अनुपान**–कुमारी आसव, शहद, घृत, पुनर्नवा क्वाथ, गौमूत्र, मुली का रस। **सूचना**–गर्भवती, सूतिका बाल वृद्ध, क्षयरोगी, रक्तार्श, पित्तप्रकृति, मूत्रपिड के विकारो मे इसका उपयोग नही करना चाहिये।

१० तीक्ष्ण लोह भस्म–(र. र. स.)–

मात्रा–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–साधारणत कातलोह समान किंतु अल्प प्रभावी। **अनुपान**–कातलोह समान।

११ तालभस्म (औ. गु. शा.)–

मात्रा– -।।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–गलितकुष्ठ (Nodular Leprosy) सुप्तिकुष्ठ (Nervous Leprosy) विसर्प, मडल, पामा विस्फोटक, वातरक्त, उपदश (Syphillıs), वारबार आनेवाला ज्वर (Relapsing Fever) मे

अति लाभदायक है। वातकफात्मक गलितकुष्ठ में करंजपत्र के दो तोले रस में दो तोले घृत और १ रत्ती भस्म मिलाकर लेना चाहिये। भस्म उत्तरोत्तर ४ रत्ती तक लेना चाहिये। इसका उपयोग गर्भवती स्त्रियाँ और बालकों को नही करना चाहिये। अनुपान–बावची क्वाथ, रक्तशोधन, मजिष्ठादि कषाय सारिवासव, खदिरारिष्ट और रक्तशोधक और रक्तधात्वाग्नि, वृद्धिकारक औषधियो के साथ लेना चाहिये। अपथ्य–लवण, अम्ल, चरपरे पदार्थ, धूप मे घूमना, व्यायामादि नही करना चाहिये। पथ्य–घृत, चपाती, शर्करा, मूंग, लालशाली चावल, आवला, शहद।

१२ त्रिवंगभस्म (औ. गु. शा.)

मात्रा–१ से २ रत्ती। गुणधर्म–नपुसकत्व, वध्यत्व, श्वेतप्रदर, शुक्रक्षय, जननेंद्रिय शैथिल्यता। सधिवात के पश्चात होनेवाला मधुमेह, जीर्ण मधुमेह, आमवात, धातुविकार, स्वप्नावस्था गृध्रसीमे लाभदायक है। इसमे नाग, जसद, वग है। स्नायु शिथिलता के कारण होनेवाला नपुसकत्व, जननेंद्रिय शिथिलता के कारण स्त्रियो का वध्यत्व और विकार मे अति लाभदायक है। अनुपान–च्यवनप्राश, अमृतप्राश, फलघृत्त, दूधमिश्री, अश्वगधारिष्ट।

१३ नागभस्म (औ. गु. शा.)

मात्रा– -॥- से १ रत्ती, गुणधर्म–क्रमश शारीरिक घटक द्रव्यो को बलवान बनाकर शरीर पुष्ट करता है। अपचि, गडमाला, वातरोग, अग्निमाद्य, धातुक्षय मे शीघ्र गुणकारी है। यह कातिदायक, बलवीर्यवर्धक है तथा भस्म प्राकृतिक उन्माद, अपस्मार मे भी लाभदायक है। हृदय और फुप्फुस की निर्बलता से होनेवाली तीव्रकास मे सफल कार्य करता है। विशेष गुण–आमाशय वृद्धि के कारण (Dilation of Stomach) होनेवाला अम्लपित्त और मधुमेह की मूत्र शर्करा राशि को अल्प करता है। नागभस्म का कार्य अत्यत मद गति से होता है। अनुपान–मधुमेह मे बेलपत्ररस, जब्वासव, त्रिफलाक्वाथ, आमाशय शैथिल्य- मे महासुदर्शनचूर्ण क्वाथ, जीर्ण शहद पचतिक्त कापाय।

१४ प्रवालभस्म चंद्रपुटी–(औ. गु. शा)

मात्रा–१ से ३ रत्ती। गुणधर्म–सूर्यपुटी से यह सौम्य गुणयुक्त है। पित्त विकारो मे लाभदायक, अतर्दाह मूत्रत्याग मे दाह होना, उपदश, सूजाक के

पश्चात की शेष उष्णता, स्त्री प्रदर रोगो मे होनेवाली उष्णता मे लाभदायक है। गुडुचिसत्व प्रवाल मिश्र करके देने से ज्वररोग कम होता है और ज्वर के अन्य लक्षण नही होने पाते है। अम्लत्व को कम करके साम्यता उत्पन्न करना इसका विशेष कार्य है। आमाशय दाह को कम करता है। **अनुपान**–रक्तपित्तमे आवले के मुरब्बे मे, प्रदर मे, आवले के काढे मे या चावल के धोवन के साथ दे। अनार शरवत, दूधमिश्री, गुलकद, गुलाव, खस, चदन आदि के शरवत या चदनजल, शक्करजल, जल आदि।

१५ प्रवालभस्म सूर्यपुटी–(औ. गु. शा.)

मात्रा–१ से ३ रत्ती। **गुणधर्म**–पित्तविकार, नेत्ररोग। मूत्रकुच्छ, वमन, आम्लपित्त, शारीरिकदाह, अस्थिक्षय। माता, चेचक, दतोद्भव विकार, दाह, रक्तप्रदर, पित्तज श्वासकास, कालीखॉसी, गर्भवती को खॉसी से वमन होना। परिणाम शूल मे वमन होना, क्षयरोगारभ का ज्वर, अतर्दाह और रक्तपित्त मे लाभप्रद है। यह अग्निपुटी प्रवाल से गुण मे सौम्य है। **अनुपान**–अनार का शरवत, आवले का मुरब्बा, उशीरासव, सारिवासव, गुलकद, जल, अरविदासव, परिपाठा, दिकपाय, खस, चदन, गुलाव, आदि। शरवतो के साथ उपयोग करे।

१६ प्रवालभस्म अग्निपुटी–(औ. गु. शा.)

मात्रा–१ से ३ रत्ती। **गुणधर्म**–पित्तज, अग्निमाद्य, मूत्रविकार, धातुविकार, शिरोरोग, नेत्ररोग, रक्तार्श, पीलिया, जीर्णज्वर, यकृत विकार से वमन होना, वमन मे आवले के मुरब्बे के साथ चटाना चाहिये। कफ पित्तात्मक लक्षणो मे अतिगुणदायक। यह उत्तम अग्निवर्धक है। मदाग्नि मे चद्रपुटी प्रवाल का उपयोग नही करना चाहिए।

१७ मंडूरभस्म–(औ. गु. शा.)–

मात्रा–१ से ३ रत्ती। गुणधर्म–उत्तम रक्तवर्धक और वलदायक है। लालरक्त कणो की शीघ्र वृद्धि करके पाडु रोग मे लाभदायक है। यकृतवृद्धि और निर्वलतानाशक हे। मृद्विस्थि (Rickets), मृतभक्षक पाडू फीकापन मे लाभप्रद है। गर्भाशय, अडकोश और फलवाहिनियो की निर्वलता के कारण रजोदर्शन ठीक से न होना आदि विकारो मे लाभदायक है। **अनुपान**–कुमारीआसव रोहितकारिष्ट, शहद, पिपलीचूर्ण, त्रिफलाक्वाथ, पुनर्नवासव, कालेतिल, गुडपीपल, अनार का

शरबत, सारिवासव, उशिरासव, मडूर और लोहतान गुणो मे ग्राही होने के कारण मलबद्धता निर्माण हो सकती है। इसलिये इन पाचो के साथ त्रिफला या वायविडग का सेवन करते रहना चाहिये।

१८ बालमंडूर–(वृ. वै.)

गुणधर्म–इसे गोमूत्र की अतिभावनाएं देने की जरूरत नहीं। जहां मडूरभस्म तीक्ष्ण मालूम होता है वहाँ यह देना फायदेमद है खास करके सुकुमार स्त्री, पुरुषो को और बच्चो को देने लायक यह लोह है। **अनपान**–मडूरभस्म के समान।

१९ भौममंडूर भस्म–(वृ. वै.)

मात्रा–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–यह भस्म मडूर और माक्षिक के मिश्रण से बनता है। यह पित्तज सग्रहणी, पाडुरोग, हलीमक, परिणामशूल, गर्भवती स्त्रियो के चेहरे के फीकेपन (रक्ताल्पता) के लिए अति लाभप्रद है। यह सौम्य प्रकार का लोहकल्प है। रक्तकण वृद्धि कर बलदायक कार्य करता है। **अनुपान**–आवले का मुरब्बा, दूध, मिश्री, जबीर पाक, अनार शर्बत।

२० मधुमंडूर भस्म–(औ. गु. शा.)

मात्रा– १ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–पाडु, गुल्म, प्लीहा, सग्रहणी, आमता, सुतिकारोग, रक्तप्रदर, कुभकामला, शोथ, अत्रो की निर्बलता से अतिसार होना, शुक्रक्षीणत्व, कृमिरोग मे हितकारी है। **विशेषगुण**–अधिक रक्तस्राव होने से सूतिकारोग, हृदयरोग, स्त्रियो के चेहरे का फीकापन, निर्बल स्त्रियो का प्रदर, रक्ताल्पता के कारण होनेवाली अरुचि, खाँसी, श्वास मे अति लाभदायक है। **अनुपान**–गौमूत्र, शहद, बेल का मुरब्बा, वायविडग, शहद, पिंपलमूल, शिलाजित, कुमारीआसव न १। रोहितकारिष्ट और मडूर के अनुपान।

२१ मुंडलौह भस्म–(र. र. स.)

पाचक–पित्त दौर्बल्य के कारण जो कोष्ठशूल हुआ करता है उस पर और आमजन्य शूल, रक्तार्श पर उपयोगी। यह मलावष्टभ नही है।

२२ मृगश्रृंग भस्म–(औ. गु. शा)

मात्रा–१ से ६ रत्ती। **गुणधर्म**–फुफ्फुस सन्निपात (Pneumonia), फुफ्फुसावरण शोथ (Pleurisy), वातकफप्रधानज्वर (Influenza), दमा

खाँसी, जीर्णज्वर, अग्निमाद्य, मृद्विस्थि, (Rickets) पूयवृक्क, वृक्कव्रण मे लाभदायक हे । (प्रवाल+गुडुचीसत्व+मृगश्रृगभस्म के मिश्रण से क्षय ज्वर वेग कम हो जाता हे) दतरोग, ममूडो से पूय वहना, रक्तस्राव होना, अपचन, ज्वर, सधियो मे पीडा मे शीघ्र लाभदायक सिद्ध हुआ हे। (दतरोगो मे हमारे काले दतमजन का उपयोग विशेप गुण वताता है) प्रतिकर्ण मे रात को सेवन करे । **विशेष गुण**– हृदय के लिए शक्तिदायक है और कफ का नियमन करता है । फुफ्फुस धातुओ का शक्तिदायक तथा हृदय शैथिल्य (DilatedHeart) मे विशेप कार्य करता है। **अनुपान**– द्राक्षारिष्ट, कुमारी आसव, पार्थाद्यरिष्ट, शहद, अरविंदासव, सारिवासव, उशीरासव, पुनर्नवासव, मुलेठी क्वाथ, अडूसारस, महारास्नादिकाषाय, दूधमिश्री, दशमूलारिष्ट ।

२३ मौक्तिक भस्म–(औ गु. शा.)

मात्रा–१ से २ रत्ती । **गुणधर्म**–अत्यत शीतवीर्य और शामक हे तथा नेत्ररोग, नेत्रदाह, अम्लपित्त, जीर्णज्वर, दाह धातुक्षय, राजयक्ष्मा, उर क्षत, मूत्रदाह, हिक्का, मस्तिप्क की निर्वलता, चक्कर, नाक मे से रक्तस्राव होना, उष्ण वाप्प-सी निकल रही है या ऐसा अनुभव, गर्भवती की दाह होना, भूतोन्माद (Hysteria) मे हितकारी है । शक या सशय करने की प्रवृत्ति, चिडचिडापन हमेशा नेत्ररोग से ग्रसित होना, आदि मे सफल कार्य करता है । इससे रसादि धातु पुप्ट होकर धातुपरिपोपण क्रम व्यवस्थित हो कर बलवृद्धि करता है। चूने के कल्पो मे यह सौम्य कल्प है। **विशेष गुण**– सर्वांग, अतर्वाह्य दाह, अनार रस, गौदूध, मिश्री, आवले का मुरव्वा, दूर्वारस, घृत ।

२४ रौप्यभस्म–(औ. गु. शा.)

मात्रा– -।। -से १ रत्ती । **गुणधर्म**–वातशामक, स्नायु, शिरा, वातवाहिनियो पर/वृहण करके उन्हे वलवान बनाता है । नपुंसकता, मूत्रपिड की निर्बलता से शोथ आक्षेप, यकृत, प्लीहावृद्धि, विषविकार, अग्निमाद्यता, शुक्रक्षीणता से उन्माद होना, मूत्रमार्ग से पुयस्राव, स्थान विशेप मे धातुओ का सडना, श्वेतप्रदर आदि मे अत्यत लाभप्रद है । **विशेष गुण**–वातवाहिनियो का क्षोभ, स्थानविशेष मे कोथ (Gangrene)और क्षोभ जन्य प्रदर मे लाभदायक है । **अनुपान**–त्रिफला, दूध, मिश्री, नागकेशर।+मख्खन, मख्खन, दशमूलारिष्ट ।

२५ लौहभस्म –(औ. गु. शा.)

मात्रा– -॥- से १ रत्ती । **गुणधर्म**–शक्तिवर्धक रक्तकणो की वृद्धि करनेवाला, कामला, प्रदर । पाडुरोग, अग्निमाद्य, निर्बलता को दूर करता है । **विशेष अवस्था**–रक्त के कणो की वृद्धि करना, रक्त की अतिद्रवता को कम करके रक्तधातु को प्राकृतिक बल देना और मडूर के सब गुण उसमे भी है। **अनुपान**–त्रिफला चूर्ण घृत, शर्करा, विडगारिष्ट, अभयारिष्ट, रक्तशोधन ।

२६ वंगभस्म–(औ. गु. शा.)

मात्रा– -॥- से १ रत्ती । **गुणधर्म**– 'वगभक्षयतो नरस्य न भवेत स्वप्नेऽपि शुक्रक्षयण' यह इसके प्रसिद्ध गुण है। वातघ्न गर्भाशय, निर्बलता के कारण गर्भ धारणा न होना, होनेपर गर्भपात हो जाना, पीडितार्तव, अत्यार्तव । तलपेट मे पीडा । प्रदर, आमाशय, शैथिल्य के कारण, अग्निमाद्य आदि विकारो मे उपयोगी है। फैलनेवाले वृणो मे भी यह लाभदायक हे। **विशेष अवस्था**–जागरण या उष्णपदार्थ सेवन मे शुक्र पतला होकर स्राव होना, स्वप्नावस्था, मूत्र, शुक्र के विकारो मे लाभप्रद है। गर्भाशय और अडकोश को शक्तिदायक और प्रमेह मे मूत्रराशि को कम करता है। ऐसी अवस्था मे आमलकी चूर्ण के साथ उपयोग करना चाहिये । **अनुपान**–घृत, दूधमिश्री, शहद, अश्वगधारिष्ट, अशोकारिष्ट, जम्बासव, नीम का हिम खदिरारिष्ट, रक्तशोधन, मजिष्ठाकाषाय ।

२७ वैक्रांत भस्म –(र. चं.)

गुणधर्म–क्षय, वार्धक्य, अर्श, पाडुरोग, कास, श्वास, सग्रहणी, अतिसार, उर क्षत, प्रदर मे लाभदायक है। **अनुपान**–शहद, घृत ।

२८ शौक्तिक भस्म (औ. गु. शा.)

गुणधर्म–विदग्धाजीर्ण, विदग्ध डकार, आम्लपित्त, पित्तगुल्म, रक्तगुल्म, पित्तज सर्दी । पित्तातिसार और प्लीहा वृद्धि इनमे इससे उपशय मिलता है। मौक्तिक के समान ही मगर कम शक्ति की यह दवा आत्रबल्य होने से परिणाम शूल (पित्तजन्य) और यकृत शूल मे यह उपयोगी है। **अनुपान**–मौक्तिक के समान ।

२९ शंखभस्म–(औ. गु. शा.)

मात्रा–२ से ३ रत्ती। **गुणधर्म**–कफपित्तज, कोष्ठशूल, तारुण्यपीटिका, अतिसार, उदरस्थवायु, दुर्गन्धित अपान वायु, अजीर्ण से दस्त लगना, उदरशूल,

वमन, सग्रहणी, गुल्म, आम्लपित्त, अग्निमाद्य मे लाभदायक है। **विशेष अवस्था**–आकोशयमा शक्तिदायक, पाचन-सस्थान क्रिया को सुधारनेवाला, दाह की अवस्था में इसका उपयोग न करे। मौक्तिक, कर्पादिक मे तीव्र है। आँखो मे फुली पडने पर इसका उपयोग विचारपूर्वक करे। **अनुपान**–मौक्तिक के अनुसार।

३० सुवर्ण माक्षिक भस्म–(बृ. वै.)

मात्रा– -।।- से २ रत्ती। **गुणधर्म**–यह लोह, ताम्र का सौम्य कल्प है। पित्त विकृति या कफ विकृति मे इसका उपयोग होता है। नासागत रक्त पित्त, निद्रानाश, मस्तिष्क दाह, नेत्रविकार, रक्त प्रदर पाडु, पित्त विकार और सर्दी, गुदभ्रश, कामला, पित्तज शीर्षशूल इनमे बहुत ही उपयुक्त है। **अनुपान**–निद्रानाशपर सोठ, मुरब्बा, यदि गुदत्रिवली बाहर आती हो तो माक्षिक और त्रिफला रात को घी के साथ उष्ण जल का सेवन करे। सुवर्ण माक्षिक रुद्धपथ कामला से मूली रस मे देने से अत्यत उपयुक्त है।

३१ सुवर्ण भस्म (रक्त) (औ. गु. शा.)

मात्रा–१।१० से १।४ रत्ती। **गुणधर्म**–त्रिदोषघ्न, रसायन, शीतवीर्य, गरविषदोषनाशक, प्रज्ञा वीर्य, बल, स्मृतिदायक, कातिवर्धक, हृदयोत्तेजक, शक्तिदायक, वृष्य, प्रमेहघ्न, विषनाशक है। इसके हृदयोत्तेजक गुण स्थायी स्वरूप के है। ज्वरवेग कम होने पर इसका उपयोग बलदायक हेतु से किया जाता है। जतुजन्य क्षय, सग्रहणी मे लाभदायक है। **विशेष कार्य**—शक्तिवर्धक (General Tonic) है और क्षय की प्रथमावस्था और एक विशेष अवस्था तक उत्तम गुणदायक है। ज्वरावस्था मे विचारपूर्वक इसका उपयोग करे। **अनुपान**–रोगानुसार, मक्खन-मिश्री, दूधमिश्री, च्यवनप्राश, शहद।

३२ सुवर्ण भस्म (कृष्ण) (औ. गु. शा.)

मात्रा–१।१० से १।२ रत्ती। **गुणधर्म**–ऊपर लिखे अनुसार परतु कुछ सौम्य।

३३ हरताल भस्म (बृ. वै.)

गुणधर्म–ताल भस्म के अनुसार। **अनुपान**–ताल भस्म के अनुसार।

३४ हीरक भस्म–(र. चं)

मात्रा– $\frac{1}{8}$ रत्ती। **गुणधर्म**–आयुष्यवर्धक, कामोद्दीपक, त्रिदोषनाशक, अग्निदीपक हृदयोत्तेजक और नाडी क्षीणावस्था मे हितावह है। यह अमृततुल्य गुणदायक है। **अनुपान**–रोगानुसार।

रसायन और मात्राएँ

१ अग्निसूतरस (अग्निसूत) (औ. गु. शा.)–

मुख्य द्रव्य–पारद, गधक, शख, कपर्दिक, काली मिर्च आदि । **मात्रा**–१ से २ रत्ती । **गुणधर्म**—रसक्षय, शूल, अरुचि, सग्रहणी, आमसग्रहणी, पाडु, अर्श, गुल्म, कमजोरी, उदरशूल, विषूचिका मे उपयोगी । **विशेष अवस्था**– भयकर अग्निमाद्यता शीघ्र हटाती है। कफ-वृद्धि और पित्तक्षीणता मे हितकारी। उत्तान-पत्ति वृद्धि मे इसका उपयोग नही करना चाहिये । **अनुपान**–सग्रहणी मे पिपली चूर्ण और घृत, प्रमेह मे तो हो तक्र मे अल्प उपयोग के लिए, नीबू रस, गौमूत्र तथा गरम जल, आसवारिष्ट ।

२ अग्निकुमार –(र. यो. सा.)

मुख्य द्रव्य–पारद, गधक, टकण । बछनाग, काली मिर्च, शख, कपर्दिक आदि । **गुणधर्म**–अजीर्ण, अग्निमाद्य, सग्रहणी, आमज्वर, वातगुल्म, विषूचिका (कॉलरा) । आमल अतिसार, आमजशूल, पेट का फूलना, मुखप्रसेक (मुहँ मे पानी भरना) मे हितावह है । इसमे शख, कपर्दिक, काली मिर्च पर्याप्त प्रमाण मे है, विशेपत कफजन्यदोप-विकार मे अधिक हितावह है। खाँसी और अजीर्ण मे उत्तान कफ अवस्था मे शीघ्र लाभकारी है। **अनुपान**–अदरकरस, तक्र, शहद, नीबू का रस, उष्णजल, मधुकारिष्ट, तुलसीपत्र रस ।

३ अग्निरस (र. यो. सा. ७७)–

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, हरीतकी, विभीतक, वासा आदि । **मात्रा**–४ से ५ रत्ती । **गुणधर्म**–खॉसी, दमा (Brancho Pneumonia) आदि फुफ्फुस विकार और गलावेप्ना आदि मे लाभप्रद है। **अनुपान**–उष्णजल नीबू रस ।

४ अग्नितुंडीरस (औ. गु. शा.)–

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, अजमोदा, हरीतकी, विभीतक, आमलकी, सज्जी चित्रक, सेधानमक, जीरा, शौवर्चल, विडग, काला नामक । सोठ, काली मिर्च, पिपली, कुचला आदि । **मात्रा**– -।। - से १ रत्ती । **गुणधर्म**–यह कुचला कल्प है । पाचक औपधियो के सयोग से यह दीपक -पाचक है, इसलिए अग्निमाद्य, अजीर्ण, आमातिसार, पेट का फूलना, आत्रस्तव्धता, आनाह, शूल,

अन्नद्वेष मे हितावह है। **विशेष अवस्था**– वातविकार, कृमि, आमवात, शूल, अग्निमाद्य और पाचन सस्था की स्तब्धता नाशक है। **अनुपान**–गरम जल, नीबू-रस, तक्र।

५ अर्शकुठार–(र. यो. सा. २५३)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, लौहभस्म, ताम्रभस्म, त्रिकटू, दतीमूल, जमीकद, सुहागा, यवक्षार, स्नुही आदि। **मात्रा**–॥ - से १ रत्ती। **गुणधर्म**–वातानुलोमन और मलनि सारक कार्य करके अर्श, रक्तार्श, कोष्ठबद्धता, अपचन, विबधनाशक तथा अग्निवर्धक है। **विशेष अवस्था**–रक्तप्रवहण हो रहा हो, शूल मे उपयोगी। **अनुपान**–तक्र, कुटजावलेह, अनार रस, कुटजारिष्ट, गगावती अर्क।

६ अश्वकंचुकी (र. यो. सा. २६६)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, बछनाग, सुहागा, जमालगोटा आदि। **गुणधर्म**–गुल्म, वातरोग, क्षय मे, अदरक इसके साथ दे। चूहे के दशस्थानपर अदरक रस मे मिलाकर लगावे। कोष्ठबद्धता, बालको के उदर विकार, सन्निपातज्वर, अजीर्ण उदर मे लाभदायक, खाज मे सेवन करे तथा ऊपर से गौमूत्र मे मिलाकर लेप करे। जीर्ण विकारो मे अति लाभदायक हैं। **विशेष अवस्था**–कफजन्य विकारो मे और उदररोगो मे विरेचक कार्य करता है। **अनुपान**–कुमारी आसव, पुनर्नवादिकाषाय, अदरक रस, शहद, करेले का रस और शहद, उष्ण जल और शर्करा।

७ आनंदभैरव (अतिसार) (र. यो. सा. २९३)

मुख्य द्रव्य–हिगल्र, वछनाग, कालीमिर्च, सुहागा, पिपली, इद्रजव आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–आमपाचक और त्रिदोप पर अतिसार नाशक है। **विशेष अवस्था**–कासश्वासघ्न औषधि युक्त होने पर कासश्वासयुक्त अतिसार मे लाभप्रद है। **अनुपान**–ताजा तक्र, भुनी हिग, कुडा छाल को तक्र मे घिसकर, शहद, दही। **पथ्य**–दही, चावल, गौघृत, जल, रात को, सोते समय भाँग।

८ आनंदभैरव (कांसपर) (र. यो. सा. २९६)

मुख्य द्रव्य–हिगुल, वछनाग, सोठ, कालीमिर्च, पिपली, सुहागा, गधक आदि। **गुणधर्म**–ज्वर, प्रतिश्याय, खाँसी, सन्निपातज्वर, अपस्मार, वातविकार मे विशेषत क्षय मे अजीर्ण, दस्त, ज्वर, खाँसी, इन लक्षणो मे विशेप उपयोगी, विच्छु के दशस्थान पर चणकक्षार या सैधव और तक्र मिलाकर मालिश करे और सेक करे, पश्चात १ गोली सैधव ओर घृत के साथ खिलाना चाहिये।

विशेष अवस्था–खांसी मे कफ को पतला करके पीसभागक कार्य करना है। अनुपान–अदरक रस, शहद, घृत पाचक रस और शहद।

९ आरोग्यवर्धिनी–(र. यो. सा. ३२५)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, लोहभस्म, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म त्रिफला, शिलाजित, चित्रक, गुग्गुल आदि। मात्रा–३ से ६ रत्ती। गुणधर्म–दीपक, पाचक, जीर्णज्वर, त्रिदोषजन्य ज्वर, यकृतवृद्धि से उत्पन्न होनेवाले ज्वर, कामला, शीतक ज्वर मे लाभदायक तथा बलवर्धक। ८५ दिन सतत सेवन करने से सब प्रकार के कुष्ठ रोग ठीक होते है। उदर मे दुर्गंधित वायु सनन, अजीर्ण, कोष्ठवद्धता, अर्श मे अति लाभदायक है। मेदस्वी व्यक्ति को शहद+जल अनुपान के साथ उपयोग करने से मेद कम होता है। ज्वर आने के दो दिन के पश्चात घृत के साथ इसका उपयोग करे, औषधि को पीसकर उपयोग करे। अनुपान–घृत और उष्ण जल।

१० अगस्ति सूतराज–(औ. गु. शा.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, हिंगुल, धत्तूर बीज। गुणधर्म–यह दवा अतिसार मे ज्यादा दस्त होना और पेट मे दर्द होना उस वक्त उपयुक्त है। सेम, खून गिरना, इस पर अच्छा उपयोगी होता है। उसमे अफीम है। अतिसार मे छर्दि निद्रानाश इसपर दे।

११ इच्छाभेदी–(र. यो. सा. ३३९)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, सोठ, काली मिर्च, सुहागा, जमालगोटा, आदि मात्रा–१ से ३ रत्ती। गुणधर्म–रेचक (जुलाव) के लिये १ रत्ती गरम पानी और जल शर्करा के साथ देना चाहिये। अजीर्ण, उदररोग, कोष्ठवद्धता, वातरोग, शूल, गुल्म मे रेचक गुण के कारण लाभदायक है। रात को सोते समय १ गोली उष्ण जल के साथ लेना चाहिये। कभी किसी को इससे वमन भी हो जाता है। अनुपान–गरम पानी, घृत और गरम जल, घृत और गौमूत्र। सूचना–यह रस गर्भवती, बालक तथा निर्बलो को नहीं देना चाहिये।

१२ उपदंशसूर्य–(र. यो. सा. ४२४)

मुख्य द्रव्य–श्वेत सोमल, त्रिफला, रिगणी, कडूनिव आदि। मात्रा–१ से -॥- रत्ती। गुणधर्म–जीर्ण उपदंश तथा इसी से होनेवाली अन्य व्याधियो मे लाभप्रद

है। अति तीव्र औषधि होने से अनुपानार्थ घृत का अधिक उपयोग करना चाहिये। इसके सेवन से उपदंश के और अन्य प्रकार के सडे-गले व्रण ठीक होते है। उपदंश की तीव्रावस्था मे भी कार्य करता है। इसलिये संभालकर उपयोग करे। **अनुपान**–घृत, गुल्कंद, दूध। **सूचना**–इस औषधि के सेवन-काल मे तेल, गरम मसाला, खट्टे, वातज आदि पदार्थों का सेवन नही करना चाहिये।

१३ उन्मादगजकेसरी (र. यो. सा ४०४)

मुख्य द्रव्य–पारा, गंधक, मैनशील, धत्तुर बीज, विडंग क्वाथ, अगस्ति आदि। **मात्रा**–२ से ४ रत्ती। **गुणधर्म**–उन्माद, भूतोन्माद अपस्मार मे लाभप्रद है। **अनुपान**–घृत, ब्राह्मीघृत, सारस्वतारिष्ट।

१४ एकांगवीर–(र. यो. सा. ४४३)

मुख्य द्रव्य–पारा, गंधक, कांतलोहभस्म, वंगभस्म, नागभस्म, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, तीक्ष्णलोहभस्म। **मात्रा**–१ रत्ती। **गुणधर्म**–अर्दित, एकांगवात, आमवात, अर्धांगवात, अपस्मार, संधिवात, मूर्छा, संमोह, भ्रम, पक्षाघात, गृध्रसी विश्वाची मे लाभदायक है। **अनुपान**–ब्राह्मी अर्क, ब्राह्मीघृत, सारिवाकल्प, घृत, शहद।

१५ कनकसुंदर–(र. यो. सा. १९)

मुख्य द्रव्य–हिंगूल, काली मिर्च, गंधक, सुहागा, पिप्पली, वछनाग, धत्तुर-बीज आदि। **मात्रा**– ।।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–संग्रहणी, अग्निमांद्य, तीव्रज्वर, अतिसार, शौच समय कूथने मे आराम मिलता है। आमता, मरोड के साथ आम मे लाभप्रद है। बालको के दंतोद्भव विकारो मे भी लाभदायक है। **अनुपान**–धान्यपंचक, क्वाथ, शहद। **पथ्य**–दहीभात, तक्र, चावल।

१६ कृमिकुठार (र. यो. सा. ३२२)

मुख्य द्रव्य–कपूर, इंद्रयव, त्रायमाण, अजमोदा, विडंग, हिंगूल, वछनाग, पलाशबीज, आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–धत्तूररस और शहद मे इसका उपयोग सात दिन तक करने से कृमियोग नाश हो जाता है। सायं-प्रात दो बार देना चाहिये।

१७ कामधेनु–(र. यो. सा. १७२)

मुख्य द्रव्य–पारा, गंधक, वछनाग, सोंठ, काली मिर्च, पिपली, लोहभस्म,

अभ्रकभस्म आदि। मात्रा १ रत्ती। **गुणधर्म**–धातुक्षय, पाडुरोग, जीर्ण विपमज्वर, प्रमेह, रक्तपित्त, सन्निपात, शूल ,गुल्म, कृमि, अर्श, ग्रहणी मे लाभदायक है।

१८ क्रव्यादरस (बृहत्) (र. यो सा. .३५३)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, ताम्रभस्म, सुहागा, लोहभस्म, काली मिर्च आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–अत्यत अग्निदीपक है। मास जैसे जड पदार्थ सेवन करने पर पाचनार्थ १ गोली तक्र और सैंधव मिश्र करके देना चाहिए। अजीर्ण शूल, आमातिसार, कास, श्वास, जलोदर, प्लीहावृद्धि, वातजग्रथी, उदररोग, व्रण कोप्ठवद्धता, स्थूल आदि मे लाभप्रद है। **अनुपान**–अदरकरस, तक्र, सैंधव , शहद, नीबूरस, गुल्म, प्लीहा, विद्रधी मे सोठ, बिडलोण, हिग के साथ देना चाहिये। **सूचनाः**–तीव्र गुणयुक्त होने से गर्भवती और उष्ण प्रकृति के रोगियो को न दे। आवश्यक्ता पर अल्प मात्रा मे देना चाहिये।

१९ कासकेसरी–(र. यो. सा. २५१)

मुख्य द्रव्य–हिगूल, काली मिर्च, गधक त्रिकटु, सुहागा, आदि। **मात्रा**–१ से ३ रत्ती तक। **गुणधर्म**–कास, श्वास और शिर शूल इन पर उपयुक्त है।

२० कामदुधा मौक्तिक युक्त–(र. यो. सा. १५७)

मुख्य द्रव्य–मौक्तिकभस्म, प्रवालभस्म, शौक्तिकभस्म, कर्पादिक, शख, गरिक, गुडुची सत्व। **मात्रा**– -।।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–पित्तविकार, आम्लपित्त, भ्रम, मूर्च्छा, चक्कर आना, उन्माद, अपस्मार, मस्तकशूल, श्वेतप्रदर, रक्तस्राव, अतर्दाह मे लाभदायक है। इसके सेवन से पित्त की तीव्रता कम होती है। उसी प्रकार मस्तिप्क क्षीणता, मूत्रदाह, वारवार मुह मे छाले पडना, सर्वांग दाह, गर्भवती की वमन, मस्तिप्क आदि पर अधिक दवाव पडने से चक्कर आना इस अवस्थामे उत्तम कार्य करता है। **अनुपान**–दूध, शर्करा, आवले का मुरब्बा, अनारपाक, जीरा, मिश्री, शीतलजल।

२१ कामदुधा (मौक्तिक विरहित) (र. यो. सा.)

मुख्य द्रव्य–प्रवालभस्म, शौक्तिकभस्म, कर्पादिकभस्म, शखभस्म, स्वर्णगैरुक, गुडुची सत्व आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **कार्य**–उपरोक्त परतु अल्प प्रभावी।

२२ कामदुधा लघु–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–स्वर्णगेरुक, श्लक्ष्ण, प्रवालभस्म। **मात्रा**–२ से ३ रत्ती। **गुणधर्म**–रक्तपित्त, मूत्रदाह, उदरदाह मे लाभप्रद कार्य करता है। विदग्धाजीर्ण मे जलन कम करती हे। **अनुपान**–घृत, आवले का मुरब्बा, दूध+बतासा।

२३ कस्तूरी भैरव–(आ. ग्रंथ र. यो. सा. १२१)

मुख्य द्रव्य–वगभस्म, जसदभस्म, स्वर्ण-माक्षिकभस्म, रजतभस्म, कातभस्म, रससिंदूर, लवग, जायफल आदि। **मात्रा**– -।।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–यह दवा अत्यत शक्तिवर्धक है। इससे धातुक्षय, शुक्रक्षय और नपुसकत्व नष्ट होता है। उसी तरह श्वास, प्रमेह, सन्निपातिक ज्वर इन पर अधिक उपयुक्त है। स्त्री के गर्भाशय के विकार पर अच्छा कार्य करता है। **अनुपान**–दूध, शक्कर।

२४ कर्पूर रस–(र. यो. सा. ७२)

मुख्य द्रव्य–जायफल, जायपत्री, एला तमालपत्र, नागकेशर, धत्तूरबीज, हिंगुल, रसकर्पूर। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–कर्पूर रस, यह उपदश के विकार पर उपयुक्त है। उपदश के उत्पन्न हुए सधिवात (Rheumatism) पर इसका उपयोग होता है। सुबह एक गोली और शाम को १ गोली गरम पानी के साथ सप्ताह तक ले। **पथ्य**–गेहूँ की रोटी और घी। **अपथ्य**–नमक।

२५ कालकूट रस–(र. यो. सा. २१३)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, वछनाग, ताम्रभस्म, सुहागा, हरिताल, चित्रक, त्रिफला, वचा, नीबू, लहसुन, धत्तूर, नागवेलपत्र आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–यह रस सड़े गले पदार्थो के सेवन से होने वाले विकारो मे अति लाभदायक है। सन्निपातज्वर, वडबडाना, बेहोशी, भ्रम, श्वास, सुस्ती, तद्रा, हिक्का, कप, कफविकार, हाथ पैर शीतल हो जाना, और सन्निपातज ज्वर के उपद्रव, जीर्ण वातविकार, प्लेग मे लाभदायक हैं। यह उत्तम हृदयोत्तेजक भी हे। **अनुपान**–अदरक रस, शहद, तुलसीपत्र रस। **सूचना**–नाजुक मिजाजवाले, बालक, गर्भवती स्त्री, रक्तस्रावी को नहीं देना चाहिये।

२६ गर्भपाल रस–(र. यो. सा. ४६४)

मुख्य द्रव्य–हिगुल, नागभस्म, वगभस्म, तमालपत्र, इलायची, सोठ, काली मिर्च, पिपली, काला जीरा, धनियाँ, चव्य, द्राक्ष, देवदार, लोहभस्म आदि।

मात्रा–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–गर्भस्राव और गर्भपात वारवार होना इस अवस्था मे गर्भ धारणा से ९ मास पूर्ण होने तक इसका सेवन करने से गर्भ-वृद्धि और गर्भरक्षा होती है। श्वास, खाँसी, सग्रहणी, आम्लपित्त, श्वेतप्रदर, अतिसार आदि। गर्भवती स्त्री के विकारो मे लाभप्रद है। **अनुपान**–शहद, द्राक्षावलेह, पचभद्रकापाय, मन्नुका क्वाथ, दूध।

२७ गंडमालाकंडन रस–(र. यो. सा. ३९४)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, ताम्रभस्म, मण्डूर, मोठ, काली मिर्च, पिप्पली, सेधा नमक, काचनार, तक्र और गुग्गुल आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–गडमाला, गालगुड, क्षय, ग्रथि मे लाभदायक कार्य करता है। उत्तम रक्तशोधक भी है। **अनुपान**–काचन छाल का क्वाथ। **बाह्योपचार**–श्वेतगौकर्णी मूल का लेप ग्रथि पर करना चाहिये। ग्रथिभेदन लेप का भी उपयोग किया जा मकता है।

२८ गंधक रसायन–(र. यो. सा. ४२७)

मुख्य द्रव्य–शुद्ध गधक, (गौ का दूध, चतुर्जात, गुडूची, त्रिफला, सोठ, भृङ्गराज आदि रसो की आठ-आठ भावनाये दी है)। **मात्रा**–१ रत्ती। **गुणधर्म**–रक्तविकार, खाज, दाद, उपदश के चट्टे, शीतपित्त, उदर्द, विसर्प, कुष्ठ, गडमाला, अपचन, आमातिसार, रच्रु, अनुलोमक्षय, धातुक्षय, जीर्ण, उपदश, सब प्रकार के प्रमेह, उदर दृष्टिमाद्य तथा कच्चे रसायन के सेवन पारदादि विप फूटकर त्वचा से वाहर निकलकर व्रण से वनाते है आदि मे लाभदायक कार्य करता है। **अनुपान**–दूध+शर्करा, घृत+शर्करा, मजिष्ठा कापाय, त्रिफला क्वाथ।

२९ गलित्कुष्ठारी–(र. यो. सा. २८५)

मुख्य द्रव्य–पारदभस्म, गधक, लोहभस्म, ताम्रभस्म, त्रिकटु, गुग्गुल, शुद्धकुचला, चित्रक, शिलाजित, करज वीज, अभ्रकभस्म, आदि घी और शहद के साथ मिलाकर रखे। मात्रा–१ रत्ती। **गुणधर्म**–किलासकुष्ठ, वातरक्त, गलित-कुष्ठ आदि मे अत्यत लाभप्रद है। जीर्ण जलोदर मे सफल कार्य करता है। औपधि अधिक दिन तक खिलाना चाहिये। **अनुपान**–घृत, शर्करा, वावची, क्वाथ। **पथ्य**–चावल तथा मीठे पदार्थ।

३० घोड़ाचोली–(र. यो. सा. २६६)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, वछनाग, हरिताल, सुहागा, जमालगोटा, त्रिकटु,

त्रिफला, आदि। **मात्रा**– १ से २ रत्ती। **गुणधर्म**– उदररोग, कोष्ठवद्धता, यकृतवृद्धि, प्लीहावृद्धि अष्ठीला, ग्रथिक सन्निपात और चूहे के विग पर गोमूत्र मे घिसकर लेप करें। यह रस रेचक है। नेत्रो को यह औषधि न लगे इस ओर अवश्य ध्यान रखना चाहिये, उसी तरह बालक और गर्भवती स्त्रियो को न दें। **अनुपान**– उष्णजल।

३१ चतुर्मुख–(र. यो. सा. २८)

मुख्य द्रव्य–लोहभस्म, पारा, गधक, अभ्रकभस्म, सुवर्णभस्म आदि। **मात्रा**– ॥– से १ रत्ती। **गुणधर्म**–अति शक्तिदायक और अग्निदीपक है। धातुपोषण क्रिया भली भाँति होती है। अस्थिक्षय, अस्थिग्रन्थि, प्रवाहिका, अतिमैथुन के कारण निर्बलता, निद्रानाश, उपदश के पश्चात शरीर का ह्रास, क्षय, सन्निपात, शक्ति-पात क्षय, श्वास, कुष्ठ कास, पाडु, प्रमेह, शूल, अग्निमाद्य, आम्लपित्त, अप-स्मार, उन्माद, हिक्का ,खाज, त्वचारोग नाशक हैं। अत्यत पौष्टिक आयुष्य-कारक, पुत्रदायक औषधि है। जीर्ण सग्रहणी मे सब शरीर कृश हो जाता है और शक्तिपात होता है। अस्थियो की विकृति वृद्धि आदि मे लाभप्रद है। **अनुपान**– आवले का मुरब्बा, मिश्री, मक्खन, घृत, शहद।

३२ चंद्रकला–(र. यो. सा. ४२)

मुख्य द्रव्य– ताम्रभस्म, गधक, अभ्रकभस्म, मुक्ता, पित्तपापडा, दाडिम, दूर्वा आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–किसी भी प्रकार के अतर्दाह मे यह उत्तम कार्य करता है। सब प्रकार के पित्तविकार और वातपित्त विकारो को शीघ्र, शमन करता है। तीव्रज्वर को कम करके अग्निमाद्य उत्पन्न नही करता है तथा भ्रम और मूर्छादि लक्षणो मे लाभदायक है। अधोगामी, उर्ध्वगामी, रक्तपित्त, रक्तवमन सब ऋतु मे यह कार्य करता है, किंतु ग्रीष्म और शरद मे विशेष लाभप्रद सिद्ध हुआ है। **अनुपान**–गुलाब शरबत, धान्य पचकाषाय, गुलकद आवले का मुरब्बा, अमरूद का मुरब्बा, द्राक्षावलेह, तुषार, शर्करा और जल।

३३ चंद्रशेखर–(र. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, काली मिर्च, सुहागा, मैनशील, कुटकी आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–सन्निपातज ज्वरारभ मे इसका उपयोग करने से ज्वर वेग बढने नही पाता है। अन्नदोष विकृति से उत्पन्न हुआ ज्वर, प्रतिशाय, खाँसी, अजीर्ण मे लाभदायक है। यह अल्प सारक है। उग्र कफ, पित्तज ज्वर मे

विशेप लाभदायक है। **अनुपान**–तुलसीपत्र रस, अदरक रस, शीतजल।

३४ चन्द्रोदयरस–(र. यो. सा. ७८)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, वग, अभ्रक। **मात्रा**–१ से ३ रत्ती। **गुणधर्म**–बीस प्रकार के प्रमेह, कामला, पित्तज विकारो मे लाभदायी है। **अनुपान**–कदली कद रस।

३५ जलोदरारि–(र. यो. सा. २५५)

मुख्य द्रव्य–पिपली, काली मिर्च, ताम्रभस्म, हरिद्रा, जमालगोटा आदि। **गुणधर्म**–जलौदर, उदर सूजन, और पेटका दर्द इन विकारो पर इसका अच्छा उपयोग होता है। इसके सेवन से पानी समान दस्त होते है। पेट मे जो पानी जमता है उसे हटाने के लिये यह विशेप लाभदायी है। **अनुपान**–चव्यादिकाषाय, उष्णजल। **पथ्य**–दही, चावल, मूंग का कढन।

३६ ज्वरांकुश–(र. यो. सा. २२५)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक ,बछनाग, धत्तूर बीज, स्वर्णशिरी आदि। **मात्रा**–१ रत्ती। **सूचना**–पित्ताधिक ज्वर मे देने से ज्वरवेग तीव्र हो जाता है। **गुणधर्म**–शीतज्वर और साधारण ज्वर, विपमज्वर, मलेरिया मे लाभप्रद है। **अनुपान**–अदरकरस और शहद।

३७ ज्वरमुरारि–(र. यो. सा. २२५)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, बछनाग, हिगुल, लोग, कालीमिर्च, धत्तूर बीज आदि। **मात्रा**–१ रत्ती। **गुणधर्म**–वातपित्त, कफजज्वर, नवज्वर, उपद्रवयुक्त सन्निपातजज्वर, जीर्णज्वर, अजीर्ण और यकृत, प्लीहादि रोग, शोथ, गृध्रसी, सधिवात, वातजशूल, गुल्म, उदर, कास, श्वास, क्षय मे अति लाभदायक है। **अनुपान**–अदरक रस और तुलसीपत्र रस।

३८. जयमगल रस–(आ. ग्रं. र. यो. सा. १५८)

मुख्य द्रव्य–हिगूल, गधक, सुहागा, ताम्रभस्म, वगभस्म, सुवर्ण माक्षिकभस्म, सुवर्णभस्म, लोहभस्म। **गुणधर्म**–इसका उपयोग सब प्रकार के ज्वरपर अच्छा होता है। मेदोगत, मासगत, अस्थिगत, मज्जागत, विषमज्वर पर अच्छा उपयोग होता है। वैसे ही जीर्ण ज्वर मे यह जीरा और शहद के साथ दे। **मात्रा**– -।।- से १ रत्ती। **अनुपान**–शहद और जीरा।

३९ तृष्णाभ्रश रस–(यो. र.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, कर्पूर, शिलाजित, उशीर, काली मिर्च, मिश्री। **मात्रा**–२ से ३ रत्ती। **गुणधर्म**–ज्वर मे तृष्णाधिक्य इससे कम होती है। बहुमूत्र, कृमि, प्लेग, मरोड मे भी तृष्णाशामक कार्य करता है। **अनुपान**–लाई का जल दूध+वताशा, जल तुषार, शरवत।

४० त्रिभुवन कीर्ति–(र. यो. सा. २३७)

मुख्य द्रव्य–हिगुल, बछनाग, सोठ, काली मिर्च, पिपली, टकण, पिप्पली मूल, जीरा आदि। **मात्रा**–१ रत्ती। **गुणधर्म**–ज्वर, तेरह प्रकार के सन्निपात, प्रतिश्याय खाँसी मे लाभदायक है। वालको को माता निकलते समय खाँसी के विकार मे उत्तम कार्य करता है। **अनुपान**–अदरकरस, शहद, तुलसीपत्ररस। **सूचना**–इसके अतिसेवन से पसीना अधिक आता है और नाडी क्षीण होने लगती है। इस अवस्था मे लक्ष्मीविलास गुटी का उपयोग करे।

४१ त्रैलोक्यचिंतामणि–(र. यो. सा. २६०)

मुख्य द्रव्य–ताम्रभस्म, सुवर्णभस्म, अभ्रकभस्म, हीरकभस्म, लोहभस्म, रौप्यभस्म, शखभस्म, सुवर्णमाक्षिकभस्म, प्रवालभस्म, मौक्तिकभस्म, तालभस्म, वैक्रान्तभस्म, मैनसिल, कज्जली, चित्रक, स्नुही, जमीकद आदि। **मात्रा**– -।- से -।।- रत्ती। **गुणधर्म**– -।- से -।।- रत्ती का उपयोग शहद या शहद सुठी और गुड के साथा करना चाहिये। अग्निदीपक, शक्तिवर्धक, शरीर सुदृढ, अगकाति-वर्धक और वीर्यवर्धक है। यह अतिरिक्तज्वर, क्षय निर्वलता, कृशता, पाडुता, उदर रोग, जलोदर, मूत्राश्मरी, प्यास, शूल, शोथ, सग्रहणी, कुष्ठ, आमवात, रक्तातिसार, वातरक्त, वातरोग, श्वास, कास, रक्तपित्त, व्रण, मुखरोग मे लाभ-प्रद है, किसी भी रोग मे रोगी की नाडी की गति मद हो रही हो उस समय इसे अदरक और शहद के साथ देने से सफल कार्य करती है। पौष्टिकता के लिए दूध और घृत के साथ सेवन करना चाहिये। **अनुपान**–मक्खन मिश्री, दूधमिश्री। **सूचना**–गर्भवती, वालको को इसका उपयोग नही करना चाहिये।

४२ दुर्जलजेतारस–(र. चं)

मुख्य द्रव्य–वछनाग, कर्पादिक, काली मिर्च। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–ज्वर, अशुद्ध जल सेवन से ज्वर, मलेरिया, अजीर्ण, आनाह, शूल, खाँसी ओर

कास, मलावरोध मे अति लाभप्रद है। अनुपान–प्रात और सायकाल १–१ गोली जल के साथ सेवन करे।

४३ नाराचरस–(र. यो. सा. ४३०)

मुख्य द्रव्य–ताम्रभस्म, पारा, गधक, जमालगोटा, त्रिफला, कुटकी, यवक्षार, आदि। मात्रा–१ रत्ती। गुणधर्म–गुल्म, प्लीहा, उदर रोगो मे लाभदायक है। अनुपान–चावल का धोवन, उष्णजल।

४४ नारायण ज्वरांकुश–(र. चं.)

मुख्य द्रव्य–सोमल, वछनाग पारा, गधक, हरिताल, त्रिकटु, कपर्दिक भस्म, धत्तूर बीज, टकण आदि। मात्रा– -।- से -।।- रत्ती। गुणधर्म–कफप्रधान, वातप्रधान, वातकफप्रधान ज्वर और विषमज्वर नाशक है। साथ ही उत्तम दीपन, पाचन, अतिसारनाश कार्य करता है। औषधि सेवन करके वस्त्र ओढकर सोनेपर पसीना आता है और ज्वरवेग कम हो जाता है। तीव्र ज्वरवेग मे, ग्रीष्मऋतु मे पित्तप्रधान, व्याधि रक्तस्राव की अवस्था मे इसका उपयोग नही करना चाहिए। अनुपान–अदरक रस, शहद, उष्णजल।

४५ नित्यानंदरस–(र. यो. सा. ४४५)

मुख्य द्रव्य–हिगुलयुक्त पारा, गधक, ताम्रभस्म, वगभस्म, तालभस्म, मोरचूड, शखभस्म, कासीसभस्म, कपर्दिकभस्म, लोहभस्म, त्रिकटु, त्रिफला, विडग, सेधानमक, सौवर्चल, वॉगडक्षार, काला नमक, चवक, पीप्पलीमूल, कचोरा, देवदार, एला, वरधारा, निशोत्तर आदि। गुणधर्म–यह कफवातात्मक रक्त, मास, मेद, अस्थि और शुक्रधातुतक पहुँचे हुए श्लीपद विकार मे लाभप्रद है। इसका उपयोग बहुत दिनो तक करना पडता है। अनुपान–शीतल जल।

४६ पुष्पधन्वा (र. यो. स. २०१)

मुख्य द्रव्य–पारदभस्म, रससिदूर, नागभस्म, वगभस्म, लोहभस्म, अभ्रकभस्म आदि। मात्रा–१ से १।। रत्ती। गुणधर्म–अति पौष्टिक, शक्तिदायक, कातिदायक, मेदनाशक वृष्य है। अति मैथुन से होनेवाला निद्रानाश, नपुसकत्व, अपचन, शीर्षशूल, वध्यत्व, अति कामवासना के कारण आक्षेप और वीर्यस्खलन और वीर्यस्खलन से आराम प्रतीत होना इस अवस्था मे विशेप लाभप्रद है। अनुपान–घृत शहद, मिश्री, मावा आदि।

४७ पंचवक्त्ररस (र. यो. सा. १८)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, वछनाग, पिप्पली, टकण, कालीमिर्च, आदि। **मात्रा**–२ रत्ती। **गुणधर्म**–सन्निपातज्वर, अग्निमाद्य, कफवात विकार मे लाभप्रद है। **अनुपान**–अदरक रस।

४८ प्रतापलंकेश्वर–(र. यो. सा. २३८)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, अभ्रकभस्म, चित्रक, लोहभस्म, गखभस्म, जगली कडो की राख, वछनाग आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–प्रसूती स्त्री के विकारो मे सफल कार्य करता है। प्रथम दस दिन मे इसका उपयोग करने से गर्भाशयस्राव भली भाँति हो जाता है। इसलिये सुतिकाज्वर जैसे कप्टदायक विकारो-से रक्षा होती है। सूतिकाज्वर मे दाँतो का बैठना, उदरशूल, गुल्म, (वायुगोला) खाँसी मे लाभदायक है। सुतिकाभरण से यह सौम्य है। वातरोग, कफरोग, अर्श मे गुग्गुल, त्रिफला, गुडुची और शुठी के क्वाथ के साथ देना चाहिये। रक्तज गुल्म, सधिवात, धनुर्वात विकार मे भी सफल कार्य करता है। गर्भाशय की निर्वलता से रक्तशुद्धि न होना, ऋतुकाल मे उदरपीडा, आर्तवस्राव कष्ट से और अल्प होना आदि अवस्था मे इसका उपयोग करे। **अनुपान**–अनार का अवलेह। अदरक का रस, भृगराज रस और शहद, तुलसीपत्र रस।

४९ प्रदररिपु (र. यो. सा. २५०)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, नागभस्म, रसाजन, लोध्र आदि। **मात्रा**–२ से ३ रत्ती। **गुणधर्म**–रक्तप्रदर और अन्य मासिकस्राव सवधी व्याधियो मे लाभदायक है। सधिपीडा, मूत्रदाह, नेत्रदाह मे भी लाभदायक है। **अनुपान**–दारुहलदी, गुडुची, अडूसा, गोखरू काढा, दूधमिश्री, चावल का धोवन।

५० प्रदरारि (बृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–सौराष्ट्र, गोपीचदन आदि। **गुणधर्म**–श्वेतप्रदर मे लाभप्रद है। गर्भाशय मुख से या योनिमुख से जलीयस्राव होना, स्राव के कारण कंडू (खाज) आदि मे चावल के धोवन मे थोडी शर्करा मिलाकर देना चाहिये। **मात्रा**–४ से ८ रत्ती।

५१ प्रदरारिलोह (र. यो. सा. २५३)

मुख्य द्रव्य–कुटज, मजिष्ठा, मयूरचूड, पाठा, बेलफल, मुस्ता, धातकीपुष्प,

अतीस, अभ्रकभस्म, लोहभस्म। **मात्रा**–१ से ३ रत्ती। **गुणधर्म**–सब प्रकार के प्रदर, और इसी कारण निर्बलता, कटिशूल, सर्वांगशूल मे लाभदायक है तथा अग्निप्रदीपक और बलवर्धक है। **अनुपान**–दशमूलक्वाथ, चावल का धोवन।

५२ प्रमदानंदरस (बृ. यो. त.)

मुख्य द्रव्य–जायफल, कपर्दिक भस्म। धत्तूर बीज, टकण, सोंठ, पिप्पली, हिंगूल, बछनाग, आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–यह पाचक होने से ज्वर, अतिसार, सग्रहणी, उदर शूल, अजीर्ण वेदना आदि विकारो मे लाभदायक है। दूध के साथ सेवन करने से उत्तम वीर्यस्तंभक तथा कामोत्तेजक है। **अनुपान**–नीबू रस और मिश्री।

५३ प्रमेहगजकेसरी (वै. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य–कातलोहभस्म, नागभस्म, वगभस्म, अभ्रकभस्म, शिलाजित आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–मधु मे, पित्तज प्रमेह मे लाभदायक है।

५४ प्रवालपंचामृत (मौ. यु.) (र. यो. सा. ३११)

मुख्य द्रव्य–प्रवालभस्म, मौक्तिकभस्म, शखभस्म, शौक्तिकभस्म, कपर्दिकभस्म, आदि। **मात्रा**–१ रत्ती। **गुणधर्म**–आम्लपित्त, दाह, गुल्म, आनाह, कास अग्निमाद्य, बालग्रह, रक्तपित्त मे लाभदायक है।

५५ प्रवालपंचामृत (मौ. वि.) (र. यो. सा.)

मुख्य द्रव्य–प्रवालभस्म, शखभस्म, कपर्दिक, शौक्तिकभस्म आदि। **मात्रा**–१ से ३ रत्ती। **गुणधर्म और अनुपान**–उपरोक्तानुसार।

५६ बालार्क केसरी (बृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–कलखर्पर, प्रवालभस्म, मृगशृगभस्म, हिंगुल, सफेद मिर्च, कचोरा, केसर आदि। **मात्रा**–१ से ३ रत्ती। **गुणधर्म**–जीर्णज्वर, क्षुधामाद्य, श्वास, खाँसी, प्रतिश्या और बालरोगो मे लाभदायक है। **अनुपान**–विडग चूर्ण और शहद।

५७ बोलबद्ध (लाल बोलयुक्त) (र. यो. सा. २८४)

मुख्य द्रव्य–ताम्र बोलयुक्त कज्जली, (पारा, गधक) गुडुचिसत्व आदि। **मात्रा**–२ से ४ रत्ती। **गुणधर्म**–प्रसूती या गर्भपातावस्था मे रक्तस्राव बद करने के

लिये मिश्रीमक्खन मे देना चाहिये, स्त्रियो के प्रदर विकार मे स्तभक कार्य करता है। नाक, मुख से रक्तस्राव होना, प्रमेह, प्रदर, मूत्रदाह, रक्तार्श विद्रधी मे लाभप्रद है। काला बोल के गुण ताम्रबोल से ठीक विरुद्ध है, इससे स्राव आरभ होता है। प्रसूती अवस्था मे गर्भाशयसे स्राव ठीक न होने पर इसे देने से स्राव होकर गर्भाशय शोधन होता है। इन दोनो के गुणो मे जो अतर है उस तरफ अवश्य ध्यान देकर, उपयोग करना चाहिये। **अनुपान**–शहद।

५८ बोलवद्ध (काला)–(र. यो. सा.)

मुख्य द्रव्य–कृष्णवोल, कज्जली, गुडुचिसत्व आदि। **गुणधर्म**–उपरोक्त गुणधर्म से विरुद्ध गुणधर्म कृष्ण वोलबद्ध के है। स्राव न होता हो तो होने लगता है। सूतिकावस्था मे गर्भाशय से स्राव होने के लिये सिर्फ कृष्णबोल देने का विधान है, किंतु वहाँ कृष्णबोलवद्ध का उपयोग करना हितकारक है। ताम्र बोल और कृष्णबोल इनके कार्य मे जो भेद है वह ध्यान मे रखे। **अनुपान**–शहद।

५९ भूतभैरव–(र. यो. सा. ४४०)

मुख्य द्रव्य–शुद्ध हरताल, शुद्ध गधक, इमली, फल का गीर, छोटे करेली का फल, अर्कक्षीर स्नेहक्षीरी आदि। **मात्रा**–१ गोली, **गुणधर्म**–अट्ठारह प्रकार के कुष्ठरोग विशेषत कफज कुष्ठ मे लाभदायक है। **सेवनविधि**–एक गोली खिलाकर तत्काल इद्रायण मूल का क्वाथ पिलाकर उपर से कर्पूरमिश्रित पान खिलावे और रोगी को सोने दे। नीद से उठने पर मुख का स्वाद बिगडा न हो, शरीर स्वस्थ हो तो बकरी का मूत्र उप्ण कर पिलावे। इस क्रिया से उपरोक्त गुणवर्णन के अनुसार लाभ होगा। **पथ्य** –दूध, दूधचावल, घृत।

६० मधुमालिनी वसंत–(र. यो. सा. ५१९)

मुख्य द्रव्य–हिगुल, कलखर्पर, कचोरा, गहूला, काली मिर्च। **मात्रा**–।।– से १ रत्ती। **गुणधर्म**–जीर्णज्वर, वातविकार, नाशक गर्भ और गर्भवती को सुखकारक है। व्याधि मुक्त होने पर वलवर्धक, पुष्टिकारक कार्य करता है। इसके सेवन से शरीर वलवान, कातिमान तथा रसादि धातुपोषक है। शरीर के वजन मे भी वृद्धि होती है। **अनुपान**–घृत, शर्करा, शहद।

६१ महाज्वरांकुश–(र. र. स.)

मुख्य द्रव्य–पारा, बछनाग, स्वर्णक्षीरीबीज, त्रिकटु, आदि। **मात्रा**–१ रत्ती।

गुणधर्म–क्षय की प्रथमावस्था, आठ प्रकार के ज्वर, विशेषत वाताधिक्य ज्वर में लाभदायक है। चढ ज्वर मे इसका उपयोग करने से ज्वरवेग बढता है। **अनुपान**–अदरक रस और शहद।

६२ महामृत्युंजय–(र. यो. सा, ६८३)

मुख्य द्रव्य–सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, हरीतकी, आवला, कज्जली, टकण, वछनाग, यष्टिमधु, शुद्ध जमालगोटा, विभीतकी, आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–स्वेदल और सारक है, ज्वर खाँसी, अग्निमाद्य, मलेरिया ग्रथिक सन्निपात मे लाभकारी है। **सूचना**–अल्प रेचक होने से आजकल ज्वर मे इसका उपयोग करने की प्रथा पड गई है, किंतु आमावस्था कम हो जाने पर इसका उपयोग करने पर विशेष लाभदायक कार्य करता है। आमावस्था मे उपयोग करने से ज्वर बढने की सभावना होती है। रेचक गुणयुक्त होने से आंत्रिक सन्निपात (टाईफॉईड) मे इसका उपयोग न करे। **अनुपान**–अदरक रस और शहद।

६३ महालक्ष्मीविलास–(यो. र.)

मुख्य द्रव्य–सुवर्णभस्म, ताम्रभस्म, कान्तलोहभस्म, मडूर, अभ्रकभस्म, नागभस्म, मौक्तिकभस्म आदि। **मात्रा**– -॥- रत्ती। **गुणधर्म**–अत्यत शक्ति-वर्धक है। अपचन, जीर्णज्वर, अतिसार, अर्श, कामला, पाडुरोग, क्षय, वात-रोग, शुक्रक्षय, शूलयुक्त कुष्ठरोग मे लाभदायक है। बलमासविहीनत्व, अल्प हो तो इसका उपयोग करे किंतु इस अवस्था मे ज्वरवेग तीव्र न हो,। क्षय मे उपयोग करते समय इसका सूक्ष्म प्रमाण देना ही हितकारी सिद्ध होता है। इसका सेवन करने पर ज्वरवेग वृद्धि, अग, प्रत्यग दाह होने लगे तो सिद्ध-लक्ष्मीविलास का उपयोग करना ही उत्तम है। **सूचना**–तीव्र ज्वर, सूखी खाँसी मे कदापि इसका उपयोग न करे। **अनुपान**–मिश्री-मक्खन, अनार का शरबत, दूध, शर्करा।

६४ महावातविध्वंस–(र. यो. सा. ४६६)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, नागभस्म, वगभस्म, लोहभस्म, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, [illegible], पिप्पली, वृहत् पिप्पली (गज पिप्पली), टकण, वछनाग आदि। **मात्रा**–१ रत्ती। **गुणधर्म**–धनुर्वात, सधिवात आदि वातविकार, कफ-रोग, शीर्षशूल, बड़बड़ाना, चक्कर, बेहोशी, सन्निपातजज्वर, लक्षणो मे यह हेमगर्भ जैसा कार्य करता है। प्लेग मे भी यह सफल कार्य करता है। शूल,

अपस्मार, अग्निमान्द्य, शीतपित्त, प्लीहा, कुष्ठ, अर्श मे भी लाभप्रद है। **सूचना**—गर्भवती और बालको को इसका उपयोग नही करना चाहिए। **अनुपान**—अद्रक का रस शहद, भृंगराजरस।

६५ मेहांतक रसायन—(यो. र.)

मुख्य द्रव्य—अभ्रकभस्म, कांतलोहभस्म, लोहभस्म, नागभस्म, वंगभस्म, आदि। **मात्रा**—१ से १॥ रत्ती। **गुणधर्म**—किसी भी प्रकार के पेशाब से धातु जाना, स्वप्नावस्था, उपदंश, सुजाक मे लाभदायक है। **अनुपान**—बादाम की खीर और दूध।

६६ मृत्युंजय—(यो. र.)

मुख्य द्रव्य—बछनाग, गंधक, काली मिर्च, टंकण, पिप्पली, हिंगुल आदि। **मात्रा**—१ से २ रत्ती। गुणधर्म—सब ज्वरो मे उपयोगी है। जंबीरी नीबू के रस मे देने से जीर्णज्वर का नाश करता है। जीरे और गुड के साथ देने से विषमज्वर, अदरक रस के साथ देने से घोर सन्निपात मे लाभप्रद है।

६७ मृतसंजीवनी—(भै. र.)

मुख्य द्रव्य—पारा, गंधक, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, ताम्रभस्म, बछनाग, हरताल, मैनसिल, हिंगुल, चित्रक, गजपिप्पली, अतीस, त्रिकटु, आदि। **गुणधर्म**—विशेषत आत्रिक सन्निपात और अन्य सन्निपातज्वर, शीतपूर्वज्वर, दाहपूर्वक विषमज्वर और सततज्वर मे विशेष लाभप्रद है। **अनुपान**—दूध, मिश्री।

६८ योगराजलोह—(र. यो. सा. ११)

मुख्य द्रव्य—त्रिकटू त्रिफला, चित्रक, विडंग, शिलाजित, रजतभस्म, सुवर्णमाक्षिकभस्म, लोहभस्म, मिश्री आदि। **मात्रा**—३ से ४ रत्ती। **गुणधर्म**—यह पांडुरोग मे विशेष कार्य करता है। विष, कास, क्षय, विषमज्वर, कुष्ठ, अजीर्ण, मेह, शोथ, अरुचि, अपस्मार, कामला, अर्श मे लाभदायक है। रक्त के रंजकत्व की वृद्धि करता है। **अनुपान**—शहद, तुलसीपत्ररस, दूध, शर्करा, ब्राह्मी घृत, सारस्वतारिष्ट,। **पथ्य**—दूध, चावल, घृतचावल।

६९ राजचंडेश्वर—(वै. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य—पारा, गंधक, बछनाग, हिंगुल, आदि। **मात्रा**—१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**—ज्वर, विषमज्वर, सन्निपातज्वर, दूषित ऋतु से ज्वर, बारबार आनेवाला

ज्वर, शीतज्वर, प्रतिश्याय, खाँसी, श्वास मे हितकारी है। कफज्वर के तीव्र वेग मे उपयोग करने पर ज्वर वेग कम होता है। ज्वर निराम होजाने पर रोगी को स्नानादि वर्ग कराने के पूर्व यह देना चाहिये। इससे ज्वर फिर आने की सभावना कम हो जाती है। कफ भूयिष्ठ ज्वर मे हितकारी है। **अनुपान**–आवले का मुरब्बा, मिश्री की चाशनी,। **सूचना**–त्रिभुवनकीर्ति के समान गर्भवती और वालको के लिए इसका उपयोग नही करे।

७० रामबाण रस–(र. यो. सा. १७०)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, बछनाग, काली मिर्च जायफल आदि। **मात्रा**–१॥ रत्ती। **गुणधर्म**–तीव्र और जीर्ण सन्निपात, श्वास, कास, उदर, शोथ पाडुरोग, शोथ, क्षय और शूलनाशक है। **अनुपान**–कफाधिक्य मे अदरकरस पित्ताधिक्य मे धनियाहिम, वाताधिक्य मे निर्गुंडी रस, श्वास कास मे अडूसा रस, वा त्रिफला क्वाथ, उदर मे सोठ, सैंधव और हरड चूर्ण, शोथ मे पुनर्नवा कापाय, पाडुरोग मे त्रिफला कापाय, त्रिकटु क्वाथ और गौमूत्र, क्षय मे शहद, शूल मे अडी का तैल और एरड मूल क्वाथ और गरम पानी के साथ उपयोग करे।

७१ राजमृगांक–(र. चं.)

मुख्य द्रव्य–रस सिदूर सुवर्णभस्म, हरिताल भस्म, मैनसील, गधक आदि। **मात्रा**–१ से ६ रत्ती। **गुणधर्म**–विशेषत वातकफजल, क्षयरोग, सूतिकारोग, तत्जन्य अतिसार, सग्रहणी, जीर्णज्वर, धातुक्षय, निर्बलता, खाँसी, खून का स्राव होना आदि मे लाभदायक है। **अनुपान**–धृत, दूधमिश्री, मिश्री-मख्खन, च्यवनप्राश, जीवनामृत, शहद।

७२ राजवल्लभ –(र. चं.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, जायफल, लोग दालचीनी, इलायची, टकण, हिग, जीरा, तेजपत्र, अजवायन, सोठ, सेधा नमक, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, ताम्र-भस्म, रजतभस्म, काली मिर्च, निशोत्तर आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–इसी को नृपवल्लभ भी कहते है। यह शूल्म, गुल्म, आमवात, हृदयशूल, कुक्षीशूल, नेत्रपीडा, हलीमक, मस्तिष्कशूल, कटिशूल, आनाह, कृमि, वातरक्त, भगदर, उपदश, अतिसार, सग्रहणी, अर्श, प्रवाहिका मे लाभदायक है। यह अल्प पाचक तथा मूत्रवेग और मात्रा मे सुधार करता है। **अनुपान**–शहद, अदरक रस, महारास्नादि कापाय, आमपाचक कापाय।

७३ लघुसूतशेखर–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–सोंठ, सोनगैरिक आदि । **मात्रा**–२ से ८ रत्ती । **गुणधर्म**–चक्कर, वमन, बडबडाना, अर्धविभेदक (आधासीसी) सूर्यावर्त, पित्तज वमन, हाथपैरो मे जलन, नेत्रदाह, आदि रोगो मे लाभदायक है। **अनुपान**–दूध, बतासा, जल ।

७४ लघुमालिनी वसंत–(यो. र.)

मुख्य द्रव्य–कलखर्पर, सफेद मिर्च, 'गौदुग्ध का, मक्खन' आदि । **मात्रा**–१ से ३ रत्ती । **गुणधर्म**–जीर्णज्वर, धातुगत, ज्वर, विषमज्वर, अपचन, अग्निमांद्य, पीलाफीकापन, अतिसार सग्रहणी, नेत्ररोग, प्लीहावृद्धि और विषमज्वर पश्चात निर्बलता, बालक और गर्भवती को देने से गर्भ का पोषण भलीभाँति होता है। **सूचना**–सुवर्णमालिनी वसत जिनको तीव्र प्रतीत है ऐसे रोगी तथा बालको को उपयोग करना चाहिये । **अनुपान**–शहद-मिश्री, दूध-मिश्री, शहद, पिप्पली चूर्ण ।

७५ लक्ष्मीनारायण–(र. यो. सा. २२८)

मुख्य द्रव्य–गधक टकण, बछनाग, हिगूल, कुटकी, हरीतकी, अतीस पिप्पली, कुटज, अभ्रकभस्म, सेंधा नमक आदि । **मात्रा**–१ से १।। रत्ती । **गुणधर्म**–सूतिका का वातप्रकोप, सततादि, विषमज्वर, सूतिकाज्वर मे सफल कार्य करता है। अतिसार, ग्रहणी, रक्तातिसार, प्रमेह, शूल सूतिका का विकारनाशक है। आत्र सन्निपात (टायफॉईड Typhoid) के लिये यह एक अति उत्तम औषध है। किन्तु इन रोगो मे इसकी मात्रा अल्प देना चाहिये। इसके देने मे अल्प दोष तथा लक्षणो मे वृद्धि न होकर धीरे धीरे कम होते जाते हैं। रोगी को शौच हो जाता है। **सूचना**–अधिक प्रमाण मे इसका सेवन करने मे पसीना अधिक आकर रोगी घबराता है। इस अवस्था मे सुवर्णसूतशेखर+प्रवाल+गुडूची सबका उपयोग करने से यह लक्षण कम हो जाता है। अधिक स्वेद आनेपर लक्ष्मीविलास गुटी का उपयोग करे। **अनुपान**–शहद, दूध मिश्री, तुलसी रस और शहद । **सूचना**–यह गर्भवती स्त्री, बालक और निर्बल को नही देना चाहिये ।

७६ लक्ष्मीविलास गुटी–(र. यो. सा. २३६)

मुख्य द्रव्य–अभ्रकभस्म, पारा, गधक, कर्पूर, जायफल, जावित्री, विधारबीज, धत्तूरबीज, गाजे के बीज, विदारीकद, शतावर, नागबला, अतिबला,

गोक्षुर आदि। मात्रा---।। से १ रत्ती। गुणधर्म-नाडीगति मद होना, उष्णता कम होना, हाथ पैर ठडे होना, बेहोशी, स्वेदाधिक्य (ज्वर वेग अधिक हो तो चिता नही) इस अवस्था मे यह उत्तम कार्य करता है। जहाँ हेमगर्भ नही दिया जा सकता है वहाँ यह सफल कार्य करता ह। १५ प्रकार के कुष्ठ, बारह प्रकार के प्रमेह, नाडीव्रण, अर्श, भगदर, अनुवांशिक श्लीपद, गले का शोथ, क्षय हृद्रोग, उपद्रवयुक्त आमवात, जिव्हास्तभ, तीव्र अतिसार, अनुलोमक्षय, नासारोग, कर्णरोग, मुखरोग, नेत्ररोग, पीनस, शीर्षशूल, कफ, भूयिष्ठ सन्निपात, आन्त्रिक सन्निपात, विकारो मे हृदय क्षीण होने लगता हो ऐसी अवस्था मे बारबार चटाना चाहिये। अनुपान-अदरक रस, शहद, तुलसी रस, भृगराज का रस।

७७ लोकनाथ-(र. यो. सा. २५९)

मुख्य द्रव्य-पारा, गधक, कज्जली आदि। मात्रा-१ से २ रत्ती। गुणधर्म-पाडू, क्षय, गुल्म, उरक्षत, हिक्का, वमन, कास, श्वास, जीर्णज्वर, अम्लपित्त, गलग्रथि वृद्धि (टॉन्सिल्स Tonsilitis) स्वरभेद आत्र, व्रण, पुष्टव्रण, दुर्गंधित अपानवायु, दुर्गधित रेचन (दस्त), त्वचारोग, पेट मे वायु से गुडगुडाहट, सूतिकाज्वर मे लाभदायक है। हीग, सोठ, राई, मसूर तीली के पदार्थ वर्जित हैं। अनुपान-पित्तज विकार मे मख्खन+मिश्री, कफविकार मे शहद के साथ दे। चर्मतील जैसी वृद्धि शरीर के किसी भागपर हो जानेपर १ रत्ती। लोकनाथ और २-३ बूद पानी मिलाकर और उसमे डोरा भिगाकर जहाँ वृद्धि हो उसे बाँध दे। ऐसा कुछ रोज करने से वह मासवृद्धि गल जायगी। सेवन की मात्रा अल्प होनी चाहिये। सूक्ष्म मात्रा मे उपयोग किया जाय तो उपजीव्हा तथा अर्धजिव्हा वृद्धि मे लाभप्रद है।

७८ लोकनाथ सुवर्णघटित-(र. र. स.)

मुख्य द्रव्य-पारा, गधक, कज्जली, सुवर्णभस्म आदि। मात्रा- -।- से १ रत्ती। गुणधर्म-शरीर पुष्टिकारक, बलदायक, वीर्यवर्धक होता है। कृशता, अग्निमाद्य, हिक्का, खाँसी, अत्रक्षयमे लाभप्रद है। अनुपान-घृत, काली मिर्च के साथ २१ दिन सेवन करे। इसके सेवन काल मे नमक नही खाना चाहिये। घृत, चावल, दही, चावल का सेवन करे।

७९ वज्रवटी-(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य-कुचला, सोठ, ताम्रभस्म, बछनाग, हिगुल, कस्तुरी आदि।

मात्रा– -।- से १ रत्ती। गुणधर्म–यह उत्तेजक है। उदावर्त, शूल, आत्रस्तब्धता यकृतोदर मे लाभदायक है। शखवटी मे शूल कम न होने पर इसका उपयोग करे। अफीम की आदत जिन वालको को है उनके लिए उपयोग करने से अनुलोमन कार्य अत्यत सफलतापूर्वक करती है। अनुपान–घृत उष्णजल।

८० वसंत कुसुमाकर–(र. यो. सा. ४२३)

मुख्य द्रव्य–प्रवालभस्म, रससिदूर, मौक्तिकभस्म, अभ्रकभस्म, सुवर्णभस्म, नागभस्म, वगभस्म, कातलोहभस्म आदि। **मात्रा–** -।।- से १ रत्ती। **गुणधर्म–** अत्यत पौष्टिक, शुक्रवर्धक, कामोत्तेजक है। धातुक्षीणता, प्रमेह, क्षय, नपुसकता, प्रदर, वीर्यदोप, मस्तिप्क की निर्वलता मे लाभदायक है। **अनुपान–**उबाला दूध, मिश्री–मख्खन, घृतशर्करा, अम्लपित्त मे शतावरी रस और शहद। रोगानुमार देने से कामोद्दीपक और पौप्टिक कुष्माड रस के साथ देने से मस्तिष्क विकार शुक्रवर्धन के लिये शतवारी और असगध के साथ, क्षय की शक्तिपात अवस्था मे, शहद के साथ देना चाहिये। **साधारण अनुपान–**दूध, मिश्री, घृत और शहद।

८१ वात गजांकुश –(र. यो. सा. ४५०)

मुख्य द्रव्य–रससिंदूर, लोहभस्म, सुवर्णमाक्षिकभस्म, शुद्ध गधक, हरिताल, सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, हरडा, अरजी, टकण आदि। **मात्रा–**१ रत्ती। **गुणधर्म–** पक्षाघात, सधिनिर्वलता, उरुस्तभ, हनुस्तभ, मन्यास्तभ, गुध्रसी, आदि वात विकारो मे लाभदायक है। **अनुपान–**अदरक रस, तुलसीरस, सहजना, छालरस, रास्नाकापाय, दशमूलारिप्ट, सारस्वतारिप्ट, घृत, शहद, भृगराज रस।

८२ वातराक्षस–(र. यो. सा. ४६५)

मुख्य द्रव्य–रससिदूर, गधक, कातलोहभस्म, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, सफेद वसू, गूडूचि, चित्रक आदि। **मात्रा–**१ रत्ती। **गुणधर्म–**यह उष्ण है। जीर्ण वातरोग मे यह लाभदायक है। **अनुपान–**घृत के साथ लेकर उष्ण जल पीना चाहिये।

८३ वातविध्वंस–(र. चं)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, बछनाग, आदि। **मात्रा–**१।। रत्ती। **गुणधर्म–**

सर्वांगवात, अपस्मार, उन्माद मे लाभदायक है। अफीम की आदत छुडाना है तथा शरीर मे चमक-सी चलना इसमे लाभदायक है। **अनुपान**–अदरक रस, शहद, घृत। **सूचना**–गर्भवती स्त्री, बालको को न दे।

८४ वांतिहृद्रस–(र. यो. सा. ४८४)

मुख्यद्रव्य–पारा, गधक, लोहभस्म, शखभस्म आदि। **मात्रा**–१ रत्ती। **गुणधर्म**–विपूचिका, कृमी, आम्ल पित्त और वमन मे लाभप्रद है। **अनुपान**–बडी इलायची के छिलके की राख, जायफल की राख, नीबू के छिलके की राख और शहद।

८५ विश्वतापहरण–(र. यो. सा. ५३७)

मुख्य द्रव्य––पारा, गधक, निशोत्तर, कुटकी, जमालगोटा, कुचला, ताम्र-भस्म, पिप्पली, हरडा आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–अनुपान भेद से सब रोगो मे कार्य करता है। विशेपत विपमज्वर और सन्निपातज्वर मे लाभप्रद है।

८६ वातरक्तांतक–(र. यो. सा. ४६०)

मुख्य द्रव्य–पारा गधक, लोहभस्म, मैनसील, हरितालभस्म, अभ्रकभस्म, शिलाजित, गुग्गुल, सफेद गोकर्णमूल, दारुहलदी, बावची, चित्रक, सफेद पुनर्नवा, देवदार, त्रिफला, त्रिकटु, विडग आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–वात-
देवदार, त्रिफला, त्रिकटु, विडग आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–वात
रक्त मे उत्तम कार्य करता है। मूर्च्छा, तृष्णा, शीर्पशूल, वेदना, भ्रम, थकावट, गर्भस्थान पीडा, शोध मे लाभप्रद है। एक गोली सेवन के पश्चात नीम के पत्ते, पुष्प, और छाल का चूर्ण जल के साथ लेना चाहिये। **सूचना**–इसका उपयोग सतत न करे।

८७ शंखवटी–(बृहत्) (र. यो. सा. ३३)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, वछनाग, त्रिकटु, हिग, शखभस्म, वागडक्षार, सामुद्र नमक, सचल, बीडलवण, सेधेनमक, इमली का क्षार आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–विदग्धाजीर्ण, अतिसार, सग्रहणी, अग्निमाद्य, उदरशूल, उदररोग, शोथ, अर्श; परिणामशूल, अरुचि मे लाभदायक है। इसके सेवन से आमाशय वध का (Pylorus) द्वार शीघ्र खुलता है। इससे आमाशय का अन्न नीचे उतरने के कारण शूल कम हो जाता है। **अनुपान**–घृत या उष्णजल।

८८ शंखद्राव–(भा. भै. र. ७५३७)

मुख्य द्रव्य–सेधानमक, यवक्षार, नवसागर, सोरा, सोराष्ट्र, हिराकस, आदि।

मात्रा–१ से ४ रत्ती। **गुणधर्म**–इसका उपयोग सब प्रकार के गुल्म पर होता है। **अनुपान**–उष्णजल।

८९ शीतपित्तप्रभंजन–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–मूतगेश्वर की औषधियाँ इसमे है। इनके अतिरिक्त इसमे उपलेह और माक्षिक अधिक हैं। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–शीतपित्त उदर्द मे सेवन योग्य है। (कपित्थ) के पत्तो का रस या काली मिर्च और घृत ऊपर से लेप करे। यह रस वमन, अपचन, अतिसार, चक्कर, ज्वर, सडेक आदि मे भी लाभदायक है। **अनुपान**–अदरकरस और शहद, आवले का मुरब्बा, घृत।+काली मिर्च।

९० श्वासकुठार–(र. यो. सा. २१५)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, बछनाग, टकण, मैनसील, त्रिकटु आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–श्वास, खाँसी, तद्रा, बेहोशी, सन्निपातिक मूर्च्छा, अपस्मार, फुफ्फुसावरणशोथ (Dry Pleurisy), कफदोष मे लाभदायक है। मूर्छित अवस्था मे इसका नस्य देना चाहिये। **अनुपान**–अदरकरस, मिश्री, कटेरीमूलक्वाथ और शहद।

९१ सर्वागसुंदर नं १ (क्षयरोग में)–(र. यो. सा. ३४०)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, टकण, मौक्तिकभस्म, प्रवालभस्म, सुवर्णभस्म, कातलोह, हिगुल आदि। **मात्रा**– -।।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–क्षयनाशक है। वातपित्तज्वर, दारुणसन्निपात, सग्रहणी, गुल्म, भगदर मे लाभदायक है। वातजन्यरोगो मे तथा कफजन्यव्याधि मे शहद और पिप्पली चूर्ण, घृत, अदरक मिश्री और पान के साथ देना चाहिये। **अनुपान**–दूधमिश्री, मक्खन–मिश्री, च्यवनप्राश।

सर्वागसुंदर–नं २ (र. च.)

मुख्य द्रव्य–रसपर्पटी, जायफल, जावित्री, लोग, कडेनीम के पत्र, निर्गुंडीपत्र, इलायची आदि। **मात्रा**–१ से ३ रत्ती। **गुणधर्म**–वालरोगो मे अति लाभदायक है। मृद्वस्थि के विकार मे यह शीघ्र कार्य करता है। अर्श, रक्तातिसार सग्रहणी, सूतिकाविकार, कास, ज्वर आदि मे लाभप्रद है। आम वलप्रद तथा पुष्टिदायक है। वालको को सूक्ष्म मात्रा में देते रहने से बालरोगो से बालक ग्रसित नही होने पाते है। **अनुपान**–मिश्री–दूध, कुटजावलेह।

९३ सिद्धलक्ष्मीविलास–(र. यो. सा. २४०)

मुख्य द्रव्य–सुवर्णभस्म, रौप्यभस्म, ताम्रभस्म, कातलोहभस्म, तीक्ष्णलोह, मण्डूरभस्म, नागभस्म, अभ्रकभस्म, वगभस्म, प्रवालभस्म, मौक्तिकभस्म, रससिंदूर आदि। **मात्रा**–१ से १॥ रत्ती। **गुणधर्म**–क्षय, सूतिकारोग, कास, श्वास, शूल, गुल्म, कामला, वाल पकना आदि मे लाभदायक है। उत्तम कातिवर्धक तथा मेधाशक्तिवर्धक है।

९४ सिद्धकल्पमकरध्वज–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–कर्पूर, जायफल, लोग, काली मिर्च, कस्तूरी, आदि। **मात्रा**– १ गोली। **गुणधर्म**–यह अति वृष्य तथा रतिसुख इच्छावर्धक है। पाडुरोग, छर्दि, जीर्ण वातरोग, उन्माद, मतिभ्रम, उदर, मेह, नपुसकत्व, अरुचि, अग्निमाद्य, ग्रहणी, वाल पकना, कुभकामला, कफवातनाशक तथा शरीर पुष्टिवर्धक, वलदायक, शरीर प्रकृति को स्वस्थकर आल्हाददायक महौषधि है। योग्य अनुपान मे इसका उपयोग करना चाहिये। **अनुपान**–मक्खन, मिश्री, घृत और शहद।

९५ सुवर्ण मालिनी वसंत नं १–(र. यो. सा. ४२८)

मुख्य द्रव्य–सुवर्णभस्म, मौक्तिकभस्म, हिंगुल, काली मिर्च, कलखर्पर, गोदुग्ध का मक्खन आदि। **मात्रा** – -।।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–प्लीहावृद्धि, यकृतवृद्धि, अग्निमाद्य, अर्श, नेत्ररोग, प्रदर, पित्त और रक्तविकार, जीर्णज्वर, धातुगत विषमज्वर, फीकापन मे लाभदायक है। यह अत्यत शक्तिवर्धक तथा वृष्य है। मूत्रेद्रिय पर भी शक्तिदायक कार्य करती है। किसी भी रोग से या अति श्रमसे या अति व्यायाम से निर्बलता को शीघ्र दूर करती है। यह विशेषत पचनेद्रिय, यकृत, प्लीहा की वृद्धि मे उत्तम कार्य करती है। इसके सेवन से पाचनशक्ति मे सुधार होकर शौच साफ होने लगता है। बढा हुआ मेद कम हो जाता है। **अनुपान**–शहद और पिप्पलचूर्ण, जीर्णज्वर मे प्रात –साय पिप्पली के क्वाथ मे मिश्री मिलाकर -।।- रत्ती की मात्रा वसत की लेकर सेवन करे। जीर्ण मलेरिया ज्वर मे रात को मक्खनमिश्री मे १ रत्ती की मात्रा मे तथा प्रात काल सितोपलादिचूर्ण १ माशा घृत के साथ सेवन करे, दोनो समय भोजन के पूर्व रोहितकारिष्ट १ तो, जल १ तो मिलाकर सेवन करे। इस क्रम से इनका सेवन करने पर जीर्ण मलेरिया मे अपूर्व लाभ होता है। पूर्ण गुण प्राप्ति के लिये २१ दिन सेवन करे। इसके अतिरिक्त साधारण निर्बलता, नीद मे या वैसे ही वैठे हुए या लेटे हुए

पेशाब हो जाना, धातुगतज्वर तथा रोगानुसार पथ्यभेद करके सेवन करने **पर** सब रोगो मे लाभदायक कार्य करता है। मक्खन मिश्री के साथ सेवन करने से उत्तम बल्य कार्य करता है। गुडुचीसत्व के साथ सेवन करने की भी परपरा है। सूतिका के जीर्णज्वर मे मिश्री जीरे के साथ देना चाहिये । साधारण स्वस्थ व्यक्ति अगर प्रत्येक वर्ष शीत ऋतु मे सेवन करे तो बल तथा आरोग्य प्राप्ति होती है। **अनुपान**–दूध मिश्री, शहद पिप्पलीचूर्ण।

९६ सन्निपात भैरव–(र. यो. सा. २६५)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, वछनाग, सोमल, ताम्र आदि। **मात्रा**–१ से १।। रत्ती। **गुणधर्म**–विषमज्वर, ग्रथिक सन्निपात, सन्निपातज्वर, इसमे और श्वास, खाँसी, कप, बेहोशी, बडबडाना आदि उपद्रवो मे लाभदायक है। **अनुपान**–तुलसीपत्र रस और शहद।

९७ स्वच्छंद भैरव–(र. यो. सा. ५८५)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, सेधानमक आदि। **गुणधर्म**–ग्रहणी , श्वास, कास इन पर यह उपयुक्त है। ज्वर मे आनेवाली मूर्च्छा या ग्लानि, अल्पनिद्रा इन पर उत्तम है। वैसे ही यह तन्दुरुस्ती वढानेवाली और मन को सुप्रसन्न करनेवाली दवा है। **अनुपान**–नागवेल पत्र, अद्रक रस, द्रोणपुष्प रस।

९८ सुवर्णसूतशेखर–(र. यो. सा. ५०६)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, सुवर्ण, टकण, सोठ, धत्तुरबीज, ताम्रभस्म, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर, शखभस्म, बिल्वफल का मगज, कचोरा आदि। **मात्रा**–१ रत्ती। **गुणधर्म**–चक्कर, आम्लपित्त, शिरपीडा, दाह, वमन, शूल, गुल्म, श्वास, कास, अतिसार, सग्रहणी, मदाग्नि, हिक्का, उदावर्त, मडलकुष्ठ, शीतपित्त, सूतिकाज्वर, सन्निपातज्वर, आत्रसन्निपात, क्षय मे तथा वातपित्तात्मक विकारो मे शीघ्र लाभदायक कार्य करती है। यह उत्तम हृद्य तथा सग्राह्य है। **अनुपान**–दूधमिश्री, अदरकरस, शहद , आँवले का मुरब्बा।

९९ सूतशेखर–(सुवर्ण विरहित)–(र. यो. सा.)

मुख्य द्रव्य–सुवर्ण सूतशेखर अनुसार औषधियाँ, सुवर्णभस्म, व्यतिरिक्त। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–अनुपान उपरोक्तानुसार किंतु गुणो मे अल्प।

१०० सूतिकाभरण–(र. यो. सा.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, सुवर्णभस्म, रजतभस्म, ताम्र, प्रवाल, अभ्रक, हरिताल, मैनसील, त्रिकटु कुटकी आदि। **मात्रा**– -।। मे १ रत्ती। **गुणधर्म**– सूतिका के सब विकारो मे विशेपत दती बध जाना, गुल्म, ज्वर, श्वास, धनुर्वात में लाभदायक है। यह अति तीव्र है। इसने सूतिका की जरा शीघ्र गिर जाती हे। **सूचना** –वात कफ विकारो मे उपयोग करे। पित्त विकार मे इसका उपयोग नही करना चाहिये।

१०१ स्मृतिसागर–(र. यो. सा. ५७९)

मुख्य पथ्य–पारा, गधक, हरिताल, मैनसील, ताम्रभस्म आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–स्मृतिभ्रश, उन्माद और अपस्मार इन पर अत्युत्तम है। सज्ञानाश, भ्रम, दन्त चिपक जाना आदि लक्षण किसी ज्वर मे हो उस वक्त इसका उपयोग करे। पक्षाघात पर भी यह उपयुक्त है। **अनुपान**–अदरकरस और शहद, ब्राह्मीरस।+शहद, कूष्माडजल।

१०२ बृहत् सुवर्ण मालिनो वसंत–(वृ वै)

मुख्य द्रव्य–सुवर्णभस्म, प्रवाल, हिंगुल, काली मिर्च, कस्तूरी, गौरोचन, नागभस्म, अभ्रकभस्म, वगभस्म, केशर, मौक्तिकभस्म, पिप्पली, कलखर्पर, मक्खन मे नि स्नेह होने तक मर्दन करे। इसमे केशर, कस्तूरी, गौरोचन, (गौ का पित्त) इनकी जसी, परम मगल और परम पवित्र, सुगध और कीमती औषधियाँ शेष वसन्त की अपेक्षा अधिक है। इसके व्यतिरिक्त सुवर्ण, मौक्तिक, हिंगुल, सफेद मिर्च आदि द्रव्य इसमे ही है। यह योग अत्यत श्रेष्ठ माना गया है। **मात्रा**– -।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–इसका कार्य विशेषत श्वसनेंद्रिय और मलमूत्रेंद्रिय इन पर होता है। इसके सेवन से इन इद्रियो मे शक्ति आती है। इनका कार्य सुव्यवस्थित और जोरदार चलता रहता है। शरीर की शक्ति बढती है, उत्साह पैदा होता है तथा सब शरीर शुद्ध, निर्मल, सुन्दर और पुष्ट बनता है। कान्ति बढती है। इसलिये इसे प्रति वर्ष एकबार लेना तो अत्यत आवश्यक है। यह लेने से रोग नष्ट होते है और तन्दुरुस्ती बढती है। रोग न हो तो शक्ति, उत्साह तेज बढकर शरीर रोगप्रतिकारक्षम बनता है। धीरज आता है। इसलिये बाल और वृद्ध इनको साल मे एकबार जरूर लेना चाहिये। यह लेने के लिय उत्तम ऋतु-हेमत, शिशिर, और वसत ये तीन ऋतु याने कार्तिक मास से

चैत्र मास तक के छ महीने है। यह रक्तप्रमेह, शुक्र धातु का विकार पाडुरोग, कामला, कामला मे होनेवाला शूल, प्रदर, शोमरोग, योनिशूल, सूतिका-रोग, जीर्णज्वर, क्षय की प्रथमावस्था, अतिसार, सग्रहणी, मलावरोध, अर्श वालको की आकडी (Couvulsions) इन पर उपयुक्त है। गर्भवती स्त्री को भी दे सकते है। इसके सेवन से गर्भवती स्त्री की पाचन क्रिया सुधरती है और शक्ति आती है। गर्भवती स्त्री पुष्ट वनती है। नपुसकत्वपर भी यह लाभदायक है। **अनुपान**–पथ्यापथ्य औषधि काल रोगानुसार निश्चित करे। साधारणतया (१) शहद और पिप्पली (२) अश्वगधाचूर्ण (३) दूध मिश्री (४) मक्खन मिश्री, इसका अनुपान दे। सुवह और शाम को दो वक्त लेना।

१०३ हेमगर्भ–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, सुवर्णभस्म, समीरपन्नग, आदि। **मात्रा**–१ रत्ती। **गुणधर्म**–शक्तिपात, नाडी की गति निर्बल होना तथा रुकरुक कर चलना, शिथिलता अल्पज्वर, वडवडाना, वेहोशी, तद्रा, चक्कर, शरीर शीत होना, श्वास, कास, हिक्का, सूतिका के विकार मे लाभदायक है तथा हृदय को शक्ति प्रदान कर रुधिराभिसरण मे भी सुधार करता है। शक्तिवर्धक कार्य उत्तम करता है। सूतिका समय वेग से लाने के लिये उत्तम है। ज्वराधिक्य मे इसका उपयोग न करे। इसको देने के पश्चात अन्य औषधियाँ अपना कार्य नही कर पाती है। इस-लिये विचारपूर्वक ही इसका उपयोग करना चाहिये। **अनुपान**–अदरकरस, तुलसीपत्ररस, भृगराजरस और शहद।

१०४ हेमाभ्रक रससिदूर–(यो. र.)

मुख्य द्रव्य–सुवर्णभस्म, अभ्रकभस्म, रससिदूर, आदि। **मात्रा**–१ रत्ती। **गुणधर्म**–क्षय मे उत्तम शक्तिवर्धक कार्य करता है। रस का ४२ दिन सेवन किया जाय तो क्षय, पाडु, कुष्ठ, जतुजन्यक्षय आदि मे उत्तम लाभदायक कार्य करता है। क्षय मे इसका उपयोग चाटने के रूप मे करना चाहिये। **अनुपान**–शहद, अदरकरस, दूधमिश्री।

सिंदूरकल्प और कूपिस्थ रसायन

१ अष्टमूर्ति–(वै. सा. सं)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, हिंगूल, मैनमील, मोमल, हरिताल, मूर्दाडसिंग, सौराष्ट्र, सुवर्ण, रजत, रसकर्पूर, सिंदूर विधि आदि। **मात्रा–** -।- रत्ती। **गुणधर्म–** सब प्रकार के वातरोग, ग्वास खॉमी, कफमचय, कफ, भ्रम, आमवात, पक्षाघात तथा जीर्ण उपदग विकार मे जब हाड्डियो मे पीढा होती हो आदि मे लाभप्रद है। **अनुपान–**अदरक रम और गहद, धृत।

२ तालसिंदूर–(वै. सा. सं)

मुख्य द्रव्य–गधक, मैनसील, हरिताल, हिंगुल, सिंदूर विधी। **मात्रा–** -।- रत्ती। **गुणधर्म–**वारवार आनेवाला ज्वर, वातवाहिनियो की निर्बलता, कुष्ठ, गलित्कुष्ठ, विपमज्वर मे लाभदायक, जलोदर मे भी कार्य करता है। **सूचना–** गर्भवती स्त्री तथा वालको को इसका उपयोग नही करना चाहिये। **अनुपान–** अदरक रस और शहद।

३ त्रिपुरभैरव–(वै. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, हिंगुल, रसकर्पूर, **सौराष्ट्र**, नवसागर, सिंदूर विधी। **मात्रा–**१ से २ रत्ती। **गुणधर्म–**दमा, खॉसी, ज्वर, उपदश, कप, शूल, आमवात, ग्लानि, अर्धागवात और उपदंशजन्य सब विकारों मे लाभप्रद है। ज्वर मे भी यह कार्य करता है। स्वेद आता है तथा ज्वरोष्मा कम हो जाती है। **सूचना–**गर्भवती स्त्री और बालको को इसका उपयोग नही करना चाहिये।

४ दरदसिंदूर–(र. यो. सा. २९६)

मुख्य द्रव्य–पारा, रसकर्पूर, हिंगुल, गधक, सिंदूर विधि। **मात्रा–** -।- रत्ती से -।।- रत्ती। **गुणधर्म–**अनुपान भेद से यह सन्निपात ज्वर, वातरोग, उपदग मे लाभप्रद है। उपदग मे हड्डियो का गलना, व्रण हो जाना, उनके जोड मोटे पड जाना, खॉसी और पसलियो की पीडा मे विशेप लाभप्रद है। उसी प्रकार मासार्वद मे दाह, ज्वर, रक्तस्राव पीडा मे सूक्ष्म मात्रा मे इसका उपयोग करे। **अनुपान–** मजिष्ठा कपाय, मारिवासव, उशीरासव।

५ नागसिंदूर–(र. यो. सा. ३९६)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, नाग, नवसागर, सिंदूर विधि। **मात्रा**– -।- से -।। रत्ती। **गुणधर्म**–युक्तानुपानतो हन्यात, सर्वरोगान् रसोत्तम। फिर भी मधुमेह, प्रमेह, उपदश मे शक्तिदायक कार्य करता है। **अनुपान**–सारिवासव, जब्बासव, जामुनावलेह।

६ पंचसूत–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, हिंगुल, रससिंदूर, सौवीर, रसकर्पूर, सिंदूर विधी। **मात्रा**– -।।- रत्ती। **गुणधर्म**– दमा, खाँसी, तद्रा, बडबडाना, बेहोशी, गले मे कफ के कारण घरघराहट, छाती मे कफसचय, कमजोरी, बालग्रह, नाडी गति मद होना आदि विकारो मे लाभदायक है, फुफ्फुसावरणशोथ, (Wetpleurisy) दूषित सचित जल का रूपातर करना या गाढे कफसचय मे फुफ्फुसो मे रोध होने (कफस्त्रावी औषधि के साथ उपयोग करने से) पर कफ निकालने का यह सफल कार्य करता है। किन्तु इतना समय न हो तो मल्लसिंदूर का उपयोग करना चाहिये। मल्लसिंदूर से जल और कफ सशोषण शीघ्र होता है। **अनुपान**–मुलेठी बेहेडा, अडूसा क्वाथ+मिश्री। **अन्य अनुपान**–शहद, अदरक रस, तुलसी रस।

७ बृहत् पूर्णचंद्रोदय–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, सुवर्ण, सिंदूर विधी। **मात्रा**– -।।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–यह हृद्य, विषघ्न, रक्तप्रसादक, जतुघ्न, सेद्रिय, विषनाशक बल्य, वाजीकर, रसायन, योगवाही है और क्षयादिक समान बलमासहीनकारक व्याधिकर दोष नष्ट करके धातुसाम्य प्रस्थापक है। इसके सेवन से नपुसकत्व नष्ट होकर इद्रिय शैथिल्य नष्ट होता है। वैसे ही मनोदौर्बल्य नष्ट होकर मन प्रसन्न होता है। **अनुपान**–मसाले का दूध, मक्खन खडशर्करा।

८ मकरध्वज–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, सुवर्ण। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–पान के साथ इसका उपयोग करना चाहिये। प्रात–सायकाल, रात को तीन वार पान मे रखकर इसका सेवन करना चाहिये तथा सात दिन तक व्रतस्थ रहना चाहिये। इससे नष्ट हुआ पुरुषत्व फिर प्राप्त होता है, जिसका पुरुषत्व कायम है उसका द्विगुणित होता है, सूक्ष्म मात्रा मे लेते रहने से दमा, खाँसी, बालो का पकना आदि विकार नष्ट होते है। शुक्रधातु की वृद्धि होती है। शरीर की

योग्य वृद्धि होती है। अत स्रावक पिंड का सम्यकस्राव होने से शरीर वृद्धि रुक जाने से ठिगनापन आदि विकार नष्ट होते हैं। इसके सेवनकाल में मधुरान्न, मिष्टान्न, मसालेदार उबाला दूध का अवश्य सेवन करना चाहिये, जिससे यह दवा गर्मी नही बढाती है। रतिकाल के पूर्व और पश्चात् सेवन करने से शक्ति क्षीण नही होती है।

९ मल्लसिंदूर–(र. यो. सा. ५३८)

मुख्य द्रव्य–पारा, रसकर्पूर, सोमल, गधक, सिंदुरविधि। **मात्रा**– -।- से -।। रत्ती। **गुणधर्म**–यह अतितीव्र है। बालक तथा कोमल प्रकृतिवालों को इसका उपयोग नही करना चाहिये। खाँसी, दमा, तंद्रा, आमवात, बालग्रह मे शीघ्र लाभ करता है। कफसचय हो और फुफ्फुस निर्बल हो जिससे थूकने तक में कष्ट हो रहा हो इस अवस्था मे ज्वरवेग अल्प हो तो इसका उपयोग करना चाहिये। बार बार इसे नही देना चाहिये। **सूचना**–गर्भवती, बालको को इसका सेवन नही करना चाहिये। **अनुपान**–अदरक रस, शहद, मिश्री, अडूसापत्र रस और शहद।

१० माणिक्यरस–(र. यो. सा. ५६५)

मुख्य द्रव्य–पारा, नाग,, मैनसील, गधक, हरिताल, सिंदूर विधी। **मात्रा**–१ से १।। रत्ती। **गुणधर्म**–गलितकुष्ठ, वातरक्त, भगदर, नाडीव्रण, उपदश, प्रमेह, क्षय, अकालवार्धक्य, महाकुष्ठ, त्वचारोग मे लाभप्रद है। अनुपान भेद से मधुमेह मे भी लाभप्रद कार्य करता है। **अनुपान**–दूध+मिश्री।

११ रससिंदूर–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, नवसागर, सिदूर विधी। **मात्रा**– -।।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–खाँसी, कफरोग, धातुक्षय, ज्वर, कफक्षय मे लाभदायक हैं। दुर्गंधित कफ की शुद्धिकर क्षय की प्रथमावस्था मे कफस्थान शोधक कार्य करता है। ज्वर मे शक्ति को स्थिर रखनेका कार्य करता है। यह स्रोतोरोधनाशक और बल्य होने से मूर्च्छा और उदररोग मे उत्तम कार्य करता है, मूर्च्छा के लिये आवले के मुरब्बे के साथ, उदर मे उदर रोगो पर लाभप्रद औषधियो के साथ देना चाहिये। यह सौम्य त्रिदोपनाशक होने से सिरोरोग मे उत्तर कार्य करता है। रससिंदूर १ रत्ती। पीपलीचूर्ण २ रत्ती, मिश्रण दूधमिश्री के साथ लेने से उत्तम वृष्य करता है। शिरोरोग मे इसका उपयोग आवले के मुरब्बे मे रात को करना चाहिये। शहद या दूध के साथ भी लिया जा सकता है। **अनुपान**–मुलेठी, बहेडा, अडूसा और मिश्री, शहद।

१२ रसमाणिक्य –(र. यो. सा.)

मुख्य द्रव्य–हरितालपत्री, अभ्रकपत्री, इनको अग्निपुट दे। **मात्रा**– -।।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–इसके सेवन से गलितकुष्ठ, वातरक्त, भगदर, नाडीव्रण, उपदश, विषूचिका, नासतोफ, मुखरोग, पुडरीक कुष्ठ, चर्मकुष्ठ, बिस्फोटक आदि विकार नष्ट होते है। **अनुपान**–शहद।

१३ सर्वव्याधिहरण–(वै. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य–पारा, रसकर्पूर, गधक, सिंदूर विधी। **मात्रा**– -।- से -।।- रत्ती। **गुणधर्म**–नवीन उपदश विकार मे उत्तम कार्य करता है। शरीर मुख मे चट्टे पड जाना, इद्रिय सड़ना, पेशाब मे जलन, उपदश के पश्चात् सधिवात आदि मे लाभदायक है। **अनुपान**–पान, घृत, शहद।

१४ समीरपन्नग–(र. यो. सा.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, हरिताल, सोमल, मैन ेल, सिदूर विधी। **मात्रा**– -।- से -।।- रत्ती। **गुणधर्म**–हेमगर्भ के समान कार्य करता है। किंतु यहाँ कफसचय अधिक हो, कफ गाढा हो, फुफ्फुस निर्बल हो, नाडी मद हो, हाथ पैर ठडे हो, भ्रम, बेहोशी आदि लक्षण हो तथा सन्निपात, उन्माद, सधिवात और कफरोगो मे लाभप्रद है। **अनुपान**–मिश्री, मुलेठी, बहेडा अडूसा क्वाथ, पान के रस मे लाभ-प्रद है।

१५ सुवर्णभूपति–(र. यो. सा. ४३५)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, ताम्र, लोह, कातलोह, सुबर्ण, रजत, बछनाग, सिंदूर विधी। **मात्रा**– -।- से -।। रत्ती। गुणधर्म–क्षय, कास श्वास, सव प्रकार के वातरोग, अतिसार, सग्रहणी, गुल्म, पाडू, कामला, भगदर, व्रण, नाडीव्रण, उदावर्त मे लाभदायक है। "सर्व रोगविनाशाय सर्वेषामम् स्वर्णभूपति"। क्षय की दूसरी अवस्था मे भी उत्तम कार्य करता है। **गुणधर्म**–रोगानुसार क्षय मे मुलैठी कल्प, पिप्पल, अदरक रस।

१६ सुवर्णराजवंगेश्वर–(र. यो. सा. ३४०)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, वग, नवसागर, सोरा, सिंदूर विधी। **मात्रा**– -।।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–प्रमेह, स्वप्नावस्था, नपुसकत्व, सधिवात, परमा, उपदश, निर्बलता, धातुक्षीणता मे लाभदायक है। जीर्ण उपदश और उससे होने-

वाले विकार मूत्र मे जलन तथा पूयप्रमेह मे उत्तम कार्य करता है। **अनुपान**–शहद, धृत, मख्खन मिश्री, त्रिफला चूर्ण।

१७ सुवर्णसिंदूर–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, सुवर्ण, सिंदूर विधी– **मात्रा**–-।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–आत्रसन्निपात, फुफ्फुससन्निपात, फुफ्फुसावरण सन्निपात, जनुजन्य क्षय, हृदयक्षीणता, क्षय की दूसरी अवस्था मे लाभप्रद है, वातवाहिनियो को शक्ति-दायक तथा उत्तेजक कार्य करता है। नेत्रो पर का आवरण इसके सेवन से दूर होता है, इससे दृष्टि उत्तम हो जाती है। **अनपान**–दूध, मुलेठी, पुनर्नवा, अडुसा रस।

१८ षड्गुणवलिजारित रससिंदूर–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–रससिंदूर, गधक आदि छ वक्त सिंदूर विधी करे। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–रससिंदूर के समान ही वीर्यवर्धक और शक्तिवर्धक है। वल्य और शुक्रवर्धक भलीभाँति करता है। **अनपान**–शहद, अदरक रस।

पर्पटी कल्प

१ ताम्रपर्पटी–(र . यो. सा. १४)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, ताम्रभस्म, पर्पटी विधी से तैयार करे। **मात्रा**–१ रत्ती तक। **गुणधर्म**–प्लीहावृद्धि, मूत्रपिड, शोथ, तथा इससे अतिसार होना, पित्त विसर्जन क्रिया अव्यवस्थित हो जाने, अतिसार होना, कामला, पाडू, उदर और शोथ मे लाभप्रद है। **अनुपान**–क्षय—शहद पिपली, सन्निपात–अदरक रस, पाडू—त्रिफला, वातपित्तप्रकोप—कुमारीरस, चकावर—वावचीक्वाथ, प्रमेह—त्रिफलाचूर्ण, शहद । अठ्ठारह प्रकार के कुष्ठ—खदिरक्वाथ । **साधारण अनुपान**–तक्र। **पथ्य**–तक्र, गर्भवती स्त्रियो और वालको को नही देना चाहिये।

२ पंचामृत पर्पटी–(र. यो. सा. ४३)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, पर्पटी विधी से तैयार करे। मात्रा–१ रत्ती। **गुणधर्म**–पचनेंद्रिय, शक्तिदायक, अत्रदोषनाशक, कृमिनाशक, विशेषत जीर्णातिसार और क्षयजन्य विपानुवध हो तब जीर्ण सग्रहणी। विशेषत आमता हो, वहण हो इस अवस्था मे इसका उपयोग करना चाहिये। अरुचि, अर्श क्षय, पाडू, वमन, रक्तपित्त, उपदश, आमवात, भयकर शीर्पशूल मे लाभदायक है। इसका प्रमाण धीरे धीरे बढाकर उसी क्रम से कम करना चाहिये। **अनुपान**–तक्र, दूध और केवल तक्र।

३ बोलपर्पटी–(र. यो. सा. ३८३)

मुख्य द्रव्य–बोलवद्ध देखो, पारा, गधक, कृष्णबोल, पर्पटी विधी से तैयार करे। **गुणधर्म**–रक्तातिसार, सग्रहणी, रक्तपित्त, रक्तप्रदर आदि विकारो मे वोलवद्ध से वोलपर्पटी उत्तम कार्य करती है। कल्प गुणधर्म बोलवद्ध के अनुसार है। **अनुपान**–शहद, मिश्री, गुलकद, अशोकारिष्ट।

४ रसपर्पटी–(यो. र.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, पर्पटी विधी। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–अपचन और इसी से अतिसार। उपदशजन्य अतिसार, आत्रशोथज्वर का अतिसार,

जतुजन्य अतिसार, बालको के खडिया जैसे दस्त, जीर्ण सग्रहणी आदि विकार इसके सेवन से ठीक होते है। अनुपान–जीरा -मिश्री, जीरा-हिंग।

५ लोहपर्पटी–(र. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, लोहभस्म, पर्पटी विधी। मात्रा–१ से २ रत्ती। एक रत्ती से आरभ करके प्रत्येक सप्ताह मे एक दो रत्ती बढाकर लेना चाहिये। इस प्रकार रोग मुक्त होने तक इसका सेवन करे। प्रसूतिज्वर, अतिसार, सग्रहणी, आमवात, पाडू, कामला, प्लीहा, अग्निमाद्य, आमवात, उदावर्त, नाना प्रकार के विष बली फलित मे लाभदायक है। तथा रक्तकणो की वृद्धि शीघ्र करता है। **पथ्य**–रक्तशाली। **अपथ्य**–विदाही शाक, इमली, आमवात प्रकोपक। **पदार्थ**–अनुपान–शीतलजल, धनियाँ, जीरा- क्वाथ।

६ सुवर्णपर्पटी–(र. सा. सं.)

मुख्य प्रव्य–पारा, गधक, सुवर्णभस्म। मात्रा–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–क्षयज अतिसार, सग्रहणी, जीर्णज्वर, पाडुरोग, स्प्रू (अनुलोमक्षय) आदि में **लाभदायक** है, सुवर्णपर्पटी अतिसार मे दस्तकीमलराशि अधिक होती है। दस्तो की सख्या अधिक न होकर मलराशि अधिक होती है। यही इसका विशेष लक्षण है। **अनुपान**–शहद। **पथ्य**–दूध, चावल।

गुटिका और वाटिका

१ अमृतवटी–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–काली मिर्च, अहिफेन, कपर्दिक भस्म, नीवू रस आदि। मात्रा– -।।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–किसी भी प्रकार के अतिसार मे लाभदायक यह गुटी अधिक प्रमाण मे स्तभक और अल्प प्रमाण मे पाचक है। आमातिसार म इसका उपयोग न करे। **विशेष अवस्था**–पक्वातिसार मे अतिसरण (शौच होना) शूल मे स्तभक और शूलघ्न कार्य करती है। मलावरोध मे भी इसका उपयोग न करे। **अनुपान**–अदरक रस, नीबू रस, तक्र, गरम जल।

२ अभयादिमोदक–(शा. उ. अ. ४)

मुख्य द्रव्य–हरडा, त्रिकटु, विडग, आमलकी, पिप्पलमूल, दालचीनी, तमालपत्र, मुस्ता, दतीमूल, निशोत्तर, मिश्री आदि। **गुणधर्म**–यह मोदक पाचक,

दीपक और रेचक है । विषमज्वर, मदाग्नि, पांडू, खाँसी, भगदर, अर्श, कुष्ठ, गुल्म, गलगंड, भ्रम, उदर, पीठ मे पीडा, जघा और उदर मे शूल, पार्श्वशूल, कमर की पीडा मे लाभप्रद है । मलवृद्धि या सतर्पणोत्थ दोषवृद्धि के कारण उपरोक्त विकार होने पर इसका उपयोग अवश्य करना चाहिये । इसके सेवन से शारीरिक मल और दोष नष्ट होकर पाचनक्रिया व्यवस्थित होकर रसोत्पत्ति और रस-निर्मिति भलीभाँति होने लगती है । शोधनीय रसायनो मे यह श्रेष्ठ है । **अनुपान**–उष्ण जल ।

३ अम्लपित्तहारीगुटी–(प्र. र.)

मुख्य द्रव्य–त्रिकटु, त्रिफला, मुस्ता, बीडलवण, इलायची, विडग, तमालपत्र, लोग, निशोत्तर, मिश्री आदि । मात्रा–४ से ८ गोलियाँ । **गुणधर्म**–वमन, आम्लपित्त , खट्टी डकारे आना, छाती मे जलन, उदरस्थ वायु, अन्न का शीघ्र पाचन न होना आदि विकारो मे शीघ्र कार्य करता है । **अनुपान**–उष्ण जल ।

४ एलियकादिगुटी–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–कृष्णबोल, देवदार, गुडूची सत्व, अशोकछाल, पुनर्नवा, दारुहरिद्रा आदि । मात्रा–२ से ४ रत्ती । **गुणधर्म**–गर्भाशय, शूल, अनियमित, ऋतुस्राव, मासिक धर्म के समय शूल, स्राव अल्प होना आदि मे यह उत्तम कार्य करती है । **अनुपान**– उष्णजल, अशोक कल्प ।

५ कफकुठार–(र. यो. सा.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, त्रिकटु, लोहभस्म, ताम्रभस्म, रिंगणी, फलरस, हरडा, धत्तूरपत्र रस आदि । मात्रा–१ से २ रत्ती । **गुणधर्म**–इसका उपयोग उर स्थान मे कफ होने पर अच्छा होता है । त्रस्त कास हो तो शाम के समय पर इसका उपयोग करे । **अनुपान**–नागवेलपत्र रस ।

६ कांकायनगुटी–(शाड.गधर)

मुख्य द्रव्य–अजवायन, जीरा, धनियाँ, गोकर्ण, विडग, अजमोद, कन्नोजी जीरा, काली मिर्चं, सोठ, हिंग, हरड, दतीमूल, निशोत्तर, सज्जी, यवक्षार, सेधानमक, सौवर्चल, बीडलवण, समुद्रनमक, कचोरा, चित्रक, पुष्करमूल,आम्लवेतस, दाडिमछाल, महालुग, आदि । मात्रा–१ से २ रत्ती । **गुणधर्म**–अर्श, हृद्रोग, कृमि, गुल्म, ग्रहणी, शूलनाशक, कफजगुल्म मे–गोमूत्र मे पित्तगुल्म मे दूध मे,

वातजगुल्म मे–कुमारीआसव के साथ, सन्निपातजगुल्म मे–दशमूलारिष्ट के साथ और रक्तजगुल्म मे–उटनी के दूध के साथ देना चाहिये। **अनुपान**–शहद।

७ खदिरादिगुटी–(यो. र.)

मुख्य द्रव्य–खदिर छाल, हरडा, बहेडा, कायफल, कत्था, पुष्करमूल, कर्कटशृंगी, अतिस, गुडूची, रिगणी, डोरली, धमासा, लोग, सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, भारगमूल, आदि। **मात्रा**–१ से ४ रत्ती। **गुणधर्म**–जीर्णश्वास खासी के विकार, मुखदुर्गंधि, मुँह मे छाले, मुखप्रसेक, मसूडो मे शोथ, दाँतो मे कीड़ा लगना, दाँतो से रक्तस्राव, जीभ का भारीपन, आवाज बैठना आदि मे लाभदायक है। **अनुपान**–मिश्री के साथ गोली मुँह मे रखकर चूसना चाहिये।

८ चंद्रप्रभागुटी–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–कचोरा, वचा, मुक्ता, धनियाँ, तमालपत्र, इलायची, दालचीनी किराततिक्त, गुडूची, दारुहरिद्रा, देवदारु, हरिद्रा, अतीस, पिप्पलीमूल, चित्रक, चवक, विडग, गजपिप्पली, सोठ, शर्करा, वशलोचन, गुग्गुल, शिलाजतु, लोहभस्म, त्रिफला, निगोत्तर, दतीमूल, काली मिर्च, पिप्पली, यवक्षार, सज्जी, सेधानमक, सौवर्चल, कर्पूर आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–जागरण, मानसिक कष्ट, उष्णता, स्वप्नावस्था, धातुक्षीणता, प्रदर, रक्तप्रदर, गर्भाशय के विकार, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, प्रमेह, मूत्र से धातुस्राव, अपस्मार, अर्श, रक्तपात वृद्धि से चक्कर आना इन विकारो मे लाभदायक है। **अनुपान**–दूध मिश्री।

९ नागगुटी–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–अक्कलकारा, पिप्पलमूल, बछनाग, हिंगुल, केशर, जायफल, जायपत्री, टकण, लोग, दालचीनी आदि। मात्रा– -।- से -।।- रत्ती। गुणधर्म–जुखाम, खासी, ज्वर, कास, श्वास, अगपीडा, खसरा मे लाभप्रद है। छोटे वालको को विशेष लाभप्रद है, किन्तु मात्रा सूक्ष्म देना चाहिये नही तो पेशाव पीली होने लगती है। **अनुपान**–पान, शहद, कफाधिक्य मे ही इसका उपयोग करे।

१० पुनर्नवामंडूर–(च. सं चि. २६)

मुख्य द्रव्य–पुनर्नवा, त्रिवृत्त, त्रिकटु, विडग, दारुहरिद्रा, चित्रक, कोष्ठ, त्रिफला, हरिद्रा, दतीमूल, इद्रजव, चवक, कुटकी, पिप्पलीमूल, मुस्ता, गौमूत्र

आदि। **मात्रा**–२ से ६ रत्ती। **गुणधर्म**–पाडुरोग और उससे प्लीहावृद्धि शोथ, ग्रहणी, सग्रहणी, अर्श, ज्वरयुक्त हो तो उपयोग करे। उसी तरह कृमि और त्वगविकार पर करे। **अनुपान**–तक्र।

११ मकरध्वजगुटी–(भै. र.)

मुख्य मुख्य–मकरध्वज, कर्पूर, जायफल, काली मिर्च, कस्तूरी, आदि। **मात्रा**–१ गोली। **गुणधर्म**–यह वृष्य है। इसे सेवन करने से कामेच्छा खूब होती है। हतवल या निराश हुये रोगी फिर से आनद पाते हैं। यह गुटी पाडुरोग, जीर्ण वात, रोग, छर्दि, उन्माद, मतिभ्रम्श (पागल), उदर, मेह, नपुसकत्व, अरुचि, अग्निमाद्य, ग्रहणी, शरीरपर अकाली झुर्रियाँ पडना, बाल सफेद होना, कुभ कामला, कप, वात आदि विकारो पर उपयुक्त है। यह उसका नाश करती है। वल वढाती हैं, तन्दुरुस्ती वढती हैं और असाध्य रोगो को भी नष्ट करती हैं। तन्दुरुस्ती-के लिये और तृप्तिपर यह एक ही अच्छी दवा हैं। उचित अनुपान के साथ इसका उपयोग करे। **अनुपान**–मक्खन, खडशर्कर, घी और शहद।

१२ मंडूरवटक–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–माक्षिकभस्म, दारुहरिद्रा, चवक, पिप्पलमूल, देवदारु, सौठ, काली मिर्च, पिप्पली, चित्रक, विडग, त्रिफला, मुस्ता, मडूरभस्म आदि। **मात्रा**–४ से ८ रत्ती। **गुणधर्म**–इसका उपयोग पाडुरोग, कुष्ठ, अजीर्ण, शोथ, उरस्तभ, अरुचि, अर्श, कामला, प्रमेह, प्लीहावृद्धि इन पर अच्छा होता है। **अनुपान**–तक्र।

१३ मंदाग्निगुटी–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–पकाये हुए आवले, त्रिकटु, त्रिफला, धनियाँ, जीरा, सेधानमक, सौवर्चल, कालानमक ,हिग, आदि। **मात्रा**–२ से ६ गोलियाँ। **गुणधर्म**–मदाग्नि अन्न का पाचन न होना, वारवार शौच जाना या अपचन से शौचशुद्धि न होना, अरुचि, निरुत्साह, वेचैनी, निर्वलता आदि मे लाभप्रद है। **अनुपान**–उष्ण जल या तक्र।

१४ रसोनवटी–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–लहसुन, गधक, जीरा, सेधानमक, हिंग, सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, निंबूरस आदि। **मात्रा**–१ से २ गोलियाँ । **गुणधर्म**–विप्ठव्धाजीर्ण,

अजीर्ण मे दस्त होना, पेट का फूलना, खट्टी डकारे आना, कॉलरा मे मूत्रावरोध आदि मे लाभप्रद । **अनुपान**–उष्ण जल, नीबू का रस ।

१५ लवंगादिवटी–(यो. र.)

मुख्य द्रव्य–लोग, काली मिर्च, बहेडा, कत्था, बबूल की छाल आदि । **मात्रा**–१ से ३ रत्ती । **गुणधर्म**–खॉसी, सूखी खॉसी मे लाभदायक है । शेष गुण खदिरादिगुटी के समान है । **अनुपान**–मिश्री के साथ १ गोली मुह मे रखकर चूसना चाहिये ।

१६ लसूणवटी–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–इसमे सब औषधियाँ रसोनवटी अनुसार है । **गुणधर्म**–रसोनवटी के अनुसार । **मात्रा**–१ से २ गोलियाँ ।

१७ शक्रवटी–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–सागरगोटा, काली मिर्च, सेधा नमक, हिंग, निर्गुंडी आदि । **मात्रा**–३ से ६ रत्ती । **गुणधर्म**–विषमज्वर, मलेरिया, शूल, मस्तकशूल, प्लीहावृद्धि, नष्टार्तव, शैत्य मे उपयोगी है । इसमे काली मिर्च अधिक मात्रा मे होने से अधिक सेवन से पित्तवृद्धि होती है । मलेरिया मे जब जाडा लग रहा हो उस समय उष्ण जल के साथ इसका उपयोग करने से जाडा कम हो जाता है । यह करज का कल्प है । **अनुपान**–उष्णजल, तक्र, गोमूत्र ।

१८ शिरःशूलहारीवटी–(र. चं. ४५७ पा.)

मुख्य द्रव्य–भागबीज, धत्तूरबीज, रिंगणी, वरधारा, समुद्रशोफ, पारा गधक आदि । **मात्रा**–१ से २ रत्ती । **गुणधर्म**–पुराने शूल विकार, सन्निपातज्वर, आमवात, पाडुरोग, सग्रहणी, कामला, शूल, अर्श, अपच, आत्रवृद्धि इनपर उपयुक्त है । अनुपान–जल ।

१९ बृहत् सूरणवटक–(शाङ्गंधर)

मुख्य द्रव्य–जमीकद, वरधारा, मुसली, चित्रक, त्रिफला, त्रिकटु, लोग, सोठ भल्लातक, पिप्पलीमूल, तालीसपत्र, दालचीनी, एला, गूड आदि । **मात्रा**–

श्लीपद, शोथ, भगदर, अर्श, रक्तज अर्श, अग्निमाद्य, मलावरोध मे लाभप्रद है। यह वटक स्मृति बुद्धिदायक, दीपक और पाचक है। **अनुपान**–जल और तक्र।

२० संजीवनी गुटी–(शाडर्गधर)

मुख्य द्रव्य–विडग, भल्लातक, सोठ, पिप्पली, बालहरीतकी, बहेडा आमलकी, गुडूचि, वचा, वछनाग, आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–यह भिलावे का कल्प है। कृमि विपूचिका, वमन, सग्रहणी, अतिसार, पेट का फूलना, अपचन, कास श्वास मे लाभदायक है। **अनुपान**–नीबू का रस, शर्करा, सैंधव मे तक्र मिलाकर अदरक रस, शहद।

गुग्गुल

१ कांचनार गुग्गल–(भा. भै. र. ७७२)

मुख्य द्रव्य–काचन, छाल, त्रिकटु, त्रिजात, बायवर्णा, शुद्ध गुग्गुल आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–गडमाला, अपचि, अर्बुद, ग्रथि, व्रण, गुल्म, कुष्ठ, भगदरनाशक। **अनुपान**–पथ्य, कापाय, उष्ण जल।

२ कैशोर गुग्गुल–(शाडर्गधर)

मुख्य द्रव्य–त्रिफला, त्रिकटु, गुडूचि, शुद्ध गुग्गुल, विडग, दती, निगोत्तर आदि। मात्रा–२ से ४ रत्ती। **गुणधर्म**–कुष्ठ, रक्तविकार, वातरक्त, गुल्म ,व्रण, प्रमेह, प्रमेहपीटिका, उदर, मदाग्नि, कास, शोथ, पाडु रोग मे लाभप्रद है। **अनुपान**–घृत, शहद।

३ त्रयोदशांग गुग्गुल–(यो. र.)

मुख्य द्रव्य–असगध, बबूल, मिसी, गुडुचि, शतावर, रास्ना, कचोरा, वर्धारा अजवायन, सोठ, गुग्गुल आदि। **मात्रा**–५ से १२ रत्ती। **गुणधर्म**–गुध्रसी, कटीग्रह विश्वाची, तनुग्रह, जानुग्रह, पादग्रह, सधिगत वात, स्नायुगत वात, अस्थिगत वात, पार्श्व और शिरपीडा, मन्याग्रह, कठ और हृदयरोग, वातकफात्मक विकार मे लाभदायक है। **सेबन विधि**–घृत और शहद के साथ निगलना चाहिये।

ध्यान रहे कि सेवन करते समय दाँत का स्पर्श न होना चाहिये, पश्चात उष्ण जल, मूग का यूष या मास रस पीना चाहिये। पश्चात एक लोग मुह मे दबाना।

४ गोक्षुरादि गुग्गुल–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–गोक्षुर, शुद्ध, गुग्गुल, त्रिकटु, त्रिफला, मुस्ता आदि। **मात्रा**–२ से ३ रत्ती। **गुणधर्म**–जीर्ण उपदश, प्रमेह, प्रदर, वातरक्त, वातरोग, अश्मरी, शुक्रदोप, जीर्णसूजाक, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, मूत्र मार्ग से धातु और स्वर (दाने से) गिरना, गडमाला, सधिवात मे लाभदायक है। जीर्ण व्याधियो मे यह लाभदायक कार्य करता है। **अनुपान**–घृत शहद।

५ महायोगराज गुग्गुल–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–सोठ, पिप्पली, पिप्पलीमूल, चवक, चित्रक, गजपिप्पली हिग, अजवायन, जीरा, सीरस, शहाजीरा, विडग, कुटकी, अतीस, भारगमूल, वचा, मूर्वा, पाठा, रेणुकवीज, इद्रजव, शुद्ध गुग्गुल, त्रिफला, रससिंदूर, नाग-भस्म, वगभस्म, रोप्यभस्म, कातलोहभस्म, मडूरभस्म, अभ्रकभस्म, आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–तीनो दोपो को शामक, कुष्ठ, वातरोग, ग्रहणी, प्रमेह, वातरक्त, नाभिशूल, अरुचि, क्षय, गुल्म, अपस्मार, उरोग्रह, भगदर, उदावर्त, मदाग्नि, श्वास, कास, शुक्र, अर्तवदोप, अर्धागवात, आमवात, धनुर्वात, अर्दित, गृध्रसी, आर्तवशूल, भग्न, गुल्म, प्रदर आदि वात विकारो मे अति लाभप्रद हैं। चूहे और कुत्ते के विप पर भी यह उत्तम कार्य करता है। स्रोतावरोध दूर करके आमवात से होनेवाले विकारो मे विशेष लाभदायक हैं। **अनुपान**–घृत, शहद, रास्नादिकाषाय।

६ योगराज गुग्गुल–

मुख्य द्रव्य–पिप्पली, पिप्पलीमूल, चवक, चित्रक, सोठ, गजपिप्पली, काली मिर्च, हिंग, सीरस, ओवा, जीरा, शहाजीरा, विडग, वचा, भारगमूल, पाठा, इद्रजव, अतीस, रेणुकवीज, मूर्वा, त्रिफला, शुद्ध गुग्गुल आदि। **मात्रा**–१ से ४ रत्ती। **अनुपान**–और गुण –महायोगराज के समान किन्तु अल्प गुणकारी।

७ सिहनाद गुग्गुल–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–शुद्ध गुग्गुल, त्रिफला, त्रिकटु, मुस्ता, देवदारु, विडग, गुडूचि, चित्रक, निशोत्तर, मिसी, वचा, जमीकद, अमरकद, कज्जली, धत्तुरवीज, शीरस,

तैल आदि। **मात्रा**–४ से ६ रत्ती। **गुणधर्म**–अग्निदीपक, धातुवृद्धिकर, आमवात, शिरोरोग, सधिवात, अश्मरी, शोथ, क्रोष्ट्रक जीर्ण मे लाभप्रद है। आमवात पर विशेष लाभदायक है। **अनुपान**–गरम जल, महारास्नादिकाषाय।

सत्व और क्षार

१ गुडुची सत्व–(वृ. वै.)

मात्रा–४ से ८ रत्ती। **गुणधर्म**–जीर्णज्वर, उर्ध्वगत रक्तपित्त, रक्तस्राव, शारीरिक उष्णता, मूत्रदाह, अतर्दाह, स्त्रीविकार मे लाभदायक तथा शक्तिवर्धक है। **अनुपान**–मिश्रीदूध, घृत–शर्करा, गुलकद, आवले का मुरब्बा।

२ आघाडाक्षार–(अपा मार्ग)–(वृ. वै.)

मात्रा–२ से ३ रत्ती। **गुणधर्म**–उदरशूल, गुल्म, उदर, यकृतवृद्धि-प्लीहावृद्धि मे लाभदायक है। **अनुपान**–पान। **सूचना**–गर्भवती स्त्री और बालको को नही देना चाहिये।

३ अडुलसाक्षार–(वृ. वै.)

मात्रा–१ से ३ रत्ती। **गुणधर्म**–रक्तपित्त मे पिच्छिल, गठीला, रक्तस्राव, रक्तार्श आदि मे शहद और घृत के साथ चाटना चाहिये। **अनुपान**–जल।

४ कल्याणकक्षार–(अष्टांगहृदय)

मुख्य द्रव्य–त्रिकटु, त्रिफला, भल्लातक, दतीमूल, बीडलवण, सेधानमक आदि। **मात्रा**–१ से ४ रत्ती। **गुणधर्म**–उदावर्त, विबध, गुल्म, अर्श, पाडू, उदर, कृमि, मूत्रमग, अश्मरी, शोथ, हृद्रोग, ग्रहणी, मेह, कठघशूल, आनाह, श्वास, कास मे हितावह है। **अनुपान**–उष्णजल, घृत और उष्णजल।

५ भल्लातकक्षार–(यो. र.)

मुख्य द्रव्य–भल्लातक, त्रिकटु, त्रिफला, सेधानमक, सौवर्चल आदि। **मात्रा**–१ से ४ रत्ती। **गुणधर्म**–अग्निदीपक तथा हृद्रोग, पाडू, गुल्म, उदावर्त और

शूल मे लाभप्रद है। **अनुपान**—घृत और उष्णजल, इसका सेवन घृत मे **करके** ऊपर से उष्णजल पीना चाहिये या भोजन के कुछ भाग मे मिलाकर सेवन करे। गर्भवती और बालको को नही देना चाहिये।

६ वज्रक्षार—(यो. र.)

मुख्य द्रव्य—सेधानमक, सौवर्चल, बीडलवण, बागडक्षार, सज्जी, टकण, साबरनमक, त्रिफला, त्रिकटु, हरिद्रा, चित्रक, जीरा आदि। **मात्रा**—१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**—अग्निमाद्य, शोथ, यकृत, प्लीहा, गुल्म, उदर, आनाह मे लाभप्रद गर्भवती और बालको को नही देना चाहिये। अजीर्ण मे नीबू और शर्करा के साथ लेना चाहिये। **अनुपान**—गोमूत्र और उष्णजल।

७ वज्रक्षार—(ताम्रयुक्त)—(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य—वज्राक्षारमूलम्, ताम्रभस्म, त्रिफला, त्रिकटु, हरिद्रा, चित्रक, जीरा, आदि। **मात्रा**— ।।- से १ रत्ती। इसका उपयोग विचारपूर्वक अत्यत सावधानी से करे। **अनुपान**—तक्र और उष्णजल। **सूचना**—गर्भवती स्त्री और बालको को नही देना चाहिये।

लेप

पहले गरम पानी मे गोलियो को रगडना या चूर्ण हो तो पानी मे मिलाकर उसके बाद जहाँ लगाना है उस जगह को पहले साफ करके पोछकर सुखाना चाहिए। तब ऊपर से लेप लगाना अच्छा होता है। उस पर कपास या कपडा चिपकाना चाहिए। लेप जल्दी ही सूख जाता है। पहला लेप धोकर ही दूसरा लगाना उत्तम है।

१ दशांगलेप— (शार्ङ्गधर)

मुख्य द्रव्य—शिरस की छाल, यष्टिमधु तगरकाष्ठ, रक्तचदन, बडी इलायची, जटामासी, दारुहरिद्रा, हरिद्रा, कोष्ठ, उशीर आदि। **गुणधर्म**—शोथ, वेदना, लाली को शीघ्र कम करता है।

२ शोथहरलेप–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–लोभान, गुग्गुल, हल्दी, दारुहरिद्रा, चदन, आबेहलदी,
रक्तचदन, हरडा, पुनर्नवा, उशीर, पद्मकाष्ठ, लोध्र, गैरिक, रसाजन आदि।
गुणधर्म–सब प्रकार के शोथ नाशक है।

३ ग्रन्थीभेदन लेप–(अष्टांगहृदय)

मुख्य द्रव्य–दतीमूल, चित्रकमूल, गुड, भल्लातक, हिराकस, अर्कक्षीर,
स्नुहीक्षीर आदि। **गुणधर्म**–गडमाला, विद्रधी, विसर्प, रोग मे प्रसादन कार्य करता
है। प्लेग की गाठ पर भी लेप करने से लाभ करता है। नेत्रो को इसका स्पर्श
नही करना चाहिये। मृदु स्थानो पर तथा बालरोगो मे इसका उपयोग नही करना
चाहिये।

चूर्ण

चूर्णो के सम्बन्ध मे साधारण जानकारी – सामान्यत चूर्णो का प्रभाव
सौम्य होता है। साधारणत सुबह और सायकाल दो बार इनको ले सकते
है। यहाँ जो प्रमाण या दवा की जो मात्रा दी गयी है वह एक समय के लिए
है। जहाँ अनुपान का उल्लेख न हो वहाँ गरम पानी समझे।

१ अदिपत्तिक चूर्ण–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, हरडा, बहेडा, आमलकी, मुस्ता,
बीडलवण, विडग, इलायची, तमालपत्र, लोग, त्रिवृत्त आदि। **अनुपान**–उष्ण जल।
मात्रा–२ से ५ माशा। **गुणधर्म**–आम्लपित्त नाशक तथा मलमूत्र विबध को दूर
करके प्रमेह, अर्श मे भी लाभप्रद है। उत्तम अग्निदीपक भी है।

२ अश्वगंधादि चूर्ण–(शाङ्गंधर)

मुख्य द्रव्य–असगध, वरधारा आदि। **अनुपान**–दूध। मात्रा – -।।- से १
तोला। **गुणधर्म**–यह चूर्ण वृष्य है। दूध के साथ सेवन करना चाहिये। चार
महीने तक उपयोग करने से शरीर तेजस्वी होकर तारुण्य की प्राप्ति होती है।

३ अष्टांगलवण चूर्ण–(चं. सं.)

मुख्य द्रव्य–सौवर्चल, जीरा, इमली, आम्लवेतस, दालचीनी, खडशर्करा आदि। **मात्रा**–१ से २ माशा। **गुणधर्म**–दीपक–पाचक तथा रुचि वृद्धिकारक है। मदात्ययकी अरुचि को भी दूर करता है। **अनुपान**–उष्ण जल।

४ अग्निमुख चूर्ण–(यो. र.)

मख्य द्रव्य–हिंग, वचा, पिप्पली, सोंठ, अजवायन, हरडा, चित्रक आदि। **मात्रा**–१ से २ माशा। **गुणधर्म**–अग्निमाद्य, अपचन, क्षुधानाश, अरुचि मे लाभदायक तथा पाचनक्रिया को बढाकर अग्नि प्रदीप्त करता है। **अनुपान**–शहद। उष्ण जल, दही का पानी।

५ अजमोदादि चूर्ण–(शाङ्र्गधर)

मुख्य द्रव्य–अजमोदा, मोचरस, घातकी पुष्प, सोंठ आदि। **मात्रा**–१ से २ माशा। **गुणधर्म**–घोर अतिसार मे शीघ्र गुणकारी है। **अनुपान**–उष्णजल।

६ आमलक्यादि चूर्ण–(शाङ्र्गधर)

मुख्य द्रव्य–आमलकी, सेधानमक, चित्रक, पिप्पली, हरडा आदि। **मात्रा**–१ से ३ माशा। **गुणधर्म**–मद ज्वर, अरुचि, अग्निमाद्य और कफ का नाश करके पाचनक्रिया को सुव्यवस्थित करता है। **अनुपान**–उष्ण जल।

७ एलादि चूर्ण–(शाङ्र्गधर)

मुख्य द्रव्य–इलायची, गहल्ला, मुस्ता, बेर के बीज का मगज, पिप्पली, सफेद चदन, लोग, नागकेशर आदि। **मात्रा**–१ से २ माशा। **गुणधर्म**–कफवात-नाशक और छर्दिनाशक। **अनुपान**–लाई का जल, उष्ण जल।

८ कवलूपर चूर्ण–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–आमहरिद्रा, कडू वृन्दावन, कडा जीरा, सेधानमक आदि। **मात्रा**–१ से ३ माशा। **गुणधर्म**–अग्निदीपक होने से प्लीहा वृद्धिनाशक कार्य करता है। शीतज्वर के पश्चात प्लीहा वृद्धि मे आम कार्य करता है। **अनुपान**–एरंडपत्ररस १ तो और दूध १० तो.।

९ खर्जुरादि चूर्ण—(यो. र.)

मुख्य द्रव्य—खर्जुर, आवले का बीज, पिप्पली, शिलाजीत, इलायची, यष्टिमधु, पाषाणभेद, सफेद चदन, धनियाँ, शर्करा आदि । **मात्रा**—१ से २ माशा । **गुणधर्म**—दाहशामक, सर्वांगदाह, मूत्रदाह, गुद और वृषण दाह मूत्रशर्करा (रेव) मुत्राश्मरी, मूत्रकुच्छ मे, लाभदायक तथा बलवीर्यवर्धक है। **अनुपान**—मुलेठी का क्वाथ, चावल का धोवन, शर्करा ।

१० चोपचिन्यादि चूर्ण—(यो. र.)

मुख्य द्रव्य—चोपचीनी, शर्करा, पिप्पली, पिप्पलीमूल, अक्कलकारा, तालीमखाना, विडग, काली मिर्च, लोग, सोठ, दालचीनी आदि । **मात्रा**—१ से २ माशा । **गुणधर्म**—रक्तशोधक तथा उपदश और उपदश विकार मे लाभदायक हैं। वातरोग, कुष्ठ, प्रमेह, नपुसकत्व तथा मूत्र से धातु स्राव मे गुणकारी हैं । **अनुपान**—शीतल जल । **पथ्य**—रक्तशाली, मूग, तुवरदाल का पानी, गेहू, सैधव, सहजना, घृत और शहद ।

११ चित्रकादि चूर्ण—(शाङ्गंधर)

मुख्य द्रव्य—चित्रक, सोठ, हिंग, पिप्पलीमूल, पिप्पली, चवक, अजमोदा, काली मिर्च, सज्जा, यवक्षार, सेधानमक, सौवर्चल, सामुद्रनमक आदि । **मात्रा**—१ से २ रत्ती । **गुणधर्म**—गुल्म, सग्रहणी, आम अतिसार मे लाभदायक है । अग्निदीपक और रुचि उत्पादक है। रक्तार्श मे इसका उपयोग नही करना चाहिये गर्भवती स्त्री को नही देना चाहिये । **अनुपान**—तक्र और अनाररस ।

१२ चंदनादि चूर्ण—(यो. र.)

मुख्य द्रव्य—सफेद चदन, वाला, मुस्ता, आमलकी, अजवायन, नीलकमल, यष्टिमधु, मुनक्का, खर्जुरा, शर्करा, आदि । **मात्रा**—१ से ३ माशा । **गुणधर्म**—दाहशामक, रक्तपित्त, पित्तरोग, गुल्म, श्वास, शरीरदाह, शिरोदाह, कामला प्रमेह, पित्तज्वर मे लाभदायक है ।

१३ चौसष्टी पिप्पली—(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य—प्रमुख औषधि पिप्पली (६४ प्रहर मर्दन करे) । **मात्रा**—४ से ८ रत्ती । **गुणधर्म**—यह जीर्णज्वर, अग्निमाद्य, राजयक्ष्मा, श्वास, कास इन पर उपयुक्त है । **अनुपान**—शहद , दूध, खडशर्करा ।

१४ त्रिफला चूर्ण–(शाङ्गंधर)

मुख्य द्रव्य–हरडा, बहेडा, आमलकी। **मात्रा**–२ से ३ माशा। **गुणधर्म**–उत्तम मलशोधक तथा रेचक हैं। पाडुरोग, कामला, प्रमेह, भगदर मे लाभप्रद है। रात को सोते समय शहद-घृत के साथ सेवन करने से सब प्रकार के नेत्ररोग, कुष्ठ, विषमज्वर, शोथ, कफपित्त विकार, अभिष्य दन्दनाद्रिनेत्र विकार मे उत्तम कार्य करता है। **सूचना**–इसमे अर्ध भाग शर्करा मिलाकर उष्ण जल के साथ सेवन करने से पित्त वृद्धि न होकर शौचशुद्धि हो जाती है। उष्ण ऋतु के कष्ट नही होते। त्रिफला क्वाथ से व्रणो को धोने से व्रण शुद्धि होकर ठीक होते है। **अनुपान**–उष्ण जल।

१५ तालीसादि चूर्ण–(शाङ्गंधर)

मुख्य द्रव्य–पिप्पली, तालीसपत्र, काली मिर्च, सोठ, इलायची, दालचीनी, वशलोचन, शर्करा आदि। **मात्रा**–२ से ६ रत्ती। **गुणधर्म**–कास, श्वास, ज्वर, वमन, अतिसार, क्षय की प्रथमावस्था, प्लीहा, पाडुरोग, स्वरभेद, अशपार्श्वाभि, ताप, अरुचि मे गुणकारी है। **अनुपान**–घृत, शहद, तक्र, आसवारिष्ट दूध आदि।

१६ दाडिमाष्टक चूर्ण–(शाङ्गंधर)

मुख्य द्रव्य–दाडिमछाल, खड शर्करा, इलायची, दालचीनी, तमालपत्र, सोठ, काली मिर्च, पिप्पली आदि। **मात्रा**–३ से ६ माशा। **गुणधर्म**–मलसग्राही, खाँसी, ज्वर तथा पित्तभूयिष्ट विकारो मे लाभप्रद है। अग्निप्रदीप्त तथा कठ को आल्हाददायक है। **अनुपान**–उष्णजल।

१७ नवायस चूर्ण–(शाङ्गंधर)

मुख्य द्रव्य–सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, हरडा, बहेडा, आमलकी नागरमोथा, विडग, चित्रक, मडूरभस्म आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–पाडूरोग, कामला, अग्निमाद्य, कृमि, शोथ, कुष्ठ, उदर, आनाह, अर्श, जीर्णज्वर, मलावरोध मे लाभप्रद तथा बलदायक है। **अनुपान**–पित्ताधिक्य मे दूध, वाताधिक्य मे शहद और घृत, कफाधिक्य मे गोमूत्र के साथ लेना चाहिये।

१९ नारायण चूर्ण–(शाङ्गंधर)

मुख्य द्रव्य–त्रिफला, त्रिकटु, चित्रक, वचा, अजमोदा, जीरा, शहाजिरा, दारणी, सौंफा, पुष्करमूल, पचलवण, त्रिवृत्त, दतीमूल आदि। **मात्रा**–२ से ४ मा.

गुणधर्म–विरेचक है। गुल्म, आनाह, आध्मान, अजीर्ण, अर्श, अतिसार, अम्लपित्त, वात विकार मे मलावरोध विशेषत उदावर्त तथा वात, कफ दोनो में लाभदायक है। **अनुपान**–उष्णजल।

१९ पुष्यानुग चूर्ण–(भ. र.)

मुख्य द्रव्य–पाठा, रसाजन, मुस्ता, जम्बूलबीज, मजिष्ठा, कमल, नागकेशर बिल्व ,लोध्र, केशर, सोठ, काली मिर्च, कुटकी, अनतमूल, यष्टिमधु, अर्जुनछाल कुडा, अतीस, मोचरस, आदि। **मात्रा**–२ से ३ माशा। **गुणधर्म**–यह चूर्ण पुष्य नक्षत्रपर तैयार किया जाता है। इसलिये पुष्यानुग चूर्ण कहते है। स्त्रियो के प्रदर, अर्श, रक्तार्श, बालको के निजदोष, या आगातुक विकार, ग्रहबाधादि विकार मे लाभदायक कार्य करता है। **अनुपान**–शहद मे सेवन करे। ऊपर से चावल का धोना पीना चाहिये।

२० भास्कर लवण चूर्ण–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–सामुद्रनमक, सौवर्चल, बीड लवण, सेधानमक, धनियाँ, पिप्पली पिप्पलमूल, शहाजिरा, तमालपत्र, नागकेशर, तालीसपत्र, आम्लवेतस, जीरा सोठ, दाडिमछाल, दालचीनी, इलायची, आदि। **मात्रा**–२ से ३ माशा। **गुणधर्म**–वातकफनाशक, रुचि उत्पादक, दीपक, पाचक है तथा गुल्म, प्लीहा, उदर अर्श सग्रहणी, कोष्ठबद्धता, अग्निमाद्य विकारो मे लाभदायक है। **अनुपान**–उष्णजल, तक्र, सैधव, दही का पानी।

२१ महालवंगादि चूर्ण–(वैद्य सारसंग्रह)

मुख्य द्रव्य–कस्तूरी ,लोग, गोरोचन, चदन (सफेद), जायपत्री, जायफल, इलायची, तमालपत्र, धनियाँ, वाला, भारगमूल, देवदारु, असगध, केशर ,सोठ, नागकेशर, सु मा वसत, कातलोहभस्म, वगभस्म, अभ्रकभस्म, मडूरभस्म, शर्कर' आदि। **मात्रा**–१ से २ माशा। **गुणधर्म**–क्षय की प्रथमावस्था मे उत्तम कार्य करता है। यह अग्निमाद्य, अरुचि, सग्रहणी, अतर्दाह, श्वास, ज्वर मे लाभप्रद, है। **अनुपान**–दूधशर्करा। सुदर्शन अर्क या शहद।

२२ महाहिंग्वादि चूर्ण–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–हिंग, पाठा, हरडा, धनियाँ, दाडिमछाल, चित्रक, कचोरा, अजमोदा, सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, आम्लवेतस, अतिवला, इमली, जीरा,

पुष्करमूल, वचा, चवक , सज्जी, सेंधानमक, यवक्षार, सौवर्चल, बीटलवण, कालानमक, बॉगडक्षार आदि । **मात्रा**–१ से ३ माशा । **गुणधर्म**–गुल्म , अष्टीला कोख मे शूल, योनीशूल, पाडुरोग, हिक्का, सग्रहणी आदि वेदना मे हितकर है । **अनुपान**–उष्णजल, चणकक्षार, द्राक्षासव ।

२३ महासुदर्शन चूर्ण–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–किराततिक्त, हलदी, दारुहरिद्रा, हरडे, वहेडा, आमलकी, सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, पुष्करमूल, मूर्वा, मोतीरिंगणी, इद्रजव, कुटजछाल, भारगमूल, कुटकी, पित्तपापडा, नेत्रवाला, यष्टिमधु, चित्रक, जायपत्री, तालीस-पत्र, दालचीनी, सफेद चदन, अतीस, वशलोचन, सफेद कमल, शतावर, तमाल-पत्र आदि । **मात्रा**–१ से ३ माशा । **गुणधर्म**–जीर्णज्वर मे विशेपत लाभदायक है । विपमज्वर, सव प्रकार के ज्वर । अरुचि, दमा, कमर, घुटने , पीठ की हड्डियाँ (मेरुदड) वेदना आदि मे लाभप्रद है । **अनुपान**–शीत जल या दूध शर्करा ।

२४ मूत्रविरेचन चूर्ण–(वृ. वै.)

मख्य द्रव्य–साग का बीज, गोक्षुर, पलाशपुष्प, आदि । **मात्रा**–१ से ३ माशा । **गुणधर्म**–इसका उपयोग विशेपत मूत्राघात, मूत्रकृच्छ इन पर होता है । इससे पेशाव साफ होता है । उसके व्यतिरिक्त जलोदर, सर्वांग शोथ, मूत्र मे रेत अटकना आदि विकारो मे लाभदायक है । **अनुपान**–जल ।

२५ मृद्विरेचन चूर्ण–(र. यो. सा.)

मुख्य द्रव्य–इलायची, शुद्ध गधक, मुर्दाडशृग, सोफ आदि । **गुणधर्म**–इसका सतत कुछ दिनो तक २ माशा की मात्रा मे सेवन करते रहने से मृतिका खाने की आदत जिन बालको को पड जाती है तो इससे मल द्वारा सुबह मे ही निकल जाती है । **अनुपान**–उष्ण जल ।

२६ लवणत्रितयादि चूर्ण–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–सेंधानमक, सौवर्चल, काला नमक, अजवायन, रानतुलशी, जीरा, शाहजिरा, कचोरा, पाठा । कलौजिजिरा, विडग, आम्लवेतस, यवक्षार, त्रिवृत्त, दतीमूल, सोफ, काली मिर्च, पिप्पलमूल, पिप्पली, हिंग, सोठ, शतावर, पुष्करमूल, देवदारू, पारसिक यवानी, अजवायन, धनियाँ, आदि । **मात्रा**– १ से २ माशा । **गुणधर्म**– यकृच्छूल, पृष्ठशूल, कटिशूल, गुदशूल, कुक्षिशूल,

हृद्रोग, अर्श, मदाग्नि, विष्टभ, गुल्म, प्लीहोदर, उदर, हिक्का, आध्मान, कास, श्वास आदि मे लाभदायक है। **अनुपान**–घृत, शहद, बेरक्वाथ, तक्र, उटनी का दूध, दही का जल तथा नारायण चूर्ण के अनुपान के समान।

२७ लघुगंगाधर चूर्ण–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–मुस्ता, इद्रजव, लोध्र, वालवेल, मोचरस, धातकीपुष्प आदि। **मात्रा**–१ से ३ माशा। **गुणधर्म**–अतिसार। प्रवाहिका, आमता नाशक कार्य करता है तथा वलवर्धक भी है। **अनुपान**–तक्र और गुड़।

२८ लवंगादि चूर्ण–(भा. भै. र.)

मुख्य द्रव्य–लोग, जायफल, पिप्पली, काली मिर्च, सोठ, शर्करा आदि। **मात्रा**–३ से ४ माशा, ।**गुणधर्म**–इसका उपयोग कास, क्षय, अरुचि, अर्श, गुल्म, सग्रहणी अदि विकारो पर होता है। **अनुपान**– जल।

२९ वृद्धगंगाधर चूर्ण–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य –मुस्ता, इद्रजव, वालवेलफल, लोध्र, मोचरस, टेटूमूल, सोठ, वाला, पाठा, कुडाछाल, आतीस आदि। **मात्रा**–१ से ३ माशा। **गुणधर्म**–जलसदृप्य भयकर अतिसार मे भी लाभदायक है। अतिसार, सग्रहणी मे सग्रही कार्य करता है। **अनुपान**–चावल का धोवन, शर्करा और शहद।

३० शतावर्यादि चूर्ण–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य– शतावर, गोक्षूर, कवच बीज, नागबला, अतिवला, तालीमखाना आदि। **मात्रा**–१ से २ माशा। **गुणधर्म**–धातुक्षीणता तथा मूत्र विकारो में लाभदायक है। उत्तम वृष्य होने से शक्तिवर्धक भी है। **अनुपान**–दूध।

३१ शिवाक्षारपाचन चूर्ण–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–हिंग, सेधानमक, सोठ, काली मिर्च। पिप्पली, अजमोदा, जीरा, शहाजीरा, हरडा, सौवर्चल, आदि। **गुणधर्म**–इसका सेवन करने से आध्मान नष्ट होकर दस्त साफ आता है। भूख अच्छी लगती है। हृल्लास और मधु आदि विकार नष्ट होते है। वायु के कारण पेट मे दर्द होता हो तो कुछ दिन तक इसका सेवन करने से दर्द होना रुक जाता है।

३२ स्वादिष्ट विरेचन चूर्ण–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–यवक्षार, सोफ, शुद्ध चित्रक, त्रिवृत्त, (काला) स्वर्णमुखी,

शर्करा, यष्टिमधु आदि। **मात्रा**–१ से ३ माशा। **गुणधर्म**–शीत और मधुर होने से सेवन करने मे रुचिप्रद है। एकबार लेने से दो बार शौच हो जाता है। इसका सेवन अर्श, उदरशूल, कोष्ठबद्धता आदि मे लाभप्रद है। **अनुपान**–उष्णजल।

३३ सितोपलादि चूर्ण–(शाङ्गंधर)

मुख्य द्रव्य–दालचीनी, इलायची, पिप्पली, वशलोचन, शर्करा, आदि। **मात्रा**–१ से २ माशा। **गुणधर्म**–बालरोगो मे हितावह है। श्वास, कास, क्षय, जुकाम, जीर्णज्वर, पार्श्वशूल, हाथ-पैरो की उष्णता, कफ विकार मे लाभप्रद है। बालको के लिये उत्तम बलदायक है। **अनुपान**–घृत और शहद, दूध शर्करा।

३४ सुखसारक चूर्ण–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–स्वर्णमुखी, बालत सोफ, गुलाबकली, सोठ, आमलकी, सेधानमक, सौवर्चल, आदि। **गुणधर्म**–इसका सेवन करने से मरोड न होकर दस्त साफ होता है। **अनपान**–गरम पानी।

३५ सुदर्शन चूर्ण–(यो. र.)

मख्य द्रव्य–गुडूची, पिप्पलमूल, पिप्पली, कुटकी, हरडा, सोठ, लोग, कडे नीम की छाल, सफेद चदन, किराततिक्त आदि। **मात्रा**– १ से ३ माशा। **गुणधर्म**–जीर्ण विपमज्वर इससे नष्ट होता है। जीर्ण ज्वर मे अग्निमाद्य पाडुता, प्लीहावृद्धि इनपर अत्यत उपयुक्त है। **अनुपान**–जल।

३६ हिंगाष्टक चूर्ण–(अष्टांगहृदय-गुल्म चिकित्सा)

मुख्य द्रव्य–हिग, सेधानमक, सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, अजमोदा, जीरा, शहाजिरा आदि। **मात्रा**–१ से २ माशा। **गुणधर्म**–यह दीपक, पाचक, रुचिकर है। वातशूलनाशक, अजीर्ण, आनाह, वातगुल्म, वातभूयिष्ट दोप, डकारे आना, उदरस्तब्धता मे लाभदायक है। **अनुपान**–उष्णजल, घृत।

३७ हिग्वादि चूर्ण–(शाङ्गंधर)

मुख्य द्रव्य–हिग, सोठ, दाडिमछाल, आम्लवेतस, सौवर्चल आदि। **मात्रा**–१ से ३ माशा। **गुणधर्म**–इससे अग्नि प्रदीप्त होता है। आध्मान नष्ट होता है। रुचि पैदा होती है। उसी तरह शूल, अर्श, सग्रहणी पर अत्यत उपयुक्त है। **अनुपान**–तक्र, गरम पानी।

अंजन

१ चंद्रोदयावर्ति–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–शखनाभी, वहेडा, मगज, हरडा मैनसील, पिप्पली, काली मिर्च, कोष्ठ, वचा आदि। गुणधर्म–नेत्रो के सामने अधेरा आना, नेत्र कड, मासवृद्धि कम दिखाई देना, नेत्र लाल होना आदि मे पीसकर इसका अजन करे।

२ नयनामृतांजन–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–पारा, शीशा, सुरसा, भीमसेनीकपूर, जसदभस्म आदि। **गुणधर्म**–सतत इसका उपयोग करते रहने से दृष्टि साफ रहती है। नेत्ररोगो मे लाभप्रद है।

३ नेत्रांजन–(वृ. वै.)

गुणधर्म–सौविराजन के अनुसार।

४ सौविरांजन–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–शीशा, पारा, सुरसा, भीमसेनीकपूर, आदि। **गुणधर्म**–नेत्रो के लिये अति लाभदायक है। प्रात काल इसे नेत्रो मे डालना चाहिये – नेत्रो के तमाम रोगो को दूर करके नेत्रज्योति वृद्धि करता है। कफज नेत्रविकारो मे विशेष कार्य करता है।

वनौषधि कल्प

कुछ मनुष्यो की प्रकृति बहुत ही नाजुक होती है। उनको किंचित् भी कडी दवा सह्य नही होती है बल्कि उलटे उनको उससे कष्ट का अनुभव होता है। कुछ रोगी सतत औषधि के सेवन से तग आ जाते है। एसी नाजुक प्रकृति के लोगो को यह कल्प बहुत ही गुणकारी व उपयुक्त सिद्ध हुआ है। ताजी वनस्पतियो का रस या काढा शक्कर मे एक विशिष्ट पद्धति से घुला रहता है। सेवन करने मे मधुर एव प्रकृति का विरोध न करते हुए उसको लाभ पहुँचाना ही इसका प्रधान गुण है। इस कल्प से गुण तो सावकाश आता है परन्तु बहुत टिकाऊ होता है इसमे कोई सन्देह नही है।

१ अर्जुन कल्प–(वृ. वै.)

मात्रा–१ से १।। तो । गुणधर्म–खाँसी, दमा, क्षय, रक्तपित्त मे लाभप्रद है।

२ अडुसा कल्प–(वासाकल्प) (वृ. वै.)

मात्रा–१ से ४ चम्मच। गुणधर्म–कास, श्वास, क्षय, रक्तपित्त, आदि विकारो पर उपयुक्त है।

३ आरग्वध कल्प–(वृ. वै.)

मात्रा– -।।।- से १ तो । गुणधर्म–ज्वर, अवस्था मे भी मलशुद्धि के लिये इसका उपयोग किया जा सकता है। १ तो. कल्प थोडे जल मे मिलाकर पीना चाहिये। इससे शौच शुद्धि होती है।

४ अशोक कल्प–(वृ. वै.)

मात्रा–१ से १।। तो । गुणधर्म–गर्भाशय सबधी विकार, ऋतु समय मे उदर-शूल, प्रदर आदि मे लाभप्रद है।

५ कंटकरी कल्प–(रिंगाणी कल्प) (वृ. वै.)

मात्रा–१ से ४ चम्मच। गुणधर्म– इसका उपयोग कास, श्वास, इनपर बहुत अच्छा होता है।

६ गोक्षुर कल्प–(वृ. वै.)

मात्रा–१ से ४ चम्मच। गुणधर्म–मूत्रविकार, पेशाव मे छालन, बूँद बूँद पेशाव होना इनमे लाभप्रद है।

७ शतावर कल्प–(वृ. वै.)

मात्रा–१ से ४ चम्मच। गुणधर्म–इससे स्त्री स्तन्य की वृद्धि होती है। वैसे ही गर्भाशय विकार मे उपयुक्त है।

आसव और आरिष्ट

१ अभयारिष्ट (भै. रत्नावली)

मुख्य द्रव्य–हरडा, मुनक्का, विडग आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चम्मच। **गुणधर्म**–सब प्रकार के अर्श (बवासीर), आठ प्रकार के उदररोग, कोष्टवद्धता, मूत्राघात, अग्निमाद्य मे शीघ्र लाभप्रद है। समभाग पानी मिलाकर भोजन के पश्चात सेवन करे।

२ अमृतारिष्ट–(भै. रत्नावली)

मुख्य द्रव्य–गुडूची, दशमूल आदि। **मात्रा**–चाय के ३ से ५ चम्मच। **गुणधर्म**–सब प्रकार के ज्वर, विषमज्वर, शीतज्वर मे लाभप्रद है। क्विनाईन की जगह इसका उपयोग करे। नियमित सतत सेवन कुछ दिन करने से शीतज्वर (मलेरिया) दूर होकर वारवार नही आता है। समभाग पानी मिलाकर पीना चाहिये।

३ अरविन्दासव–(भै. रत्नावली)

मुख्य द्रव्य–कमल, पीत, उशीर (वाला), शिवणमूल, नीलकमल मजिष्ठा, इलायची, वलामूल, जटामासी, नागरमोथा, अनर्जुछाल, काली मुनक्का आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चम्मच,। **सामान्यगुण**–दीपक, पाचक, सारक, वातहारक, पौष्टिक, रक्तशुद्धिकारक, शक्तिवर्धक, वालग्रहनाशक, मूत्रल होने से उपदश मे उपयोगी। **विशेषगुण**–रुचिकारक और मीठा होने से बच्चे शौक से पीते है। वालको के रोगो मे यह विशेष सफल कार्य करता है। पाचन क्रिया व्यवस्थित होकर रक्त, मास, तेज और वल की वृद्धि होती है। आक्षेप वालग्रह, मलावरोध उदरस्थ वातरोग होकर वालक निरोगी, पुष्ट और दीर्घायु होते है। अन्न खानेवाले वालको को चाय का १ चम्मच पानी मिलाकर दो वार देना चाहिये। दूधपीते वालको को २० से ३० बूद देना चाहिये।

४ अश्वगंधारिष्ट–(भै. रत्नावली)

मुख्य द्रव्य–असगध, सफेदमुसली, मजिष्ठा, हरडा, दारुहरिद्रा, हरिद्रा, मधु रास्ना, विदारीकद, त्रिवृत्त, अनता, श्वेतचदन, रक्तचदन, वचा, चित्रक आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चम्मच। **गुणधर्म**–दीपक, पाचक, रक्तशुद्धिकारक, पुष्टिकारक, वलदायक और सारक है। इससे शुक्रधातु वृद्धि होकर बलकी

प्राप्ति होती है। यह अर्श, अपस्मार, मूर्च्छा, उन्माद और क्षय मे भी लाभदायक है। समभाग जल मिलाकर सेवन करे।

५ अशोकारिष्ट–(भै. रत्नावली)

मुख्य द्रव्य–अशोकछाल, जीरा, नागरमोथा, सोठ, दारुहरिद्रा, वासा रक्तचदन आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चम्मच। **गुणधर्म**–स्त्री रोगी को अत्यत हितावह है। सब प्रकार के प्रदररोग, रक्तपित्त, अर्श, अग्निमाद्य, अरुचि, मेह, शोथ, गर्भाशय के विकार और निर्वलता पर लाभदायक कार्य करता है, भोजन के पूर्व दो वार समभाग जल मिलाकर पीना चाहिये।

६ अर्जुनारिष्ट–(भै. रत्नावली)

मुख्य द्रव्य–अर्जुनाछाल, काली मुनक्का आदि। मात्रा–चाय के २ से ४ चम्मच समभाग जल के साथ। **गुणधर्म**–हृद्दौर्बल्य, फेफडो की अशक्तता और उससे जनित विकार इनमे उपयक्त है।

७ उशीरासव–(भै. रत्नावली)

मुख्य द्रव्य–पीतउशीर, कमल, शिवणफल, नीलकमल प्रिमगु, पद्मकाष्ठ, लोध्र, मजिष्ठा, दुरालभा, पाठा किराततिक्त, मोचरस, मन्नुका आदि। **मात्रा**–चाय के २ से ५ चम्मच। **गुणधर्म**–यह रक्तपित्तनाशक तथा शरीर का दाह, हाथ-पैरो की जलन, पाडू, कुष्ठ, अर्श, कृमि, शोथ, मूत्र से रेव का स्राव, मूत्रमार्ग से धातुस्राव, मूत्रदाह, मूत्रकृच्छ, बूद बूद पेशाव होना, नाक, मुँह या मल और मूत्रद्वार से रक्तस्राव होना, प्रसूति के पश्चात् रक्तस्राव, रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर सोमरोग आदि विकारो मे सफल कार्य करता है। इससे गर्भाशय शुद्ध हो जाता है। वालको के लिये भी लाभप्रद है।

८ कर्पूरारिष्ट–

मुख्य द्रव्य–कर्पूर, मुलेठी आदि। **गुणधर्म**–हैजा (कॉलरा) के विकार मे इसका उपयोग लाभदायक है। अपचन तथा उससे होनेवाले अतिसार, उदरशूल आदि विकारो मे गुणकारी। **मात्रा**–२ से ४ चम्मच दिनभर मे यथावकाश हैजा की अवस्था मे दीजिये। शेष विकारो मे २ चम्मच दवा २ या ३ समय।

९ कुटजारिष्ट–(भै. रत्नावली)

मुख्य द्रव्य–कुटज छाल, मुनक्का, शिवणमूल, गुड आदि। **मात्रा**–चाय के १

मे २ चम्मच। गुणधर्म–ज्वर, वातरोग, अग्निमान्द्य, अरुचि, श्वास, खाँसी, संग्रहणी अतिसार आदि विकार दूर होकर, रक्तार्श, रक्तातिसार (खूनी आव), रक्तज संग्रहणी, में स्तंभक कार्य करता है। समभाग उष्णजल मिलाकर सेवन करे।

१० कुमारी आसव नं. १ (योग रत्नाकर)

मुख्य द्रव्य–मुरवारी हरडा। कुमारी रस, गुड, शहद, जातिफल, लोंग, कंकोल, जटामासी, चवक, चित्रक, जायपत्री, कर्कटशृंगी, पुष्करमूल, बिभीतक, ताम्रभस्म, लोहभस्म, आदि। मात्रा–२ से ३ चम्मच। गुणधर्म–घृतकुमारी, हरडा, ताम्रभस्म, लोहभस्म, पुष्करमूल, जायफल, लोंग आदि सुगंधित और उष्ण द्रव्यो का मिश्रण है। यह विशेषत यकृत पर उत्तम कार्य करता है। इसलिये यकृत, प्लीहावृद्धि और इसी से होनेवाले विकारो मे सफल कार्य करता हे। यह यकृत विरेचक कार्य करता है इसलिये यकृत, प्लीहावृद्धि और अप्टीला का कारण होता है। उदर का जल कम होकर प्लीहा का कार्य व्यवस्थित होने लगता है। रक्त के रक्तकणो की वृद्धि होकर पाडु और कामला रोग का नाश होता हे। समान और अपान वायु का अनुलोमन होकर अत्रस्थ सचितमल दुर्गंधित घनरूप वायु और वायुरूप द्रव्यो का रूपातर होता हे। गर्भाशय विकारो मे भी लाभदायक है। पाचनक्रिया व्यवस्थित होकर अग्नि प्रदीप्त होती है। शौचशुद्धि होकर, उत्साह वृद्धि उत्पन्न होती है। कास, श्वास, क्षय, अर्श, वातरोग, उदररोग, अपस्मार, मन्यारोग, गुल्म, नष्टपुष्प, कोष्टशूल मे लाभप्रद तथा दीपक, पाचक है। सूचना–गर्भवती स्त्रियो और बालको को नही देना चाहिये।

११ कुमारी आसव नं. २ (वृ. वै.)

मात्रा– ।। से १ तो (१ से २ च)। गुणधर्म–अग्निवर्धन यह इसका प्रधान कार्य हे। इसलिये यह अतडियो के सर्व विकारो मे चलता है। पुरानी संग्रहणी आमाश, पेट दर्द, आनाह, इन विकारो पर उत्कृष्ट है। अनुपान–दुगने पानी के साथ दो बार लेना चाहिए।

१२ कुमारी आसव नं. ३

मुख्य द्रव्य–बाल हरितकी, कुमारी रस, गुड, शहद, जायफल, लोंग, कंकोल जटामासी, चव्य, चित्रक, जायपत्री, कर्कटशृंगी, पुष्करमूल, बिभीतक आदि। मात्रा–१ से २ चम्मच। (बालको के लिये)। गुणधर्म–यह अत्यत उपयोगी है। बालको के सब विकारो मे लाभप्रद हे। दमा, खाँसी, गुल्म, यकृत, आनाह,

उदरस्थ वायु, प्लीहावृद्धि, पाडु विकारो मे लाभदायक है। बालको को देने से उत्तम शक्तिवर्धक कार्य करता है। **अनुपान**–समभाग जल।

१३ कुमारी आसव नं. ४–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–हरितकी, कुमारी रस, शहद, गुड, जातिफल, लोग, ककोल, चव्य, चित्रक, जायपत्री, कर्कटशृ गी, पुष्करमूल, विभीतक आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चमम्च। **गुणधर्म**–श्वास, खाँसी, जीर्णकोष्ठबद्धता, यकृत, प्लीहावृद्धि, गुल्म, जीर्णज्वर, अग्निमाद्य मे लाभदायक है। यह ताम्रलोहयुक्त शक्तिदायक तथा यकृत पित्तस्रावक है। दुगने पानी के साथ दो बार पीना चाहिये।

१४ कुष्मांडासव–(गदनिग्रह)–

मुख्य द्रव्य– कुष्माडरस, सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, लोग, त्वक्तमालपत्र इलायची, नागकेशर, जातिफल, जायपत्री, ककोल, देवदारु, विदारीकद, लोह आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चम्मच। **गुणधर्म**–यह जीर्णज्वर मे शक्तिपात होता हो तो उस वक्त उपयुक्त है। इससे भूख अच्छी लगती है। पाचनक्रिया सुधरती है। क्षय, उरक्षय, पाडूता, अग्निमाद्य और उससे उत्पन्न होनेवाली अशक्तता इन पर अति उपयुक्त है।

१५ कनकासव–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–धत्तुरपचाग, वासा, यष्टिमधु, पिप्पली, नागकेशर, सोठ रिंगणी, भारगमूल, तालिसपत्र मधुका आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चम्मच। **गुणधर्म**–वातकफनाशक, दीपक, पाचक, कास, श्वास, क्षतक्षय, जीर्णज्वर, रक्तपित्त और उर क्षतमे लाभदायक है। समभाग जल मिलाकर पीना चाहिये।

१६ खर्जरासव–(भा. भै. र.)

मुख्य द्रव्य–खर्जूर, सोफ, गुड आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चम्मच। **गुणधर्म**–यह कामला, सग्रहणी, गुल्म इन पर अत्यत उपयुक्त है। यह बलवर्धक है। इसमे भूख अच्छी लगती है। पाचनशक्ति सुधरती है। **अनुपान**–जल मिलाकर।

१७ खदिरारिष्ट–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–खदिराछाल, देवदारु, बावची, दारुहरिद्रा, त्रिफला, ककोल, नागकेशर, जायफल, लोग, इलायची दालचीनी, पिप्पली, आदि। **मात्रा**–चाय के

१ से २ चम्मच। **गुणधर्म**–अत्यत पाचक तथा अल्प सारक है। रक्तविकार तथा उससे होनेवाले महाकुष्ठ, खाज दाद शीतपित्त, वातरक्त, गुल्म आदि मे लाभदायक है। दिन मे तीन वार समभाग जल मिलाकर पीना चाहिये।

१८ गौडारिष्ट–(चरक चिकित्सा)

मुख्य द्रव्य–मजिष्ठा, हरिद्रा, वलामूल, लोध्र, मुनक्का, लोह भस्म आदि। **मात्रा**–चाय के २ से ३ चम्मच। **गुणधर्म**–यह पाडुरोग, कामला, श्वास, कास इन पर उत्तम है। अनुपान–जल मिलाकर।

१९ चंदनासव–(भै. रत्नावली)

मुख्य द्रव्य–श्वेतचदन, पीतउशीर, मुस्ता, शिवणफल, नीलकमळ, प्रियगु, पद्मकाष्ठ, लोध्र, मजिष्ठा, रक्तचदन, पाठा, किराततिक्त, आम्रछाल, मोचरस, मुनक्का आदि। **मात्रा**–२ से ४ चम्मच। **गुणधर्म**–विशेपत प्रमेह, स्वप्नावस्था, उपदश, मूत्रदाह, मूत्र से धातुस्राव, रक्तपित्त, अतर्दाह, ज्वर मे लाभदायक तथा दीपक और पौष्टिक है। दिन मे तीन वार समभाग पानी मिलाकर पीना चाहिये।

२० चविकासव–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य– चव्य, चित्रक, पुष्पकरमूल, वचा, कचोरा, हरड, बहेडा, आमलकी, अजवायन, रास्ना, दती, मजिष्ठा, देवदारू, सोठ, काली मिर्च, पिप्पली आदि। मात्रा–चाय के १ से २ चम्मच। गुणधर्म–उदर, गुल्म , प्रमेह, यकृत, अष्टीला, प्रत्यष्टीला, प्रतिश्याय, क्षय, खॉसी, अडवृद्धि मे लाभप्रद है। दिन मे तीनवार सम-भाग पानी मिलाकर पीना चाहिये। **सूचना**–गर्भवती स्त्रियो और बालको को यह नही देना चाहिये।

२१ अंबासव–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–जामुन का रस, लोध्र, मडूर, शहद आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चम्मच। **गुणधर्म**–जामुन से तैयार किया जाता है। इसमे लोहभस्म, लोध्र, धाय के फूल डाले जाते है। स्तभक, रक्त प्रसार करता है रक्तातिसार, रक्त-पित्त, नाक से रक्तस्राव, किसी भी स्रोत मे रक्तस्राव वद होता है। इसका मुख्य कार्य यकृत, गर्भाशय और अपत्यमार्ग को वलप्रद बनाना है। इससे गर्भाशय और यकृत् बलवान होते है जिससे वह कार्य सुव्यवस्थित करता है, और इसीसे श्वेत-प्रदर, अत्यार्तव, गर्भाशय शोथ, तत्जन्यज्वर का नाश होता है। मधुमेह मे भी लाभ-

प्रद है। अग्निवृद्धि होकर पाचन क्रिया व्यवस्थित होती है। रक्तवर्धक, पित्तशामक है तथा अतिसार सग्रहणी मे लाभदायक कार्य करता है। भोजन के पूर्व समभाग जल मिलाकर सेवन करे।

२२ जीरकाद्यरिष्ट–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–जीरा, शतावर, सोठ, जायफल, मुस्ता, त्वक्, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर, अजवायन, ककोल, लोह आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चम्मच। गुणधर्म–अग्निमाद्य, अतिसार, प्रसूतिरोग मे हितावह है। दशमूलारिष्ट या बालतकाढा आदि। औषधियाँ पित्तप्रकृति की प्रसूती स्त्रियो को हितावह नही होती हैं, वहाँ जीरकाद्यरिष्ट सफल कार्य करता है। इसके सेवन से हाथपैरो की जलन, सर्वागदाह, उष्णविरेचन होना आदि विकार दूर होकर नींद उत्तम आती है। पाचनक्रिया व्यवस्थित होती है। दुग्धोत्पत्ति भी होती है। समभाग पानी मिलाकर दिन मे नीन बार पीना चाहिये।

२३ दशमूलारिष्ट–(भै. रत्नावली)

मुख्य द्रव्य–दशमूल, चित्रक, गोक्षुर, पुष्करमूल लोध्र, गुडूची, आमलकी, दुरालभा, खदिरछाल, विडग, हरडा, देवदारु, यष्टिमधु, रास्ना, पिप्पली, हरिद्रा, सोफ, पद्मकाष्ठ, अष्टवर्ग, कस्तूरी, मुनक्का आदि। **मात्रा**–चाय के २ से ३ चम्मच। **गुणधर्म**–प्रसूती स्त्रियो के लिये हितावह है। गर्भाशय के निर्बल होने से गर्भ धारण न होना, गर्भपात होना, पूरे दिन का बालक होकर भी निर्बल अपस्मार दमा, अपूर्ण वृद्धि आदि दोषोवाला बालक होना इसमे यह उत्तम कार्य करता है। प्रसूती को १० दिन मे देने से अग्निमाद्य, जीर्णज्वर, खाँसी, रक्तस्राव से निर्बलता आदि विकार नही होते है। यह अल्प स्तभक होने से सग्रहणी, शक्तिपात, भूख न लगना आदि विकारो मे उत्तम कार्य करता है। इस अवस्था मे चार चम्मच दशमूलारिष्ट भोजनके पश्चात् लेना चाहिये। यह सब प्रकार के वातविकार, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ, अर्श उदर, प्रमेह, अरुचि, शूल, कास, श्वास, भगदर, वातरोग छर्दि, पाडुरोग, कामला, अर्श, कुष्ठनाशक तथा अग्निदीपक, बलदायक बंधत्व, नाशक, शुक्रवृद्धि कारक है। आर्तवशूल मे अशोकारिष्ट मिलाकर भोजन के पूर्व देना चाहिये। समभाग जल मिलाकर दिन मे तीन बार लेना चाहिये।

२४ द्राक्षारिष्ट–(योग रत्नाकर)

मुख्य द्रव्य–काली मुनक्का, गुड, विडग, प्रियगु, त्वक, इलायची, तमालपत्र,

नागकेशर, काली मिर्च, सोठ। **मात्रा**—चाय के २ से ३ चम्मच। **गुणधर्म**—खाँसी, काली खाँसी, उर क्षत, दमा, क्षय, अपचि, अग्निमाद्य, अजीर्ण, स्वरभेदक, मलावरोध, मे लाभप्रद है। समभाग पानी मिलाकर तीन बार पीना चाहिये।

२५ दंत्यारिष्ट—(गदनिग्रह)

मुख्य द्रव्य—दतीमूल, चित्रकमूल, सालवण, पिठवण, रिगणी, डोरली, गोक्षुर, बिल्व, ऐरण, पाडल, टेटू, हरडा, बहेडा, आमलकी, आदि। **मात्रा**—चाय के १ से ४ चम्मच। **गुणधर्म**—इससे भूख अच्छी लगती है। दस्त साफ होता है। आध्मान कम होता है। यह बवासीर पर बहुत अच्छा काम करता है।

२६ द्राक्षासव—(यो. र.)

मुख्य द्रव्य—द्राक्षारस, शर्करा, शहद, जायफल, लोग, स्वेतचदन, पिप्पली, तमालपत्र ,त्वक , इलायची , आदि। **मात्रा**—चाय के १ से २ चम्मच। **गुणधर्म**—यह पुष्टिदायक और बलवर्धक है। इससे भूख अच्छी लगती है। हजमा अच्छा होता है। दस्त साफ होता है। सग्रहणी, ज्वर, रक्तपित्त, क्षय, पाडुरोग, मसुरिका आदि विकारो मे और उनके पश्चात भी इसका अच्छा उपयोग होता है। **लेने का तरीका**—समभाग जल के साथ लेना चाहिये।

२७ देवदार्व्यारिष्ट—(भै. र.)

मुख्य द्रव्य—देवदारु, अडुसा, मजिष्ठा, इद्रजव, दतीमूल, तगरकाष्ठ, हरिद्रा। दारुहरिद्रा, रास्ना, विडग, खदिरछाल, अर्जुनछाल, रक्तचदन गुडूची, कठुक, रोहिणी, चित्रक आदि। **गुणधर्म**—गर्मी, सूजाक, प्रमेह, और इससे बहुमूत्र, मधुमेह हो जाना इस अवस्था मे विशेष हितावह है। इसके सेवन से पाचनक्रिया मे सुधार होकर शौचवृद्धि भलीभाँति होने लगती है तथा मूत्रविकार, खाज, धातुविकार, प्रदर, गर्भाशय रोग, वातरोग, ग्रहणी, अर्श, हृद्रोग, कुष्ठ, मूत्रकृच्छादि विकार ठीक होते है। समभाग जल मिलाकर भोजन के पूर्व लेना चाहिये।

२८ धात्र्यासव—(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य—आमलकी रस, शहद, पिप्पली, शर्करा आदि। **मात्रा**—चाय के १ से ४ चम्मच। **गुणधर्म**—इसका उपयोग पाडुरोग, कामला, कास, हिक्का इनपर अच्छा होता है। इससे भूख अच्छी लगती है। पाचन सुधरता है।

२९ पर्पटाद्यरिष्ट–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–पर्पट, गुडूची, मुस्ता, दारुहरिद्रा, देवदारु, रिंगणी, दुरालभा, चव्य, चित्रक, सोंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, विडंग आदि। **मात्रा**–चाय के ३ से ५ चम्मच। **गुणधर्म**–प्लीहा, यकृतवृद्धि, कामला, पाडूरोग, हलीमक, उदर, अप्टीला, गुल्म, विषमज्वर और सब प्रकार के शोथ मे लाभदायक है। भोजन के मध्य में जल मिलाकर पीना चाहिये।

३० पार्थाद्यरिष्ट–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–अर्जुनछाल, काली मुनक्का, गुड आदि। **मात्रा**–चाय के ३ से ५ चम्मच। **गुणधर्म**–हृदय और फुफ्फुस की निर्बलता और उससे होनेवाले विकारो मे लाभदायक है तथा वीर्य, उत्साह एव बलवर्धक है। समभाग पानी मिलाकर पीना चाहिये।

३१ पत्रांगासव–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–पतंग, खदीर छाल, अडूसा, मोचरस, बलामूल, भल्लातक, सारिवा, आम्रास्थि, दारुहरिद्रा, किराततिक्त, रसांजन, भृङ्गराज, दालचीनी, लोंग, नागकेशर, मुनक्का आदि। **मात्रा**–चाय के १ से ४ चम्मच। **गुणधर्म**–स्त्री के गर्भाशय संबंधी विकार मे उपयुक्त है। प्रदर, पाडु इन पर अच्छा कार्य करता है।

३२ पलाशपुष्पासव–(यो. र.)

मुख्य द्रव्य–पलाशपुष्प, पाषाणभेद, सफेद वाला, रक्तचंदन, आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चम्मच। **गुणधर्म**–प्रमेह, बहुमूत्र आदि मूत्रविकार तथा मलावरोध और उपदंश मे हितावह है। उष्ण जल आठ गुना मिलाकर प्रातःकाल भोजन के पश्चात् सेवन करे।

३३ पुनर्नवासव–(भै. रत्नावली)

मुख्य द्रव्य–पुनर्नवा, सोंठ, काली मिर्च, पिप्पली, हरडा, बहेडा, आमलकी, दारुहरिद्रा, गोक्षुर, रिंगणी, डोरली, अडुसा, एरंडमूल, कुटकी, गजपिप्पली, दुरालभा, परवर, काली मुनक्का, शहद आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चम्मच। **गुणधर्म**–उदर, गुल्म, श्वास, शोथ, यकृतवृद्धि, फुफ्फुस, सन्निपात (न्युमोनिया) मे हितावह तथा शक्तिवर्धक, धातुवर्धक, क्षुधावर्धक, अदरूनी शोथनाशक है।

३४ पारसीकयवानी आसव–(खोरासनी आसव) (वृ वै.)

मुख्य द्रव्य–खोरासनी, अजवायन, शर्करा, आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चम्मच। समभाग जल के साथ। **गुणधर्म**–यह शामक है। निद्रानाश, शुष्क कास, रक्तपित्त, हृदय का धडकाना, पीडितार्तव इनपर अत्युत्तम है।

३५ पंचकोलासव–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–पिप्पली, पिप्पलमूल, चव्य, चित्रक, सोठ आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चम्मच समभाग जल मे। **गुणधर्म**–इसके सेवन से भूख अच्छी लगती है। पेट मे वात सचय होने की प्रवृत्ति कम होती है।

३६ पिपल्यासव–(पिपल्यारिष्ट) (भै. र.)

मुख्य द्रव्य–पिप्पली, काली मिर्च, चव्य, हरिद्रा, चित्रक, मुस्ता, विडग, सुपारी, लोध्र, पाठा, आमलकी, लोग, दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, प्रियगु, नागकेशर, मनुक्का, आदि। **मात्रा**–चाय के ३ से ५ चम्मच। **गुणधर्म**–क्षय, गुल्म उदर, कृशता, ग्रहणी, पाडु, अर्श मे लाभप्रद है। समभाग जल मिलाकर पीना चाहिये। **सूचना**–गर्भवती और बालको को नही देना चाहिये।

३७ भृंगराजासव–(गदनिग्रह)

मुख्य द्रव्य–भृङ्गराज रस, गुड, रगारी हरडा, पिप्पली, जायफल, लोग, त्वक, एला, तमालपत्र, नागकेशर आदि। **मात्रा**–चाय के ३ से ५ चम्मच। **गुणधर्म**–वात, कफ, मेद के कारण शरीर के स्रोतस बद हो जाने से जो अवरोध होता है उसमे लाभप्रद है। धात्वतर्गत अग्नि प्रदीप्त होकर धातु वृद्धि होती है तथा कृशता, अग्निमाद्य, जडता, नपुसकत्व, वध्यत्व यह विकार ठीक होते है। समभाग जल मिलाकर सेवन करना चाहिये।

३८ बब्बुलारिष्ट–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–बब्बुल की अतर्छाल, पिप्पली, जायफल, लोग, ककोल, दालचीनी, तमालपत्र, नागकेशर, काली मिर्च, धातकी पुष्प आदि। **मात्रा**–चाय के २ से ३ चम्मच। **गुणधर्म**–उत्तम पाचक, दीपक, शक्तिदायक, क्षय, श्वेतप्रदर, उरक्षत, श्वास, अतिसार, कुष्ठ, प्रमेह, ग्रहणी, आदि रोगो का नाश करता है। समभाग जल मिलाकर दिन मे तीन बार सेवन करना चाहिये।

३९ मधुकारिष्ट–

मुख्य द्रव्य–मधुक, पुष्प, विडग, चित्रकमूल भल्लातक, मजिष्ठा, गुड आदि। **मात्रा**–चाय के २ से ३ चम्मच। **गुणधर्म**–रक्तस्थ कृमि, त्वचारोग, कुष्ठ, अपचन, शोथ, प्रमेह, अग्निमाद्य, अतिसार, सग्रहणी मे लाभप्रद है तथा दीपक और बल्य है। आठ गुना जल मिलाकर दो बार भोजन के पश्चात् पीना चाहिये।

४० रोहितकारिष्ट–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–रक्त रोहितकी, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, पिप्पली हरीतकी, बिभीतक, आमलकी, पिप्पलमूल, चवक, चित्रक, सोठ, आदि। **मात्रा**–चाय के २ से ३ चम्मच। **गुणधर्म**–प्लीहावृद्धि, यकृतवृद्धि, गुल्म, अष्टीला, कामला, कुष्ठ, उदर, शोथ, सग्रहणी मे हितकारी है। दिन मे दो बार समानकाल मे समभाग जल मिलाकर पीना चाहिये।

४१ लोध्रासव–(यो. र.)

मुख्य द्रव्य–लोध्र, कचोरा, पुष्करमूल, इलायची, मुर्वा, विडग, हरितकी, वीभीतक, आमलकी, अजवायन, चवक, कुटकी, भारगमूल, अतिविष, महालुग आदि। **मात्रा**–चाय के १ से २ चम्मच। **गुणधर्म**–मूत्रदाह, अधिकमूत्र का स्राव, या बूद बूद मूत्रस्राव होना, बार बार मूत्रात्याग की इच्छा, मूत्राशय के विकार, मूत्रमार्ग मे शोथ, धातुस्राव, स्वप्नावस्था, पीडितार्तव, पाडुरोग, अर्श, ग्रहणी, किलासकुष्ठ आदि का नाश होता है। दिन मे तीन बार समभाग जल मे मिलाकर पीना चाहिये।

४२ लोहासव–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–लोहभस्म, हरितकी, वीभीतक, आमलकी, सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, अजवायन, वायविडग, मुस्ता, चित्रक आदि। **मात्रा**–चाय के २ से ३ चम्मच। **गुणधर्म**–यह आसव बलवर्धक, पाडु, कामला, हलीमक, दमा, खाँसी, क्षय, अतिसार, सग्रहणी, उरुस्तभ, अष्टिला, मेह, अश्मरी, गडमाला, हनुस्तभ मे लाभदायक है। दिन मे दो बार भोजन के पश्चात् समभाग जल मिलाकर पीना चाहिये।

४३ वासकासव–(भै. र.)

मुख्य द्रव्य–वासा, गुड, धातकी पुष्प, दालचीनी, इलायची, तमालपत्र,

नागकेशर, कर्पूर, त्रिकटु, आदि। मात्रा—चाय के १ से ४ चम्मच। समभाग जल के साथ। गुणधर्म—यह शुष्क कास में कफ का निष्ठीपन करने के लिये उपयुक्त है। किसी तरह से रक्त, कफ पड़ना, मूलव्याध, क्षयजकास, मर्कट, कास पर उपयुक्त।

४४ विडंगारिष्ट—(भै. र.)

मुख्य द्रव्य—वायविडंग, गांठी पिप्पली। रास्ना (खटकी), कुटज, छाल, इंद्रजव, आमलकी, शहद, धातकी पुष्प, दालचीनी, आदि। मात्रा—१ से २ चम्मच। **गुणधर्म**—रक्तघ्न उदरघ्न और व्रण में कृमीनाशक है। विद्रधी, गुल्म, गंडमाला, दमा, खांसी, भगंदर में हितावह है। बारबार कृमि होने की, आदत भी इससे नष्ट हो जाती है। समभाग जल मिलाकर दिन में तीन बार पीना चाहिये।

४५ सारस्वतारिष्ट—(भै. र.)

मुख्य द्रव्य—ब्राह्मी, पंचांग, शतावर, विदारीकंद, अभया, पीतउशीर, अदरक, बडी सोंफ, (मिश्री) आदि। मात्रा—१ से २ चम्मच। **गुणधर्म**—स्वरभेद, तोतलापन नष्ट होकर, स्मरणशक्ति, धारणशक्ति, बुद्धि, कांति और बलवर्धक है। मानसिक श्रम अधिक करने से आनेवाली कमजोरी इसके सेवन से दूर हो जाती है। सभी के लिये हितावह है। दो बार भोजन के उपरान्त समभाग जल मिलाकर पीना चाहिये।

४६ सारिवासव—(भै. र.)

मुख्य द्रव्य—काली सारिवा, मुस्ता, लोध्र, पिप्पल की छाल, कचोरा, पद्मकाष्ठ, पीतउशीर, पहाडमूल, सोनामुखी, मुनक्का आदि। मात्रा—१ से २ चम्मच। गुणधर्म—उपदंश और उससे होनेवाले रोग, वातरक्त, भगंदर में सफल कार्य करता है। शरीरस्थदाह, मूत्रदाह, हाथपैरो की जलन दूर होकर रक्त शुद्ध होता है। दिन में तीन बार जल मिलाकर पीना चाहिये।

काढ़ा : प्रकार पहला

वनस्पति का काढा तैयार करके ताजा कुनकुना पीना ही शास्त्र-सम्मत है। परतु इसमे समय तथा परिश्रम अधिक होने के कारण लोग इस शास्त्रीय पद्धति मे दूर भागते है। परतु काढे से पुराने मे पुराना रोग भी अच्छा होता है और यह गुण स्थिरता से विद्यमान रहता है ऐसा अनुभव है।

काढ़े की पुड़ियों के बारे में सूचना

१ प्रत्येक काढे के वारे मे २॥ तोला मिश्रण (याने दलिया) रहता है।

२ प्रत्येक वड़ी पुडिया मे सात छोटी पुडियाँ रहती है।

३ एक काढा-पुडिया २ कप गरम पानी मे ३ घटे तक भिगोकर रखना उसके वाद उसे मदाग्नि पर कढाना चाहिए। जव आधा कप शेप रहता है तव उसमे शहद, मिश्री, चीनी, गुड इनमे से कोई एक जो योग्य हो वह डालकर काढा वस्त्र से छानकर पीना चाहिए।

अ—काढे साधारणतया सौम्य होते है परतु कुछ तीक्ष्ण भी होते है।

व—तीक्ष्ण काढा अन्य काढो से मात्रा मे आधा ही लेना उत्तम है।

क—काढे-पुडियो के प्रमाण वडो को ध्यान मे रख कर यहाँ दिया है। छोटे वच्चो को तथा कमजोर मनुष्यो को मात्रा निश्चित करने मे जानकारो की सम्मति लेनी चाहिए।

ड—काढा कम से कम ७ दिन तक लेना चाहिए। इससे और अधिक कितने दिन तक लेना होगा यह तो रोग के अनुसार निश्चत करना चाहिए।

१ अशोक कषाय	चूर्ण	पैकिंग	७ पुड़ियाँ
२ अभयादि कषाय	,,	,,	७ ,,
३ दशमूल कषाय	,,	,,	७ ,,
४ दार्व्यादि कषाय	,,	,,	७ ,,

५ देवदार्व्यादि कषाय	चूर्ण	पैकिंग	७ पुडियाँ
६ परिपाठादि कषाय	,,	,,	७ ,,
७ पथ्यादि कषाय	,,	,,	७ ,,
८ पुनर्नवादि कषाय	,,	,,	७ ,,
९ मजिष्ठादि कषाय	,,	,,	७ ,,
१० महामजिष्ठादि कषाय	,,	,,	७ ,,
११ महासुदर्शन कषाय	,,	,,	७ ,,
१२ महारास्नादि कषाय	,,	,,	७ ,,
१३ रास्नादि कषाय	,,	,,	७ ,,
१४ शीतज्वरारि कषाय	,,	,,	७ ,,
१५ शतपुष्प कषाय	,,	,,	७ ,,
१६ सुदर्शन कषाय	,,	,,	७ ,,
१७ सततज्वर कषाय	,,	,,	७ ,,

१८ **गर्भ कषाय** –१ से ९ मास तक लेने की सप्तक-पुडियाँ। पेकिंग- सप्तक पुडियाँ (७ पुडियाँ)।

१० से १६ मास तक लेने की पैकिग-सप्तक पुडियाँ (७ पुडियाँ)

इसके अलावा कोई काढा आपकी सूचना के अनुसार तैयार करके भेजा जायगा। योग्य कीमत ली जायगी।

काढ़ा-प्रकार दूसरा

यह एक नूतन ही उपक्रम हमने प्रारभ किया है। इसके सेवन से गर्भवती स्त्रियो के महान् सकट भी दूर होते है। इससे नौ महीने सुखपूर्वक बिताकर किसी तरह के कष्ट के विना आसानी से स्त्रियाँ प्रसूत होती है। इसीलिये वहुत से लोग आज कल इन काढो का प्रयोग कर रहे है। इन काढो के वारे मे विशेष लिखना यह है कि ये गुण से सौम्य है एव स्त्रियो को तथा गर्भ को शक्तिदायक है। जिनको गर्भपात की आदत-सी है और जिस मास मे साधारण-तया गर्भस्राव होता है उसके पूर्व मास का, उस मास का तथा अगले मास का इस तरह तीन मास के काढे सतत नियमपूर्वक लेते रहने से उनकी आपत्ति प्राय दूर हो जाती है ऐसा अनुभव है। अन्य गर्भवतियाँ भी इसके सेवन से लाभ

उठा सक्ती है। इससे गर्भ अच्छी तरह बढता है एव प्रसूति भी सुखपूर्वक होती है, इसमे कोई सन्देह नहीं है।

अ—काढा तैयार करने की कृति—एक पुडिया २० तोले उबलते हुए पानी मे डालकर फिर अच्छी तरह उबालना चाहिए। जब आधा पानी बच जाय तब उतार कर ढककर रखे। थोडे समय मे चूर्ण नीचे बैठ जाता है। तब वस्त्र से छान ले। उसमे अपनी रुचि के माफिक दूध, थोडी-सी मिश्री डालकर प्रात काल लेना चाहिए।

ब—एक काढा रोज नियम से तीन दिन तक लेना होगा। अनतर दूसरा काढा लेना। गर्भधारण प्रारभ होते ही उस मास का काढा लेना प्रारभ करना उत्तम है।

क—अन्य सूचानाएँ—काढा प्रकार न १ समान।

१९	काढा न १ प्रथम मास का	(७ पुडियाँ)
२०	काढा न २ द्वितीय मास का	,,
२१	काढा न ३ तृतीय मास का	,,
२२	काढा न ४ चतुर्थ मास का	,,
२३	काढा न ५ पचम मास का	,,
२४	काढा न ६ पष्ठ मास का	,,
२५	काढा न ७ सप्तम मास का	,,
२६	काढा न ८ अप्टम मास का	,,
२७	काढा न ९ नवम मास का	,,
२८	काढा न १० दशम मास का	,,
२९	काढा न ११ सतत ज्वर पर-जो नही उतरता	,,
३०	काढा न १२ दिन मे कई बार आनेवाले ज्वर पर	,,
३१	काढा न १३ एक बार आनेवाले ज्वर पर	,,
३२	काढा न १४ एक दिन आडे के ज्वर पर	,,
३३	काढा न १५ दो दिन आडे आने के ज्वर पर	,,
३४	काढा न १६ कास रोग पर	,,

काढ़ा-प्रकार तीसरा

आयुर्वेद ग्रंथोक्त काढे बहुत ही गुणकारी होते है, परन्तु उनके अन्तर्गत विद्यमान सर्व वस्तु योग्य पद्धति से मिलाकर उनका काढा तैयार करके घर मे जमता नहीं है। इन असुविधा को ध्यान मे रखकर इन गुणकारी काढो की उनमे शक्ति को विशेष पद्धति से कायम रखते हुए काढे तैयार करवाए है। ताजे काढो के जैसे ही उनके गुणो का प्रभाव अनुभव मे आता है। काढो का चूर्ण भी भेजने की व्यवस्था हमारे यहाँ है।

१ अभयादिकषाय–(शाङ्र्गधर)

मुख्य द्रव्य–अभया, नागरमोथा (मुस्ता), धनिया, रक्तचदन, पद्मकाष्ठ, वासा, इन्द्रजव, उशीर, गुडूची, पहाडमूल, सोंठ, गुड, पिप्पली आदि। **मात्रा**–१ से ४ चम्मच, समभाग जल के साथ। **गुणधर्म**–यह कषाय दीपक, पाचक है। ज्वर मे मूत्रशुद्धि और शौच न होना, वायु का सरण, वात न होना, वमन होना इन विकारो पर इसका अच्छा उपयोग होता है। श्वास, तद्रा, अरुचि, इन विकारो पर भी यह उपयुक्त है।

२ आर्तवशुद्धिकषाय–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–देवदार, वेखड, सोंठ, पिप्पली, कायफल, नागरमोथा, (मुस्ता) किराततिक्त, धनियाँ, अतिविष, काला जीरा आदि। **मात्रा**–१ से २ चम्मच, समभाग जल में। **गुणधर्म**–स्त्रियो के आर्तव विकारो पर यह अच्छा उपयुक्त है। मासिक स्राव नियमित और स्वच्छ होता है।

३ जीर्णज्वर कषाय–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–गुडूची, शतावर, दशमूल, आदि। मात्रा–१ से ४ चम्मच, समभाग जल मे। **गुणधर्म**–इसका उपयोग जीर्ण ज्वर मे, अग्निमाद्य होने से प्लीहा-वृद्धि होने पर करे। इसके सेवन से क्षुधा अच्छी लगती है। पाचनशक्ति मे सुधार होता है।

४ दशमूल कषाय–(शाङ्र्गधर)

मुख्य द्रव्य–सालवण, पिठवण, रिंगणी, डोरली, गोक्षूर, वेल, ऐरण, शिवण, पाडल, टेटू, पिप्पली, दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, नागकेशर,

ककोल आदि। मात्रा–२ से ३ चम्मच, समभाग जल मे। **गुणधर्म**–यह वातश्लेष्म प्रधान दोषो मे उत्तम कार्य करता है। सन्निपातज्वर, सूतिका दोष, शोथ, शैत्य, भ्रम, स्वेद, कास, श्वास, हृदयशूल, कंठग्रह, पार्श्वशूल, तंद्रा, शिर शूल मे लाभप्रद है। उत्तम प्रकार का शूलघ्न है।

५ दार्व्यादिकषाय –(शाङ्गंधर)

मुख्य द्रव्य–दारुहरिद्रा, रसांजन, नागरमोथा, भिलावा, बेलफल, अडुसा, कडूकिरात, दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, नागकेशर, ककोल, आदि। **मात्रा**–२ से ३ चम्मच, समभाग जल मे। **गुणधर्म**–शूलयुक्त प्रदर मे हितावह है। वातज या श्लेष्मज प्रदरपर या पित्तज या रक्तप्रदर मे उत्तम कार्य करता है।

६ देवदार्व्यादिकषाय–(शाङ्गंधर)

मुख्य द्रव्य–देवदार, वेखड, सोठ, पिप्पली, कायफल, मुस्ता, काडीकिरात, धनियाँ, अतिविष, काला जीरा आदि। मात्रा – २ से ३ चम्मच, समभाग जल मे। **गुणधर्म**–सूतिका विकार मे हितावह है। सूतिका शूल, कास, ज्वर, मूर्छा ,कंप, शिर शूल मे उपयोगी हैं।

७ परिपाठादिकषाय–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–परिपाठ, यष्टिमधु, वाल, हरीतकी, गुलाब कली, हरिद्रा, धनियाँ, दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, नागकेशर आदि। **मात्रा**–२ से ३ चम्मच, समभाग जल मे। **गुणधर्म**–चेचक और उनके उपद्रवो तथा बालको के रोगो मे लाभदायक हैं।

८ पथ्यादिकषाय–(शाङ्गंधर)

मुख्य द्रव्य–हरीतकी, रक्तरोहिडा, पिप्पली, दारुहरिद्रा आदि। **मात्रा**–१ से २ चम्मच, समभाग जल मे। **गुणधर्म**–प्लीहा, उदर, गुल्म, शीर्षशूल, कोष्ठ-बद्धता मे हितवाह है।

९ पुनर्नवादिकषाय–(शाङ्गंधर)

मुख्य द्रव्य–पुनर्नवा, गुडूची, देवदार, हरीतकी , सोठ, दारुहरिद्रा, हरिद्रा, चित्रक, भारंगमूल, दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, नागकेशर आदि। **मात्रा**–२ से ३ चम्मच, समभाग जल मे। **गुणधर्म**–शोथ और उदर रोगो मे लाभदायक

है। उदर रोगों में इस में गोमूत्र मिलाकर तथा गुग्गुल को भी मिश्रित कर लेना चाहिये।

१० महामंजिष्ठादिकषाय–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य– मजिष्ठा, नागरमोथा, कुडाछाल, गुडूची, कोष्ठ, सोठ, भारगमूल, रिंगणी, वेखड, निब, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, त्रिफला, चित्रक, शतावर, पिप्पली, देवदार, रक्तचदन, दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, नागकेशर आदि। **मात्रा**– १ से २ चम्मच, समभाग जल मे। **गुणधर्म**–इसे "बृहन्मजिष्ठादिकषाय" भी कहते हैं। इसका उपयोग कुष्ठ, वातरक्त, उपदश श्लीपद, सुप्ति, पक्षाघात, मेदोदोप, नेत्ररोगो मे करना चाहिये। पिप्पली गुग्गुल मिश्र कर लेना चाहिये।

११ मंजिष्ठादि काढ़ा–

गुणधर्म–महामजिष्ठादि काढा के जैसे परन्तु सौम्य प्रमाण मे गुण देता है।

१२ महारास्नादि काढ़ा–(शा.)

मात्रा–१ से २ तो (२ से ३ चम्मच) **गुणधर्म**–शरीर भर मे जड जमाके बैठे हुए वातविकार, एव अन्य सर्व प्रकार के तीव्र व जीर्ण वात विकारो पर यह एक अनुभविक व गुणदायक सुप्रसिद्ध काढा है। जैसे–आमवात, सधिवात, सर्वागवात, कम्पवायु, अर्धागवायु, अर्दितवायु, गृध्रसी वगैरह सर्व प्रकार के वात-रोग इसमे निश्चित सुधर जाते हैं। **अनुपान**–दुगने गरम पानी मे २-३ बार सतत नियमित रुप से इसका सेवन करना।

१३ महासुदर्शनकषाय–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–काडी किरात, हरिद्रा, दारुहरिद्रा आदि। **मात्रा**–१ से ४ चम्मच समभाग जल मे। **गुणधर्म**–इसका उपयोग पुराने मलेरिया मे विशेषत पुनश्च आनेवाले ज्वर मे अच्छा होता है। वैसे ही क्षुधा सम्यक् लगाकर पाचनशक्ति बढती है।

१४ रास्नादिकषाय–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–रास्ना, एरडमूल, गोक्षुर, आदि। **मात्रा**–१ से ३ चम्मच, समभाग जल मे। **गुणधर्म**–यह आमवात, सधिवात, सर्वांगवात आदि सब वात विकारो पर हितावह है।

१५ सुदर्शनकषाय–(शार्ङ्गधर)

मुख्य द्रव्य–काडी किरात, कडुनिंब, गुडूची आदि। **मात्रा**–१ से २ चम्मच, समभाग जल मे। **गुणधर्म**–यह पुराने मलेरिया मे हितावह है। इससे पाचनशक्ति बढती है।

अर्क

१ कृमिविकारपर अर्क (वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–खोरासनी अजवायन, सादा अजवायन, विडग, सोठ काली मिर्च, पिप्पली आदि। मात्रा– ।। से १ तो। गुणधर्म–इसे सेवन करने से महीन कृमि गिरते है, सतत सेवन करने से कृमि होने की आदत नष्ट होती है।

२ गुलवेल (गुडूची) अर्क (वृ. वै.)

मात्रा– ।।- से १ तो। **गुणधर्म**–जीर्ण मलेरिया, प्लीहावृद्धि, जीर्णज्वर, सब प्रकार के विषमज्वर इन पर यह अप्रतिम दवा है।

३ गंगावती अर्क–(वृ. वै.)

मात्रा– ।।- से १ तो **गुणधर्म**–रक्तार्श मे अत्यत उपयुक्त है। दाह और दर्द तुरन्त कम होता है। रक्त गिरना रुक जाता है।

४ ब्राह्मी अर्क–(वृ. वै.)

मात्रा– १ तो **गुणधर्म**–शीत गुणदायी है तथा मस्तिष्क को शाति पहुँचाता है। इससे भ्रम, अपस्मारादि मस्तिष्क विकारो मे लाभदायक है।

५ बडीशेप अर्क नं. १

मात्रा–१ से ४ बूंद। **गुणधर्म**–आमपाचक और दीपक, आमातिसार मे लाभदायक तथा उदर की मरोड को शीघ्र, कम करता है।

६ बडीशेप अर्क नं २–(वृ. वै.)

मात्रा– १ से १।। तो। गुणधर्म–नं १ के अनुसार।

७ सुदर्शन अर्क –(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–गुडूची, पिप्पलीमूल, पिप्पली, कटूक रोहिणी, हरड, सोठ, लोग, कडे नीम की छाल, चन्दन, सफेद चन्दन, किराततिक्त आदि। मात्रा– -।।- से १ तो गुणधर्म–किसी भी कारण से होनेवाला सूतिका ज्वर (Septic Fever) मे लाभप्रद हैं।

८ पुदीना अर्क–(वृ. वै.)

मात्रा– -।- से -।।- तो । गुणधर्म–दीपक, पाचक और स्वेदल है।

९ ओवा अर्क (वृ. वै.)

मात्रा– -।।- से १ तो । **गुणधर्म**–इससे पेट फूलना (आनाह) कम होता है। इसके व्यतिरिक्त अन्नपाचन मे मदद होती है।

१० गुलाब जल–

ताजे और स्वादपूर्ण गुलाव के फूलो से वनाया जाता है। पहले से तैयार किये गुलाव जल मे और नये गुलाव के फूल मिलाकर पुनश्च वाष्पीभवन कृति द्वारा यह गुलाव जल तैयार होता है। इस प्रकार लगाकर तीन समय (Tripple Distilled) इसी गुलावी जल मे और नये गुलाव के फूल मिलाकर वनाया जाता है। **गुणधर्म**–अगर किसी वजह से आँखे लाल पड गयी हो तो आँखो मे डालने से ठडक मिलती है। किसी सभा-समय मे एक सुगधित द्रव्य के नाते छिटकने को अच्छा है। जाड़े के मौसम मे ग्लिसरीन मे मिलाकर शरीर की मालिश करे तो त्वचा कोमल रहती है फूटती नही है।

घृत

सर्व स्नेहयुक्त पदार्थो मे घी श्रेष्ठतम है। जव रोगी कृश, रुक्ष, मदाग्नि, मल का वहुत सख्त होना, ये सव बीमारिया जव पुरानी सी वनती है और प्रकृति जव नाजुक सी रहती है उससे कोई दवा लागू नही होती तव मुख्य दवा सिद्ध घृतो के साथ या स्वतत्र रूप से दे सकते है।

जव स्वतत्र रूप से सिद्ध घृत देना आवश्यक होता है तव १० तो गरम दूध या पानी मे लेना चाहिए। ये घृत वहुत दिन रखने से इन मे एक तरह का असह्य गध आती है, इसलिये आर्डर आने पर ही तैयार करके भेजा जाता है।

१ अमृतप्राश घृत–(अष्टांग हृदय का. चि.)

मुख्य द्रव्य–जीवती, काकोली क्षीर, काकोली, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, शतावर, सफेद पुनर्नवा, कवचवीज, पिप्पली, सिघाडे, गोक्षुर, अक्रोड, वदामगिरी, पिस्ते, किसमिस, चारोली, घृत, दूध, आमलकी रस, अजामास रस, गन्ने का रस, विदारीकद आदि। **गुणधर्म**–यह अमृतप्राशघृत अमृत के सरीखा लाभदायक है। सुधावत् या अमृता के समान रुचिकर है। यह दूध और मासरस भक्षको को प्राशन करना चाहिये। यह वीर्यक्षयी, उर क्षती, क्षयी, अशक्त, रोग के कारण कृश हुआ हो, निस्तेज और स्वरहीन हो तो आदमी को पुष्ट करता है। कास, हिक्का ज्वरश्वास, तृष्णा, रक्तपित्त, छर्दि, मूर्च्छा, हृद्रोग और मूत्ररोग इनको नष्ट करता है।

२ अश्वगंधादि घृत–

मुख्य द्रव्य–असगध घृत आदि। **मात्रा**– -।।- से १ तो **गुणधर्म**–क्षीणशुक्र, मासहीन, दुर्वल रोगियो के लिये अमृततुल्य है। अतिवृष्य, ओजवृद्धिकारक, कातिदायक पाच प्रकार के कास, विपमज्यर क्षय मे लाभदायक है।

३ कल्याणक घृत–(अष्टांग हृदय)

मुख्य द्रव्य–त्रिफला, कडुवृदावन, नागरमोथा, देवदारू, हरिद्रा, दारूहरिद्रा सालवण, पिठवण, कोष्ट, मजिष्ठा, नागकेशर, दतीमूल, पद्मकाष्ट, सफेदचदन, घृत आदि। मात्रा–.-।।- से १ तो **गुणधर्म**– यह घृत भूतोन्माद, उन्माद, अपस्मार, खांसी, पाडुरोग, विष, शोथ, खाज, मूर्च्छा, मेह, ताप को दूर करता है।

जो डरकर वोलता है ऐसे रोगी के लिये लाभप्रद है। इसके सेवन से शक्ति, पुष्टि, सौंदर्य प्राप्त होकर काति मुदर होती है। आयुष्यवर्धक और सब पुसेबनीमे श्रेष्ठ है। विशेप उपयोग उन्मादपर।

४ गोक्षुरादि घृत–(यो. र.)

मुख्य द्रव्य–गोक्षुर, धमामा, मालवण, पिठवण, मापपर्णी, मुग्दपर्णी, पित्त-पापडा, बालमूल, घृत आदि। मात्रा– -।।- से १ तो। **गुणधर्म**–यह क्षय के ज्वर, दाह, श्वास, कास, पार्श्वशूल, अतिसार, छर्दि आदि उपद्रवो मे उपयुक्त है।

५ चांगेरी घृत–(भा. भै. र.)

मुख्य द्रव्य–आम्लचुका, बेर, दहिकी साय, सोठ, यवक्षार, घृत आदि। **मात्रा**– -।।- से १ तो। **गुणधर्म**–इसका विशेप कार्य गुदा का बाहर निकलने मे होता है। इसके अतिरिक्त अतिसार, प्रवाहिका, मूत्रकुच्छ, मग्रहणी, अर्श, बद्धकोष्ठ मे लाभप्रद है। यह वात, कफनाशक है। उपयोग अतर्वाह्य।

६ त्रिफला घृत–(भा. भै. र.)

मुख्य द्रव्य–त्रिफला, अडूसा, भृगराज, अजादुग्ध, घृत, पिप्पली, मुनक्का, सफेद चदन, सेधानमक, वला, काकोली, क्षीरकाकोली, मेदा, सोठ, नीलकमल पुनर्नवा, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, यष्टिमधु आदि। मात्रा– -।।- से १ तो **गुणधर्म**–आँख को कड आना, आँख से पानी आना, आदि नेत्रविकार पर यह उपयुक्त है।

७ फल घृत–(भा. भै. र.)

मुख्य द्रव्य–हरड, वहेडा, आमलकी, यष्टिमधु, हलदी, दारुहलदी, कटुकरोहिणी, विडग, पिप्पली मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, सफेद चदन, वशलोचन, दतीमूल, देवदार, घृत, दूध आदि। **मात्रा**– -।।- से १ तो। **गुणधर्म**–यह स्त्रियो के लिये विशेपत लाभदायक है। इसके सेवन से गर्भाशय-सवधी सव विकार दूर होकर वारबार गर्भपात होने की जो आदत पड जाती है वह दूर होती है।

८ ब्राह्मी घृत–(भा. भै. र.)

मुख्यद्रव्य–ब्राह्मी का रस, हलदी, त्रिवृत्त, हरड, पिप्पली, विडग. सेधानमक, शर्करा, वचा, घृत आदि। **मात्रा**– -।।- से १ तो। **गुणधर्म**–इसे

सारस्वत घृत कहते है, सेवन करने से वाक्शुद्धि होती है। काती सतेज बनती है। स्मृति और मेधा वृद्धी होती है। वैसे ही सब प्रकार के त्वकरोग, गुल्म अर्श, कास इन पर अच्छा उपयोग होता है।

९ महातिक्तक घृत–(अ. हृ.)

मुख्य द्रव्य–सातवीण, अतिस, कटुकरोहिणी, पित्तपापडा, पद्मकाष्ठ, कडूवृन्दावन, अडूसा, शतावर, मूर्वा, चदन, दारुहलदी, वाला, पिप्पली, त्रिफला, पिप्पलीमल, आमलकी ,घृत आदि। **मात्रा**– -।।- से १ तो। **गुणधर्म**–अधिकतर तिक्त घृत के समान कार्य करता है। सब प्रकार के त्वचा रोग मे उत्तम कार्य करता है। कुष्ठ, रक्तपित्त, अर्श, विस्फोट, गडमाला, प्रमेहपीडिका कवाज, गुल्म मे लाभप्रद है। रक्त और पित्त दुष्टि को शीघ्र ही कम करता है। रक्त शुद्ध होकर दाह आदि का शमन होता है। इसका उपयोग सेवन करने और लगाने दोनो प्रकार से किया जाता है।

१० महावज्रक घृत–(अ. हृ.)

मुख्य द्रव्य–हरड, बहेडा, आमलकी, सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, रिगणी, डोरली, कटुकरोहिणी, दती, त्रिवृत्त, अतिस, घृत आदि। मात्रा– -।।-से १ तो.। **गुणधर्म**–वज्रकघृत के समान है। क्रूर कोश्ठवाले रोगियो को स्नेहन करके रेचन कराने का सफल कार्य करता है। लेखन गुणयुक्त होने से प्लीहा वृद्धि, अष्मरी और गुल्म मे उत्तम कार्य करता है।

११ सुकुमार घृत–(अ. हृ. चि.)

मुख्य द्रव्य–पुनर्नवा, दशमूल, क्षीरकाकोली, चदन, एरडमूल, दर्भमूल, घृत आदि। **मात्रा**-।।- से १ तो। **गुणधर्म**–सब धातुओ पर किसी भी अवस्था मे लाभप्रद है। सुकुमारो के लिये विशेष लाभप्रद है। विद्रधी, गुल्म, अर्श, योनिशूल, जीर्णशूल, वातरोग, कफरोग, वातरक्त, प्लीहा, विडबध आदि विकारो मे उत्तम कार्य करता है। शरीर मे कातिवर्धक और रसायन है।

अवलेह और पाक

ये अवलेह सर्वदा तैयार रहते है। सिर्फ पाक मँगाने की सूचना के वाद ४।६ दिन की अवधि मे तैयार करके प्राप्त हो सकते है; क्योकि ये पाक वहुत दिन तक टिके नही रहते है। अवलेह और पाक वापस नही लिये जाते है।

१ अगस्तिहरीतकी लेह–(अ. हृ.)

मुख्य द्रव्य–दशमूल, कवचवीज, कचोरा, चिकणामूल, भारगमूल, पिप्पलीमूल, गजपिप्पली, अपामार्गमूल, चित्रकमूल, पुष्करमूल, घी, पिप्पली, आदि। **मात्रा**–१ तो । **गुणधर्म**–कास, श्वास, क्षय, ज्वर, हिक्का, अर्श, अरुचि, प्रतिश्याय विषमज्वर, गुल्म मे लाभदायक है तथा वायु शक्तिवर्धक रसायन है।

२ आमलक्यादि लेह–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–आमलकी, शर्करा, केशर, इलायची, दालचीनी, जायफल, लोग आदि। **मात्रा**–१ से २ चम्मच। **गुणधर्म**–इससे भेजा शात होता है। वैसे ही दस्त साफ होता है और भूख अच्छी लगती है। रक्तपित्त, आम्लपित्त, तृषा, दाह, नासागत रक्तपित्त इन पर अत्यत उपयुक्त है। यह लेह धूप काल मे भी ले सकते है।

३ अमृतभल्लातक पाक–(भा. भै. र.)

मुख्य द्रव्य–भल्लातक, गौदुग्ध, शर्करा, घी, केशर, लोहभस्म, वगभस्म, कर्पूर, त्रिकटु, त्रिफला, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, चदन, वाला, लोग आदि। **गुणधर्म**–महाकुष्ठ, चकत्ते, खाज, दाद आदि रक्त के विकार, अग्निमाद्य, वातरक्त, वातरोग मे लाभप्रद है। विचारपूर्वक सेवन करना चाहिये। त्वचारोग और महाकुष्ठादि रोगो मे अत्यत लाभप्रद। प्रात काल सेवन कर के दूध का सेवन करना चाहिये। इसमे भिलावा प्रमुख द्रव्य होने से वातकफात्मक विकारो मे लाभदायक है। कफ के कारण जो मदाग्नि हो जाती है उसे शीघ्र ही प्रज्वलित करके पाचन-क्रिया व्यवस्थित होने लगती है और वलवृद्धि होने लगती है। शुष्कार्श पर लाभदायक है। भिलावा उष्ण गुणयुक्त होने से इसके सेवन काल मे उष्ण पदार्थो का सेवन नही करना चाहिये। विशेषत कुलथी, दही, सूक्त, मद्य,

तैल मालिश, सेक, आदि का सेवन नहीं करे। **सूचना**–गर्भवती और बालकों को इसका सेवन नहीं करना चाहिये। **अनुपान**–दूध।

४ अंजीरपाक–(बृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–अजीर, बदाम, दूध, शर्करा, चारोली, पिस्ते, बेदाना, इलायची, दालचीनी, पिप्पलीचूर्ण आदि। **मात्रा**–१ से २ तोला। **गुणधर्म**–इससे रक्तवृद्धि होती है। रक्तवृद्धि के कारण धातुवृद्धि अच्छी होती है। शरीर बल बढ़ता है। शीतपाक होने के कारण इसके साथ दूध लेने की आवश्यकता नहीं है। लिया तो भी अच्छा ही है। सिर्फ एक दफा सुबह ले।

५ अश्वगंधपाक–(वै. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य–असगध, सोंठ, पिप्पली, काली मिर्च, दालचीनी तमालपत्र, लोंग, गोदुग्ध, शर्करा आदि। **गुणधर्म**–बलवर्धक और ठंडा है। बालकों के लिए बलदायक, उत्साहजनक और शरीरवृद्धिकारक है। स्त्रियों को गर्भदायक और गर्भपोषक है। प्रसूती को इसके सेवन से दुग्धोत्पत्ति होती है। पुरुषों को वीर्यवर्धक और पुष्टिदायक है। **गुण**–दीपक, पाचक, वृष्य, बल्य, वातकफ विकारनाशक, कास, श्वास, मेद, शूल, शोथ, पांडूरोग, ग्रहणी में लाभप्रद है। **अनुपान**–दूध।

६ एरंडीपाक–(वै. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य–एरंडी मगज, दूध घी, शर्करा, सोंठ, जीरा, काली मिर्च, इलायची, पिप्पली, देवदारु, दालचीनी, शतावर, नागकेशर तमालपत्र आदि। **मात्रा**– ।।- से १।। तो। **गुणधर्म**–अर्धांगवात, आमवात, संधिवात, कटिशूल, उरुस्तंभ, बस्तिगतवात, अंडवृद्धि, उदर, आनाह, बस्तिशूल में लाभप्रद है। मल-शुद्धि करके भूख भी बढ़ती है। **अनुपान**–एक टिकिया दूध के साथ सेवन करे।

७ कंदर्पपाक–(वै. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य–प्याज, दूध, घी, शर्करा, दालचीनी, जायफल, लोंग, केशर, जायपत्री, कवचबीज, ताम्रभस्म, आदि। **मात्रा**–१ से २ तो। **गुणधर्म**–कामोत्तेजक, धातुवर्धक, नपुंसकत्वनाशक है। रक्तस्राव, अपस्मार, उन्माद, नासिका से रक्त-स्राव आदि में लाभदायक है। **अनुपान**–एक टिकिया खाकर दूध पीना चाहिये।

८ कुटजावलेह–(कुडापाक) (शा. सं.)

मुख्य द्रव्य–कुटजछाल, गुड, मोचरस, मजिष्ठा, पाठा, इंद्रजव, अतीस,

त्रिफला, त्रिकटु, दालचीनी, बिडग, बाला, घी, उत्तम शहद आदि। **मात्रा**-।- से -।।- तो । **गुणधर्म**-अर्श, अतिसार, सग्रहणी, रक्तातिसार (खूनी आव), शोथ, रक्तार्श, गुदपाक, प्रवाहिका, आम्लपित्त, रक्तपित्त, कामला मे लाभप्रद है। अत्रो को बलदायक है। **अनुपान**-दूध के साथ सेवन करे।

९ कोहले पाक-(कुष्मांडपाक) (वै. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य-कुष्माड कीस, शर्करा, घी, पिप्पली, सोठ, जीरा, धनिया, तमालपत्र, इलायची, दालचीनी, आदि। **मात्रा**--।।-से १ तो । **गुणधर्म**-जीर्णज्वर, निर्वलता, कृशता, अम्लपित्त, अग्निमाद्य, धातुस्राव, रक्तपित्त, क्षय, ज्वर, छर्दि, श्वास, कास, उर क्षत मे लाभदायक है। **अनुपान**-दूध के साथ सेवन करे।

१० कुष्मांडावलेह-(वै. सा. सं.)

मात्रा-१ से २ तो । **गुणधर्म**-कुष्माड पाक से कुछ अल्प गुणदायी है। इसमे भस्मो का मिश्रण नही है।

११ चोपचिन्यादिपाक-(यो. र.)

मुख्य द्रव्य-चोपचीनी, अक्कलकारा दालचीनी, लोग, पिप्पली, पिप्पलमूल, काली मिर्च, सोठ, शर्करा, घी आदि। **मात्रा**-१ से १।। तो । **गुणधर्म**-अति बलदायक तथा व्रण, कुष्ठ, वातरोग, भगदर, उपदश, धातुजन्य, प्रतिश्याय, कास, क्षय मे लाभदायक है। **अनुपान**-रात को भोजनोपरान्त दो घटे मे इसका दूध के साथ सेवन करे।

१२ द्राक्षावलेह-(द्राक्षापाक) (वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य-द्राक्षा, शर्करा, केशर, पिप्पली, काली मिर्च, घी, शहद आदि। **मात्रा**-१ तो । **गुणधर्म**-रक्तपित्त, आम्लपित्त, दाह, तृष्णा, वमन, नाक मे रक्त-स्राव मे लाभप्रद है। इसके सेवन से शौचशुद्धि होकर, क्षुधावृद्धि होकर वीर्यवर्धक कार्य भी करता है। गर्मी की ऋतु मे भी इसका सेवन किया जा सकता है।

१३ दाडिमावलेह-(अनारपाक) (वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य-दाडिम रस, शर्करा। **गुणधर्म**-पित्तशामक, दाह नाशक, अनु-पान के लिये उपयुक्त।

१४ बदामपाक (भस्मयुक्त)–(वै. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य–बदाम की गिरी, खोवा, बेदाना, लौंग, जातिफल, केशर, वंशलोचन, इलायची, दालचीनी, नागकेशर, अभ्रकभस्म, प्रवालभस्म, सुवर्णमाक्षिक, वंगभस्म, शर्करा, घी आदि। **मात्रा**–।- से १ तो। **गुणधर्म**–अत्यंत पौष्टिक तथा क्षुधावर्धक है। मस्तिष्क निर्बलता, नेत्र विकारों में भी लाभदायक है।

१५ रिंगणी अवलेह (कंटकार्यावलेह)–(भा. भै. र.)

मुख्य द्रव्य–रिंगणी, चित्रक, पिप्पलमूल, सोंठ, काली मिर्च, पिप्पली, मुस्ता, धमासा, पुष्करमूल, वाचा, वंशलोचन, घी, शहद, शर्करा, आदि। **मात्रा**–१ से २ चम्मच। **गुणधर्म**–इससे हिक्का, श्वास, कास आदि सब प्रकार के कास तुरंत अच्छे होते हैं। **अनुपान**–दूध या जल।

१६ लहसुन पाक–(वै. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य–शुद्ध लहसुन, दूध, घी, रास्ना, कचोरा, सोंठ, देवदारु, चित्रक, पिप्पली, विडंग, शर्करा, आदि। **मात्रा**–१ तो। **गुणधर्म**–यह उत्तम रसायन है। आमवात, आढ्यवात, कटिवात, उरुस्तंभ, हृद्रोग, संधिशैथिल्य और सब प्रकार के वातविकार पर उपयुक्त है।

१७ वासावलेह–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–वासा, शर्करा, पिप्पली, घी, शहद आदि। **मात्रा**–२ तो। **गुणधर्म**–कास, श्वास, रक्तपित्त, कुकरखाँसी (Whooping cough), क्षय, रक्तार्श, उरःक्षत, हृदयशूल, पार्श्वशूल, इन पर उपयुक्त है। फेफडों को बलदायक है। दूध के साथ।

१८ व्याघ्रीहरीतकीलेह–(निघंटुरत्नाकर)

मुख्य द्रव्य–रिंगणी, सुरवारी हिरडा, गुड, दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, नागकेशर, पिप्पली, काली मिर्च, यवक्षार, शहद आदि। **मात्रा**–।- से १ तो.। **गुणधर्म**–यह अवलेह कास और उरस्थ विकार इन पर अत्यंत उपयुक्त है। इससे कफ तुरन्त निकलता है। इसका बारबार सेवन करे। **अनुपान**–दूध।

१९ सौभाग्य सुंठीपाक–(वै. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य–सोंठ, दूध, घृत, शर्करा, कमरकस, नागकेशर, वंशलोचन।

अक्कलकारा, कालीमुसली, सालममिश्री, सफेदमुसली, ,जातिफल, जायपत्री, पिप्पली, इलायची, काली मिर्च, केशर, खसखस, बदाम गिरी आदि । **मात्रा**– -।।- तोला । **गुणधर्म**–यह सूतिका के विकारो पर उत्तम है। अशक्तता, अग्निमाद्य, जीर्णज्वर, कास, श्वास, आमवात इन पर अच्छा उपयोग होता है। **अनुपान**–इसे खाने के बाद ऊपर से दूध लेना ।

२० सारिवावलेह–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–सारिवा, मजिष्ठा, गोक्षूर, दारुहरिद्रा, चोपचीनी, धमासा, आमलकी, यष्टिमधु, शर्करा, आदि । **मात्रा**–१ तोला । **गुणधर्म**–उपदश, प्रमेह, इनके शेष विकार, रक्तपित्त, अतर्दाह, सूजन आदि पर उपयुक्त है। **अनुपान**–सारिवासव के अनुसार।

२१ सालम्मिश्री पाक–(वृ .वै.)

मुख्य द्रव्य–सालममिश्री, शर्करा, जायफल, लोग, जायपत्री, यष्टिमधु, पिप्पली, पिप्पलमूल, सोठ, नागकेशर, इलायची, आक्रोड, मुसली, चदन, कर्पूर, कस्तूरी, केशर, लोहभस्म, अभ्रक, वगभस्म, आदि। **मात्रा**–अग्निवल देखकर सुवह १ से १।। तोला पाक खाना और ऊपर से एक पाव दूध पीना । **गुणधर्म**–इससे स्वप्नावस्था और उससे दिमाग खाली होना, भ्रम, निद्रानाश, रक्तविकृति आदि विकार नष्ट होते है और धातुवृद्धि होती है। ताकत आती है। दिमाग भर आता है। यह पाक सभी ऋतुओ मे किसी को भी हितकर है ।

२२ सुपारीपाक–(र. यो. सा.)

मुख्य द्रव्य–सुपारी, गोदुग्ध, घृत, शर्करा, जायफल, जायपत्री, सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, चवक, चित्रक, हरड, बिभीतक, आमलकी, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, वशलोचन, सफेदमुसली, असगध, वाला, शतावर, अभ्रकभस्म, खसखस, वग लोग, आदि। **गुणधर्म**–यह सूतिका के विकारो मे उपयुक्त है। हररोज सुबह एक और शाम को एक टिकिया खाकर उस पर आधा कप दूध लीजिये । इससे मुखशुद्धि होकर अन्नपाचन सुधरता है और शरीर वल ओर तन्दुरुस्ती के लिये सहाय्यकारक है। **अनपान**–दूध ।

सिद्ध तैल

सिद्ध तैलो को सामान्यत शरीर पर लगाकर मालिश की जाती है।

१ अणु तैल–(भा. भै. र.)

मुख्य द्रव्य–रक्तचदन, अगरु, तमालपत्र, बिल्वफल, मुस्ता, जीवती, रेणुका, कमल, केसर, शतावर, दारुहरिद्रा, यष्टिमधु, बलामूल, नीलकमल, दालचीनी, पिठवण, रिगणी, पीतवाला आदि। **गुणधर्म**–त्रिदोपहारक, इद्रियबलवर्धक, शिर शुलनाशक, नासिका मे कुछ बूंद डालना चाहिये।

२ इरिमेदादि तैल–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–खदिर छाल (रक्त), कल्प द्रव्य, आदि। **गुणधर्म**–मुखरोग तथा दतरोगो मे अत्यत लाभदायक है। श्यामदत, दतहर्ण, सौषिर, विद्रधी, कृमिदत, दत स्फुरण, मुखदुर्गंधि विकारो मे उपयोग करना।

३ उदेल तैल–(बृ. वै.)

गुणधर्म–किसी भी प्रकार का सधिवात तथा हाथ पैरो की पीडा मे यह सफल कार्य करता है।

४ नीम तैल (कडूनीम तैल)–(बृ. वै.)

गुणधर्म–यह उत्तम रक्तशोधक है। त्वचा के रोग, खाज, खुजली, दाद, चट्टे आदि मे ऊपर से लगाना चाहिये। बालो मे जूँ हो जाना तथा नाडीव्रण मे तैल की बत्ती रखने से व्रणरोपक तथा जतुघ्न कार्य करता है। विशेषत कुष्ठ-नाशक भी है।

५ करंजेल तैल–(बृ. वै.)

गुणधर्म–खाज, खुजली, जैसे त्वचा विकार, जूँ-लीक जैसे कृमि तथा नाक और कान के कृमिनाशक है।

६ कर्ण तैल–(बृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–टेटूमूल, तिल का तैल आदि। **गुणधर्म**–कर्णनाद, कर्णशूल मे २–२ बूंद कान मे डालने से वेदना शीघ्र कम हो जाती है।

७ कर्पुरादि तैल–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–कर्पूर, वेदनाहर, तिल का तैल आदि। **गुणधर्म**–जुकाम, शिरपीडा, दतपीडा, छाती मे चमक होना, पीठ मे पीडा, सधि पीडा, शरीर के विशिष्ठ अग मे भारीपन आकर वह हिस्सा ठडा प्रतीत होना आदि मे बाह्योपचार के लिये उत्तम हैं। फुफ्फुस सन्निपात, वातकफप्रधानज्वर और छाती के अन्य विकारो मे तथा आत्र सन्निपात मे भी सेवन कराया जा सकता हैं। इससे रोगी को शीघ्र ही बडा आराम मिलता हैं। **उपयोग**–बाह्योपचार १ भाग कर्पूरादि तैल को ३ भाग तिल तैल मे मिलाकर मालिश करके गरम वस्त्र से बधन करे। सेवन के लिये थोडी-सी शर्करा मे ३ बूद डालकर दिन मे तीन बार लेना चाहिये। दतरोग, दत पीडा, दातो का हिलना, कीडा लगना, दाढ मे शूल, दातो से पूय स्राव, आदि मे मुख धोने के बाद कपास से लगाना चाहिये। पायोरिया मे कपास से रोज इसे लगाना चाहिये।

८ कासिसादि तैल–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–हिराकस, कललावी, कोष्ठ, सोठ, पिप्पली, सेधानमक, मैनसील, कन्हेर, विडग, चित्रक, वासा, दतीमूल, स्नुहीक्षीर, अर्कक्षीर आदि। **गुणधर्म**–यह तैल अर्श के मोड पर ऊपर से लगावे। उससे मोड गिर पडते है। और अर्श भी अच्छा होता है।

९ कॉगनी तैल–(मालकॉगनी) (वृ. वै.)

गुणधर्म–सब प्रकार के वातविकार पर मलने के लिये इसका उपयोग करे।

१० चंदनबलालाक्षादि तैल–(भा. भा. र)

मुख्य द्रव्य–रक्त चदन, बलामूल, लाख, पीत वाला, तिल तैल आदि। **गुणधर्म**–यह तैल प्रसूती के लिये अत्यत हितावह है। इसके उपयोग से वात विकार होने का भय नही रहता हैं। क्षय मे उत्तम दाहनाशक तथा पाडुरोग मे ज्वर नाशक कार्य करता है।

११ चन्दन तैल–(वृ. वै.)

अनुपान–शर्करा के साथ मिलाकर २ से १० बूंद। **गुणधर्म**–मूत्रवह स्रोतस का दाह शीघ्र कम हो जाता है। सूजाक मे हितावह हैं।

१२ चन्दनादि तैल (भा. भै. र.)

मुख्य द्रव्य—रक्तचदन, कालावाला, नखला, कोष्ठ, यष्टिमधु, पत्थरखेर, इलायची, वृहत् अगरु, केसर, पद्मकाष्ठ, मजिष्ठा, देवदार, तिक्त परवर, नागकेशर, दालचीनी, रेणुकबीज, तमालपत्र, वाला, विल्व, ककोल, चदन, मुस्ता आदि। गुणधर्म—अपस्मार, ज्वर, उन्माद, ग्रहबाधानाशक, आयुष्यवर्धक, पुष्टिदायक तथा रक्तपित्त, क्षयनाशक है।

१३ जात्यादि तैल (भा. भै र.)

मुख्य द्रव्य—जाईपत्र, मदनफल, रिंगणी, गोक्षुर, मजिष्ठा, लोध्र खादीर, यष्टि-मधु, तिल का तैल आदि। **गुणधर्म**—इसका उपयोग दतोद्भवजन्य विकारो पर होता है। विशेषत दत के नाडी व्रण पर निश्चित लाभदायक है। नाडी व्रण पर स्वच्छ कपास पिचू लेकर तैल मे भिगाकर ३ या ४ बूद डाले और पिचू रखे।

१४ ज्योतिष्मति तैल—(वृ. वै.)

गुणधर्म—व्रण मे कृमि पड जाना, कान मे कीडा, चीटी आदि जाने पर डालने से लाभ होता है। अपस्मार, उन्माद, खाज मे बूंद के प्रमाण से करना चाहिये।

१५ दालचीनी तैल—(वृ. वै.)

गुणधर्म—जुकाम, शिरपीडा मे वाह्योपचार के लिये हितावह है।

१६ नारायण तैल—(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य—बिल्वमूल, ऐरण, टेटू, पाठा, पारिभद्रक, चादवेल, असगध, रिंगणीमूल, डोरलीमूल, बलामूल, अतिबला, गौक्षुर (गोखरू), सफेदवसू, गोदुग्ध, शतावररस, तिल का तैल आदि। **गुणधर्म**—यह एक प्रसिद्ध तैल है। आमवात, पक्षाघात सधिवात, मुख, हाथ पैर के वायु विकार, शोथ, पीडा, आत्रवृद्धि, अस्थि की कमजोरी, अवयव शुष्क होना, निर्बल होना आदि विकारो मे अत्यत लाभप्रद है। शुष्क अवयवो पर मर्दन करके सेकना चाहिये। १—२ महीने सतत उपयोग करने से वात कम होकर पुष्टता प्राप्त होती है।

१७ निर्गुण्डयादि तैल—(भै. र.)

मुख्य द्रव्य—निर्गुंडी रस, कललावी। तिल का तैल आदि। **गुणधर्म**—उत्तम वातहर है। मर्दन करके सेकना चाहिये। गडमाला और उर्ध्व जतुस्थान की

ग्रथियो में इसका नस्य करे। इससे स्नेहन होकर रोग धीरे-धीरे शात होता जाता है।

१८. बदाम तैल–(वृ. वै.)

गुणधर्म–इसका उपयोग शिर मर्दन के लिये करे। इससे दिमाग शात रहता है और निद्रा अच्छी आती है। नासा रोग मे नस्य के लिये इसका उपयोग करना ठीक है। मर्दन के लिये भी उपयोग करे।

१९ बला तैल–(अष्टांगहृदय)

मुख्य द्रव्य–बलामूल, दशमूल, गोदुग्ध, यव, बेर, कुलित्थ, तिलक तैल आदि। **गुणधर्म**–सूतिका बालको की अस्थि वृद्धि के लिये हितवाह है। योनिरोग, उर क्षत, क्षय, ज्वर, गुल्म, उन्माद, मूत्राघात, आत्रवृद्धि मे लाभदायक है।

२० बिल्वादि तैल–(शाडर्गधर)

मुख्य द्रव्य–बिल्वमज्जा, अजादुग्ध, तिल का तैल आदि। **गुणधर्म**–कर्णनाद और कर्णबाधिर्य मे लाभप्रद है।

२१ ब्राह्मी तैल–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–ब्राह्मीपर्ण, कर्पूरकाचरी, नारियल का तैल, ऊद आदि। **गुणधर्म**–मस्तिष्क विकारो मे यह बालक तथा वृद्धो को समान रीति से उपयोगी है। सेवन भी करने योग्य है। अति जागरण बौद्धिक श्रम मे निद्रानाश, बुद्धिमाद्य, मन की चचलता, बेचैनी, उन्माद, स्वभाव मे चिडचिडापन, अपस्मार मे लाभदायक है।

२२ बृहन्मरिच्यादि तैल–(भा. भै. र.)

मुख्य द्रव्य–काली मिर्च, अर्कक्षीर, कललावी, कन्हेर, हरीतकी, बिभीतक, आमलकी, दतीमूल, हरिताल, देवदारु, हरिद्रा, दारुहलदी, जटामासी, चदन, बछनाग, शिरस तैल आदि। **गुणधर्म**–खाज, दाद, विस्फोट, नीलिका, बालो का पकना, झुर्रिया पडना आदि। चर्म विकारो मे अत्यत लाभप्रद है। इससे मृदुता शीघ्र आती है। जानवरो को भी वातविकार हो जाने पर यह उन पर मर्दन करने से लाभ पहुँचाता है।

२८ लाक्षादि तैल–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–लाग, पिप्पली, दहिकी माय, तिल का तैल आदि। **गुणधर्म**–विपमज्वर, क्षय, रक्तपित्त, व्रण आदि मे लाभदायक है। बाल, वृद्ध और गर्भवती स्त्रियों को अति लाभप्रद है।

२९ विषगर्भ तैल–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–पुनर्नवा, एरडमूल, असगध, चित्रक, दशमूल, शतावर, सारिवा, चिकणामूल, अतिबला, तिल तैल आदि। **गुणधर्म**–इससे सब शरीर मर्दन करने से सब प्रकार के वात विकार, गृध्रसी, कटिवात, सधिवात, सर्वागवात, कर्णनाद ये विकार अच्छे होते है।

३० वातनाशक तैल–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–तेलियावछनाग, गधक, तिल तैल आदि। **गुणधर्म**–आमवात, सधिवात, हनुस्तभ, कलायखज, स्नायु की जकडन आदि तथा वातविकारो मे लाभप्रद है। यह अत्यत वीर्यवान, शोथनाशक और शिराओ की जकड को कम करनेवाला है। नवीन वातविकार मे तो शीघ्र कार्य करता है। **सूचना**–इसको सेवन के काम मे नही लाना चाहिये। नेत्रो को नही लगाना चाहिये। केवल बाहरी उपयोग के लिये ही है।

३१ वेदनाहर तैल

गुणधर्म–इस तैल की मालिश मे अस्थि, सधि, दत, शीर्ष आदि स्थान की पीडा मे शीघ्र ही कमी हो जाती है।

३२ क्षार तैल–(शाङ्गधर)

मुख्य द्रव्य–डिगन्या क्षार, सज्जी, यवक्षार, सेधानमक, सौवर्चल, बीड-लवण, सामुद्र, सावर, हिग, शिगरुछाल, सोठ, देवदारु, वचा, रसाजन, केले का रस आदि। **गुणधर्म**–कर्णस्राव, कर्णशूल, बधिरता, मुखरोग, कर्णरोग, कर्णनाद, आदि मे कान मे डालकर ऊपर भी मलना चाहिये।

नस्य (सुँघनी)

१ अर्धशिशीपर नस्य–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–[illegible] अर्क, [illegible] आदि। गुणधर्म–[illegible] है। [illegible] में [illegible] नाक में [illegible]।

२ पीनसपर नस्य–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–[illegible], [illegible], [illegible] आदि। [illegible] चाहिये।

मरहम

मरहम लगाने के पूर्व पहले व्रण को साफ [illegible] करना चाहिए। खुजली, स्राव हो तो पहले साफ [illegible] से [illegible] चाहिए। अनंतर मरहम लगाना उत्तम है।

१ अग्निदग्ध व्रणोपर मरहम–(शार्ङ्गधर)

मुख्य द्रव्य–साधा मरहम, शुद्ध गैरिक, वंशलोचन, [illegible]। **गुणधर्म**–इसका उपयोग करने से दाह शांत होता है। व्रण शुद्ध होकर रोपण कार्य करता है। व्रणभाग मृदु रहता है। दग्ध व्रण शुष्क होता है। यह शीघ्र कार्य करता है।

२ इसब मरहम–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–पारिभद्रादि मरहम, कज्जली, शुद्ध मोरचूद, रसकपुष्प, दशांग-लेप आदि। **गुणधर्म**–यह इसब हुई जगह पर मलने के लिये उपयुक्त है।

३ उपदंश मरहम –(रसराज मरहम)–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–कपूर, वेदनाहर, रसराज, टंकणाम्ल, रसकपुष्प आदि। **गुणधर्म**–उपदंश के चट्टे शीघ्र ही मृदु हो जाते है। शुष्क होकर दाह कम होता है। चट्टो के लिये अति गुणकारी मरहम है।

४ खरूज मरहम–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–साधा मरहम, गधक, हलदी, रसराजह आदि। **गुणधर्म**–सूखी और गीली खुजली पर इसे लगाने से शीघ्र ही खुरड जमकर खाज ठीक हो जाती है।

५ गजकर्ण मरहम–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–साधा मरहम, रसराज, टकणाम्ल, हलदी, गधक आदि। **गुणधर्म**–नयी और पुरानी दाद पर मलने से लाभ पहुँचाता है। नेत्रो को इसका स्पर्श नही होना चाहिये।

६ गन्धक मरहम–(वृ. वै.)

गुणधर्म–खाज के मरहम के समान।

७ चाईपर मरहम(यो. र.)

मुख्य द्रव्य–पारिभद्रादि मरहम, हस्तीदत रक्षा आदि। रात को सोते समय इसे लगाना चाहिये। **गुणधर्म**–भृगराज तैल के अनुसार है।

८ पाददारी मरहम –(विपादिका) (वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–जीवती, मजिष्ठा, दारूहलदी, कपिला, मोरचूद, तिल तैल आदि। **गुणधर्म**–शीत काल मे या उष्ण काल मे पैरो मे दरारे पडना (बिबाई) इस विकार मे रात को सोते समय हाथ–पैर धोकर लगाना चाहिये। सुवह हाथ-पैरो को साफ धोना चाहिये। इसके सतत उपयोग से दूपितभाग मृदु हो जाता है। **सूचना**–पैर मे जव इस प्रकार की दरारे पड जाती है तब गाडी के चक्के का ओगन जैसे पदार्थ नही भरना चाहिये।

९ पारदादि मरहम–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–वेसलिन, कज्जली, आदि। **गुणधर्म**–जतुघ्न कार्य करता है।

१० पारिभद्रादि मरहम–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–कडू नीम का रस, स्वर्णक्षीरी, हलदी, तिल तैल आदि। **गुणधर्म**–छाजन, गजकर्ण, पादस्फुरन, कुष्ठ आदि विकारो पर अनुभविक योग है।

११ बवासीर का मरहम–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–रसाजन, मजिष्ठा, चदन, सिंदूर, कासीस, हलदी, दारुहरिद्रा, कपिला, नागरमोथा आदि। **गुणधर्म**–सब प्रकार के अर्श पर इसका अच्छा उपयोग होता है।

१२ मंजिष्ठा मरहम–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–भल्लातक, मजिष्ठा, खदिरछाल, सारिवा, पटोल, यष्टिमधु, दारुहरिद्रा, मेण, एरडेल, राल आदि। **गुणधर्म**–इसका उपयोग कुष्ठ और शीर्ष पर होनेवाली फुनगियो पर होता है।

१३ सूर्यपाक कासिसादि मरहम–(निघंटु रत्नाकर)

मुख्य द्रव्य–कासीस, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, नागरमोथा, हरताल, मैनसील, कपिला, विडग, मोरचूद, रसाजन, सेंदूर, रक्तचदन, मजिष्ठा, घृत आदि। **गुणधर्म**–इस घृत के अभ्यग से गजकर्ण, खाज, विचिका विसर्प, वातरक्त, शिर स्फोट, उपदश, दुष्ट नाडीव्रण, शोथ, भगदर आदि दूर होकर यह शोधन और रोपण तथा सवर्णकर कार्य भी करता है।

अनुपानोपयुक्त औषधियाँ

१ शहद–

गुणधर्म–व्रणो मे यह उत्तम कार्य करता है। अनुपानो मे इसका उपयोग तो प्रसिद्ध ही है। शहद और पानी एकत्र मिलाकर लेने से मेदवृद्धि कम होती है।

२ गुलकंद–(साधा)

गुणधर्म–उष्णता को कम करता है, शौचशुद्धि करनेवाला और उष्ण काल मे सेवनीय है।

३ गुलकंद–(प्रवालयुक्त)

गुणधर्म–ज्वरनाशक, तृष्णानाशक, शौचशुद्धिकारक, उष्णता से होनेवाले विकारो मे उपयोगी।

४ बेल का मुरब्बा–

गुणधर्म–सग्रहणी, अतिसार मे कार्यकारी है।

५ आंवले का मुरब्बा–

गुणधर्म–शक्तिवर्धक स्मृतिदायक, पित्तशामक, दाहशामक, कातिकारक है। अनुपानार्थ उपयोगी।

६ अदरक का मुरब्बा––

गुणधर्म–क्षुधावर्धक, अनुपानोपयोगी।

७ अमरूद का (बिही का) मुरब्बा–

गुणधर्म–आवले के मुरब्बे के समान गुणकारी।

८ अनार पाक–

प्रमाण–१ से २ तो। **गुणधर्म**–पित्तशामक, दाहशामक, अनुपान मे उपयोगी।

अनुभविक और अन्य औषधियाँ

१ मातृजीवन–

मुख्य द्रव्य–अशोक, पलाश, लोध्र, दशमूल, शतावरी, जामून आदि । **गुणधर्म–** ग्राही, सकोचक, शामक, विषहर होने के साथ ही बहुमूत्र, सोमरोग आदि मे काफी फायदा पहुँचाता है । शरीर को स्वस्थ बनाकर चेहरे की काति बढा देने मे 'मातृजीवन' विशेप लाभप्रद सिद्ध हुआ है । यह हाथ, पाँव, कमर, घुटने का दर्द, कब्ज, सिरदर्द, मदाग्नि, बेचैनी आदि उपद्रवो को शात करता है । गर्भाशय के रोगो के लिए एक आदर्श औपधि है ।

सेवना-विधि–एक मात्रा सुबह और एक मात्रा रात को सोते समय उतना ही पानी मिलाकर देनी चाहिए ।

नोट —गर्भवती स्त्री को पाँच महीने तक एक मात्रा उतना ही पानी मिलाकर देना चाहिए ।

२ अग्निमुखरस–(औ. गु. शा.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, वचनाग, इमली, (पीपल वृक्ष) अपामार्ग, यवक्षार, सज्जी, टकण, जायफल, लोग, त्रिकटू, शख, हीग, जीरा आदि । **मात्रा–** १ रत्ती । **गुणधर्म**–इस मे शखभस्म की मात्रा अधिक है। यह दीपक, पाचक होने से विपूचिका, हिक्का, शूल, ज्वर, गुल्म मे लाभप्रद होता है । **विशेष अवस्था–** तीव्र पाचक, अध्मान नाशक, वातानुलोभक। **अनुपान**–नीबू रस तथा पाचक रस, उष्ण जल ।

३ अग्निसूरस–(अग्निसूत)–(औ. गु. शा.)

मात्रा–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–पित्तज प्रकृति के लोगो को जब अजीर्ण,

अग्निमांद्य, शूल, रक्तक्षय आदि विकार हो तो इसका उपयोग करना चाहिए, **अनुपान**–रोगोक्त–छाछ, नीबू, रस, पिप्पली चूर्ण।

४ अश्वगंधादि लेह–

मुख्य द्रव्य– स्कद, गोदुग्ध, शतावरी, लौंग, केशर आदि। **गुणधर्म**– दीपक, पाचक, वात, कफ विकार नाशक, कास, सास आदि मे उपयोगी वैसे ही छोटे बच्चो को शक्तिदायी और वृद्धिदायक है। गर्भिणी को दूध बढानेवाला और शक्तिवर्धक है। **मात्रा**– -।।- से १ तोला। **अनुपान**–दूध के साथ।

५ अबला संजीवनी गुटी–

मुख्य द्रव्य–हिंगूल, अशोकछाल, कर्पूर, देवदार, दारुहलदी, प्रीयगु, सैंधव आदि। **गुणधर्म**–इसका विशेष उपयोग गर्भाशय विकृति के कारण या निर्बलता के कारण रजस्राव कष्ट से अनियमित तथा अल्प मात्रा से आदि लक्षणो मे करना चाहिये। **मात्रा**–२ से ४ गोलियाँ। **अनुपान**–भोजनपूर्व उष्णजल के साथ।

६ अतिसार चूर्ण–

मात्रा–१ मे ४ रत्ती। ४ से ६ वार। **गुणधर्म**–अपचन के कारण पेट मे मरोड शुरु होता है और जब नन्हे बच्चो को दाँत निकलते समय तथा अन्य समय पर जो सफेद जुल्लाब होता है एव आषाढ मास मे ऋतु-मान बदलने के कारण नया पानी पीते रहने से वाति, आव, जुल्लाब, सग्रहणी इत्यादि विकारो पर इस चूर्ण का उत्कृष्ट उपयोग होता है। **अनुपान**–गरम पानी, मिश्रीपाक, अनार-पाक, शहद।

७ अर्शयोग–

मात्रा–४ रत्ती। **गुणधर्म**–बवासीर जैसे कष्टदायक विकारो पर तो यह उत्कृष्ट दवा है। इसके सेवन से पेट का गैस के कारण फूलने का विकार दूर होता है। इससे शौचेन्द्रिय की आग, पेट की मरोड वगैरह लक्षण कम हो जाते है। रक्त का स्राव भी बद होता है। विशेषत कुथने से पेट मे मरोड देकर जो थोडासा पाखाना होता है ऐसी अजीव अवस्था मे इस दवा का अच्छा उपयोग होता है। गुदा के अन्तर्गत जो रक्तवाहिनी नाडियाँ है उनके ऊपर के दाब को कम करते हुए शौच को साफ करता है। इससे भूख लगती है। पेट की वायु, बवासीर की सूजन, दरद एव खुजली ये सब तत्काल कम होते है। **अनुपान**–भोजन के पूर्व गरम पानी से लेना।

८ आमांशहारी केसरी गोलियाँ–

मात्रा–१ से २ गो। **गुणधर्म**–आव, मरोड, संग्रहणी व अतिसार, ठंड से उत्पन्न जुल्लाव इन विकारो पर यह अत्युपयुक्त है। विशेषत संग्रहणी व अतिसार मे जो रक्त गिरता है एव जो ऐंठना पडता है तब इस दवा का काफी उपयोग होता है। **अनुपान**–नीबू का रस मिश्री।

९ अबला संजीवनी कल्प–

(अशोक, ब्राह्मी, शतावरी, लोह आदि औषधियो का यह योग है)

मात्रा–॥- से १। तोला तक ठंडे पानी मे लेना। **गुणधर्म**–स्त्रियो के गर्भाशय सम्बन्धी रोगो पर इस दवा का उत्तम उपयोग होता है। स्त्रियो के मासिक ऋतु धर्म मे कष्टदायक शूल, आर्तवाधिक्य अथवा प्रदरादि भयानक उपद्रवो पर भी अच्छा उपयोग है। यह दवा गर्भाशय को ताकतवर बनाता है। अण्डकोश को भी सशक्त बनाता है जिससे स्त्री बीज को मजबूत होने मे सहायक तथा सन्तानोत्पादक भी बनाता है। प्रदर, धुपणी, पानी के जैसा पतलासा रक्त स्राव का होना, कमर का दर्द होना, निरुत्साह, हाथ पैर आदि थकना, सिर का दर्द इत्यादि सर्व विकारो मे यह दवा अप्रतिम है। यह औषधि तो स्त्रियो के लिये आदर्श है।

१० आरोग्य मिश्रण (Health Mixture)

मात्रा–२ से ३ चम्मच समभाग पानी मे। **गुणधर्म**–इससे शौच साफ होता है और भूख भी लगती है। किसी भी रोग के कारण प्राप्त पाडुता को दूर करता है। स्त्रिया और बच्चे इनके बहुत दिनो के बीमारी के बाद कुछ दिन तक नियम पूर्वक लेने से इस दवा का उत्तम उपयोग होता है।

११ अभ्यंग तैल–

गुणधर्म–आज कल प्राप्त होने वाले निकृष्टतम अन्न के कारण मनुष्य को जितनी मेदे की आवश्यकता है उतना पर्याप्त मात्रा मे प्राप्त नही होता है। जिससे शरीर के अन्तर्भाग के जैसे बाहर का चमडा (त्वचा) भी अति रूक्ष बनता है। उस रूक्ष चर्म को स्वच्छ रखने के निमित्त आजकल चर्बी आदि से बने साबुन इस्तेमाल होने से तो और भी रूक्ष बनता है। शरीर फीका पडता है। अन्दर से गन्दगी का निकास भी नही होता है।

यह अभ्यग तैल स्नान के पूर्व मालिश करने से त्वचा के सर्व प्रकार के विकार नष्ट होते है, जैसे सूखी खुजली, फोडे, फुन्सी, गठिया, सारे शरीर मे दर्द होना वगैरह विकार इससे दूर होते है। सुदृढ शरीर के मनुष्य को भी इससे मालिश करने से शरीर अत्यन्त कान्तिमान बनता है।

१२ इचिनॉईल –(खुजली का तेल)

गुणधर्म–रक्त दोष के कारण उत्पन्न सूखी व गीली खुजली, अधिक खुजलाने से जो शरीर पर काले २ धब्बे पड़ते है वे भी इससे निश्चित रूप से नष्ट होते है।

लगाने की पद्धति–स्नान के पूर्व ही जहाँ खुजली हो वहाँ यह तेल लगाकर अदाजन १० से २० मिनिट तक धूप मे बैठना चाहिए। पश्चात् शिकाकाई लगाकर स्नान करना उत्तम है। साबुन लगाना अच्छा नही है। इस तेल मे 'सी' जीवन सत्व है।

विशेष सूचना–इस तेल को शरीर पर लगाने के बाद शीघ्र ही बेसन या शिकाकाई से धोकर साफ करे। तेल के हाथ मुख और नेत्रो मे लगाना मना है।

१३ इक्षुमेहारि गुटी

मात्रा–१ से ६ गोली तक दिन मे ३ बार लेना। **गुणधर्म**–इस गुटी मे स्तभक औषधि बिलकुल न होने के कारण मलावरोध नही होता है। मूत्र के द्वारा जानेवाली शक्कर इससे शीघ्र रुक जाती है। प्यास, गले का सूखना, सर्वांग-दाह, सारे शरीर मे पसीना छूटना व मधुमेह जन्य अन्य विकारो मे यह दवा बहुत उत्तम कार्य करती है। **अनुपान**–गरम पानी। **पथ्य**-गुड, शक्कर, आटेदार पदार्थ वर्ज्य है। इससे अधिक पथ्य जरूरी नही है। **सूचना**–मूत्रान्तर्गत मधु कम होने से यह दवा बद करना चाहिए।

१४ कर्पूरादिवटी

मात्रा–बडो को १ से ६ गो, छोटे बच्चो को पाव गोली से १ तक देना। **गुणधर्म**–इन्फ्लुएन्झा या उसके जैसी उत्पन्न होनेवाली सर्दी, ज्वर इन विकारो मे इस दवा की एक या दो गोलियाँ लेते ही आराम पहुँचता है। सूखी खाँसी, छाती का दर्द, कफ वगैरह विकार शीघ्र ही कम हो जाते है। यह दवा इन्फुलएन्झा

एव उसके जैसे अन्य ज्वर और उससे उत्पन्न दूसरे विकारो पर भी उत्तमता से कार्य करती है। **अनुपान**–दिन भर मे अधिक से अधिक ६ गोलियो तक ले सकते है। सूखी खाँसी हो तो सिर्फ वटी ही मिश्री के साथ मुह मे रखना। उसके कारण जैसे-जैसे रस निकलते रहेगा वैसे ही खाँसी कम होती जाती है। साधारणतया यही वटी गरम अथवा ठडे पानी के साथ ले सकते है। कफ वहुत ही गाढा हो तो पान के वीडे के साथ लेना उत्तम है।

१५ कास्ना (Kasna)

सर्व प्रकार की खाँसियो पर शीघ्र गुणकारी है। मुख्य औपधियाँ :–ज्येष्ठमधु, कान्त, अडुसा, बहेडा, मेन्थॉल (Menthol) इत्यादि।

गुणधर्म–वदर खाँसी, पुरानी या सूखी खाँसी इत्यादि पर उत्तम। इसमे अडुसा जैसी अमूल्य गुणदायी औपधि होने के कारण एवं अन्य उत्कृष्ट दवाएँ होने से सर्व प्रकार की खाँसियो को नाश करने की शक्ति इसमे विद्यमान है। कास्ना अति रुचिकर होने से छोटे बडे सभी इसका खुशी से सेवन करते है। इसमे कोई मादक द्रव्य नही है, अत निर्भय होकर पूर्ण गुण प्राप्त होने तक इसे चालू रखना। सेवन करने की विधि–एक एक गोली हर घटे के वाद पूर्ण गल जाने तक मुँह मे रखना चाहिए। पूर्ण गुण आने तक इसका सेवन चालू रखे।

१६ कफनाशक गुटी

गुणधर्म–छोटे वच्चो के विकारो मे विशेषत ज्वर, सर्दी, जुकाम, खाँसी, दमा, श्वास, पेट का उडना आदि विकारो मे कफाधिक्य हो तो इस दवा का वहुत ही उपयोग होता है। **मात्रा**–दवा लेने की विधि–१ गोली गरम पानी मे लेना। वडो को २ गोलियाँ रात को सोते समय गरम पानी के साथ लेने से शौच साफ होता है।

१७ कस्तूरी भैरव (आ. ग्रंथ र. यो. सा. १२१)

मुख्य द्रव्य–वगभस्म, जसदभस्म, स्वर्ण-माक्षिकभस्म, रजतभस्म, कातभस्म, रसंसिदूर, लौग, जायफल आदि। **मात्रा**– -।।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–यह दवा अत्यत शक्तिवर्धक है। इससे धातुक्षय, शुक्रक्षय और नपुसकत्व नष्ट होता है। उसी तरह श्वास, प्रमेह, सन्निपातिक ज्वर इनपर अधिक उपयुक्त है। स्त्री के गर्भाशय के विकार पर अच्छा कार्य करता है। **अनुपान**–दूध , शक्कर।

१८ कुमार कल्याण रस (र. यो. सा. २७५)

मुख्य द्रव्य—रससिंदूर, मौक्तिकभस्म, सुवर्णभस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, सुवर्ण माक्षिक भस्म आदि। **गुणधर्म**—इसका उपयोग बालको को देने से ज्वर, कास, वमन इस पर अच्छा होता है। पारिगर्भिक याने मा का दूध पीने से बालक को जो विकार होता है उसे पारिगर्भिक कहते हैं। उस पर भी इसका अच्छा उपयोग होता है। रिकेटस, अतिसार और शरीर कृश होना इस पर भी अच्छा कार्य करता है। **अनुपान**—दूध, शक्कर।

१९ कपित्थाष्टक चूर्ण (शाङ्र्गधर)

मुख्य द्रव्य—कपित्थ, शर्करा, दाडिम छाल, इमली, बिल्वफल, धातकी पुष्प, अजमोदा, पिप्पली, काली मिर्च, जीरा, धनियाँ आदि। **मात्रा**— ३ से ९ माशा। **गुणधर्म**—अतिसार, क्षय, गुल्म, संग्रहणी, गले के रोग मे लाभप्रद है। **अनुपान**—उष्णजल।

२० कर्पूरशिलाजित भस्म

गुणधर्म—मूत्रकृच्छ्, मूत्राघात, अश्मरी, प्रदर, पाडुरोग, विषमज्वर इस पर लाभप्रद है। मुख्यत मूत्रपिंड और पेशाब का सर्व विकारो पर गुणकारी है। **मात्रा**—१ से २ गुज। **अनुपान**—नीबू का रस, मोसबी के रस या शहद मे।

२१ कॉलरा मिक्श्चर (Cholera Mixture)

गुणधर्म—ठीक समय पर औषधोपचार न होने से हजारो लोग कॉलरा के रोग से मृत्यु-मुख मे जाते है। यह कॉलरा "कोम" नाम के कृमि से उत्पन्न होता है। रोग की प्रारभिक अवस्था, निरतर कै होना तथा सफेद जुलाबो से शुरू होती है। हाथ पैर सुन्न पडना, चिकना पसीना छूटना, बार बार प्यास लगना, पानी पीते रहने पर भी प्यास का न बुझना, पिशाव बद हो जाना, नाडी का रुकना या मद चलना एव ग्लानि का अनुभव होना आदि इस रोग के मुख्य-लक्षण है।

औषध लेने की रीत—रोग किसी भी अवस्था का हो कॉलरा मिक्श्चर और कॉलरा टॅबलेटस् ये दोनो औषधियाँ कॉलरा पर अत्युत्तम गुणकारी है। कॉलरा मिक्श्चर के २।३ बूंद थोडी सी शक्कर पर डालके पाँच या दस मिनिट के अन्तर से एव टॅबलेट्स आधे आधे घटे मे एक इस तरह देना चाहिए। रोगी के शरीर

मे पर्याप्त उष्णता का सचार होते ही औषध की मात्रा कम करना योग्य है। जब रोगी को काफी पसीना आ जाता है तब औषध को बद कर देना उचित है। रोगी को गरम बिछौने पर सुलाना एव गरम पानी की बोतल से पैरो को सेकना चाहिए।

आहार–पतला ओर पिष्टमय होना जरूरी है। अरारोट पानी मे भिगोकर उसे गरम करके शक्कर मिलाकर रोगी को आवश्यकता के अनुसार पिलाना उत्तम है।

२२ गर्भविनोद रस (र. चं.)

मुख्य द्रव्य–हिंगुल, जायपत्री, लोग, सुवर्ण माक्षिक, सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, आदि। **मात्रा** – १ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–इसका उपयोग गर्भवती स्त्री के विकार पर उत्तम है। **अनुपान**–मोरावला, शहद, दूध, द्राक्षाकषाय।

२३ गोखरु पाक–(वै. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य–गौक्षुर, गोदुग्ध, जायपत्री, लोग कर्पूर, लोध्र, समुद्रशोषबीज, पिप्पली, केशर, दालचीनी, इलायची, तमाल पत्र, भाग, शर्करा, घी, आदि। मात्रा– -।।- तो। **गुणधर्म**–अत्यत धातुवर्धक, पौष्टिक, वीर्य स्तभक और कामोद्दी-पक है। **अनुपान**–पौष्टिक और धातुवर्धक गुण प्राप्ति के लिये औटे हुए दूध के साथ सेवन करे।

२४ ग्रहणी कपाट (र. यो. सा. ५१७)

मात्रा–२ से ३ गुज (२ से ४ गो०) **गुणधर्म**–हमेशा अजीर्ण होते रहने से आम का सचय होते रहता है। इस तरह का आम सचय होते रहने से याने उस सचित आम का रूपातर होकर प्रकट होता है। उससे सग्रहणी, आमाश, अजीर्ण, उदर शूल, पुराना अतिसार, प्रवाहिका इस प्रकार के सुधारने मे अतिशय कठिन व्याधियाँ उत्पन्न होती है। ऐसे समय ग्रहणी कपाट रस योग्य प्रमाण मे देकर पथ्य करावे तो अवश्य गुण आता है। मुख्य पथ्य छाछ के साथ जवारी की रोटी या मुलायम भात। **अनुपान**-जीरा व सैंधा नमक, काली मिर्च का चूर्ण, छाछ, नीबू का रस।

२५ गोरोचन मिश्रण

मात्रा– -।- से -।।- रत्ती। **मुख्य द्रव्य**–गोरोचन, मृगशृग, प्रवाल, गुडूची

सत्व आदि। **गुणधर्म**—देवी, माता, गरमी से होनेवाले अन्य उपद्रवो पर इसका जरूर उपयोग करे। इस मिश्रण को देने से देवी, माता जल्दी बाहर पडकर बच्चो का कष्ट शीघ्र दूर होता है। **अनुपान**—दूध, शक्कर, मोसबी रस।

२६ गिनोरिया पिल्स

मात्रा—१ से ४ गो। **गुणधर्म**—इसका उपयोग परमा पर उत्तम होता है। इससे मूत्र की जलन व टीस, शीघ्र ही कम होकर मूत्र सुख से होता है। इसके अलावा मूत्रेन्द्रिय से पीव का बहना, पुराना परमा आदि विकार इस दवा के अधिक दिन तक सेवन से सुधरते है, ऐसा अनुभव है। **अनुपान**—नीबू का रस, पानी, चीनी।

२७ च्यवनप्राश (अष्टवर्ग)

मात्रा—प्रतिदिन रात को यह १ से २ चम्मच, दूध के साथ लेना। **मुख्य द्रव्य**—आवले, अष्टवर्ग, मधु, चीनी, दशमूल, वशलोचन, पिप्पली आदि। **गुणधर्म**—यह लेह कमजोर मनुष्य को अपनी पाचन-शक्ति के अनुसार जितना पच सके उतना ही लेना उत्तम है। इससे रसादि धातुओ की वृद्धि होकर ताकत बढती है। बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष, उर क्षत से क्षीणता प्राप्त हुए लोगो को यह लेह जरूर लेना चाहिए। यह लेह लेने से खाँसी, श्वास, दमा, रक्तपित्त, हृद्रोग, शुक्रक्षय, रक्तक्षय, मूत्र दोष ये सर्व विकार अच्छे होते है। इसके सेवन से शौच साफ होता है, पाचन शक्ति आती है, भूख अच्छी लगती है, रक्तवृद्धि, उत्साह, ताकत, कान्ति एव चेहरा लालबूद होता है।

२८ चन्दनादिवटी

मात्रा—हर समय २ गो पानी से दिन मे तीन बार लेना। **मुख्य द्रव्य**—रुमामस्तकी, हरदी, कपूर, चन्दन का तेल, कत्था, ककोल इत्यादि। **गुणधर्म**—यह दवा परमा विकार मे बहुत ही उपयुक्त एव अप्रतिम है। यह जलन सबधी मूत्रल औषधि के जैसे मूत्राशय को शोधन करते हुए मूत्रवाहक नलिका के व्रण को शीघ्र भर देता है। परमा रोग अगर प्राचीन हो गया तो सुवर्ण राज-वगेश्वर के साथ इस गोली का उपयोग करने मे उत्कृष्ट लाभ होता है। वैसे ही जलन व पीव वगैरह विकार पूर्णतया अच्छे होते है।

मुख्य द्रव्य–मौक्तिकभस्म, मृगश्रृग। **अनुपान**–दूध मिलाकर या दूध की आदत न हो तो दुगुने घी मे लेना उत्तम।

विशेष सूचना–च्यवनयोग का सेवन करते समय प्रथम उष्णता का अनुभव हो तो दूध, घी ताजी तरकारियाँ आहार मे प्रतिदिन अधिक लेना लाभकारी है। पेट अगर साफ न मालूम हो तो भोजनोत्तर दो बार द्राक्षासव आधा औस दुगने पानी के साथ लेना चाहिए।

लेखक, हिसाब नवीस एव अन्य प्रकार के बौद्धिक श्रम करनेवालो को यह दवा मेदू को ताकत देने मे अप्रतिम है।

३० जातिफलादिगुटी (र. यो. सा. १९४)

मुख्य द्रव्य–जायफल, सेधानमक, हिगुल, टकण, लोग, सोठ, अहिफेन, धत्तूरबीज, पिप्पली, निबूरस आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–आषाढ मास के सफेद दस्त, कॉलरा, अजीर्ण से दस्त होना, क्षयज अतिसार, पुराना अतिसार, शूल, हरेपीले दस्त, सग्रहणी, अर्श, पेट का फूलना इन विकारो मे लाभप्रद है। यह अवष्टभक है। **अनुपान**–तक्र, भुनी हीग, सैधव, चणकक्षार, चावल का धोवन।

३१ जातिफलादि चूर्ण (शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–जायफल, लोग, इलायची, तमालपत्र, दालचीनी, नागकेशर, कर्पूर, सफेद चदन, कृष्णतील, वशलोचन, तगरकाष्ट, आमलकी, तालीसपत्र, पिप्पली, हरडा, जीरा आदि। **मात्रा**–१ से ३ माशा। **गुणधर्म**–शहद मे सेवन करे। इससे सग्रहणी, खॉसी, दमा, अरुचि, क्षय, प्रतिश्याय (जुखाम) शीघ्र शमन होते है। **अनुपान**–उष्णजल, तक्र।

३२ जीवनामृत

मुख्य द्रव्य–अजामास, रस, आमले का रस, इक्षूरस (गन्ने का रस), विदारीकद का रस, घी, शक्कर आदि। **गुणधर्म**–मानव को जीवन देनेवाला यह योग है। शुक्रक्षयी, उर क्षती, रतिसुखलोलुप, कृश, जीर्णज्वर, रुक्षदेही, निर्बल, ऐसे व्यक्तियो को जीवनदायक, पुष्टिदायक, वर्ण, स्वर, मन प्रसन्नकारक तथा खाँसी, जीर्णज्वर, पित्तज्वर, वातरोग, वमन, मूर्च्छा, हृद्रोगनाशक है।

वालक, युवा, वृद्ध सभी को सुखदायक, रुचिकर, पुष्टिदायक, ओज, कातिवर्धक अमृततुल्य योग है। **उपयोग**–१।१ तो प्रात काल और रात को दूध के साथ लेना चाहिये। **पथ्य**–अजीर्ण नही होने दे। **सूचना**–अग्निमाद्य हो तो इसका सेवन नही करना चाहिये। इसकी जगह च्यवनप्राश का उपयोग करे। यह औषधि फिर वापिस नही ली जायगी।

३३ ताप्यादिलोह–

मात्रा– ।।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–अर्धागवायु, धनुर्वात, हनुस्तभ, पक्षाघात, पाडुरोग, कामिल, अपस्मार, उन्माद, वालग्रह, आकडी, रुधिराभिसरण की शिथिलता, सारे शरीर मे बधिरता याने सुन्न होना वगैरह विकारो पर यह अनुभूत ओपधि है। **अनुपान**–उन्माद व अपस्मार पर कोहडे के रस मे पाडुरोग तथा कामिल पर मूली के रस मे लेना उत्तम है।

३४ नालगूद संबंध में औषधि (नालगुदावरील औषध)

मात्रा–२ से ४ रत्ती। **गुणधर्म**–शरीर भर की एव उदर की उलटी सूजन आने से इस रोग को नालगूद कहते हैं। इस विकार पर यह दवा अचूक गुणकारी है। **अनुपान**–गरम पानी।

३५ नेत्र बिंदू (Eye drops)

गुणधर्म–आँखो के दर्द, सूजन, लाली इन विकारो पर यह उपयुक्त है। २।३ बूद आँखो मे डालना अच्छा है। इससे नेत्र विकार दूर होते हैं।

३६ नाराच चूर्ण (शाङ्गधर)

मुख्य द्रव्य–त्रिवृत्त (श्याम), पिप्पली, शर्करा आदि। **मात्रा**–२ से ३ माशा। **गुणधर्म**–उत्तम विरेचक है। इसका सेवन करने के पूर्व घृत, तैल इत्यादि से स्नेहन कर लेना चाहिये। उदर रोग मे उत्तम कार्य करता है। **अनुपान**–रोगानुसार। उदर का फूलना-सुरा, चणकक्षार, गुल्म मे-वेर का क्वाथ, कोष्ठ-बद्धता मे-दही का पानी, अजीर्ण-उष्णजल, गुदस्थान मे काटने जैसी पीडा मे आमचूर का जल, मल की शुष्कता-अमचूर तैल, उदर रोग मे गाय का या उटनी का दूध, अर्श मे-अनार रस, विष मे-घृत। इस प्रकार अनुपान भेद से उपयोग करना चाहिये। आमसग्रहणी जैसे विकार कोष्ठशुद्धि होकर ठीक हो जाते है। अधिक दस्त लग जाने पर घृत पिलाना चाहिये।

३७ नवरत्न भस्म

हर प्रकार की व्याधि मे प्रतिकार करने की शक्ति निर्माण करना यह नवरत्न भस्म का मुख्य कार्य है। नासूर (Cancer), हृदय व्याधि, Heart-Diseases और मस्तिक व्याधिपर उत्तम कार्य करता है। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **अनुपान**–घी, शहद, डालिवपाक।

३८ पायोरिन दंतमंजन

गुणधर्म–यह दतमजन कर्पूरमिश्रित होने मे जन्तुनाशक, वेदनाहर, मुख-दुर्गंधिनाशक, आदि मुख्य ७ गुण इसमे विद्यमान है। इसके सेवन से दान्तो का हिलना, कीडा लगना, मसूडो का सूजना, उनमे से रक्तस्राव, मुखदुर्गंधी (पायोरिया) दन्तव्रण, दन्त पुष्पुट वगैरह दन्त विकारो को सुधारते हुए यह दान्तो को सफेद मोती के जैसे रखता है एव मजबूत भी बनाता है।

३९ प्लीहोदरादि चूर्ण

मात्रा–१ से ३ रत्ती। **मुख्य द्रव्य**–आवेहरद, कडुवृन्दावन, कडूआजीरा सैंधव आदि। **गुणधर्म**–छोटे बच्चो के कफदोप पर यह दवा वमन व विरेचन के द्वारा उपयोग होता है। वैसे तज्जन्य कास, अपचन, मलावरोध, इन पर भी इसका अच्छा उपयोग होता है। इसके सेवन से तिल्ली व उर शीघ्र ही अच्छे होते है। **अनुपान**–दूध, मिश्री।

४० ब्राह्मी जीवन–

गुणधर्म–दिमाग की कमजोरी अथवा मेलनकोलिया जैसे मानसिक रोगो मे लाभ होता है, स्मरण शक्ति बढाता है, दिल-दिमाग को तरावट व दिमागी ताकत देने मे, मानसिक दुर्बलता, पुराना सिरदर्द, शरीर की क्षीणता, कम दिखायी देना, जरा-सा काम करने मे थकावट मालूम देना आदि शिकायतो मे यह अत्यन्त लाभप्रद औपधि है। किसी भी बीमारी के बाद की कमजोरी मे मस्तिष्क से काम लेने वाले व स्मरण शक्ति बढानेवालो को अवश्य सेवन करना चाहिए। **सेवन-विधि**–एक कप कुनकुने दूध मे मिला कर सुबह-शाम या जब थकान मालूम हो पीना चाहिए। **मात्रा**–बडो के लिए एक-से-दो बडे चम्मच, बच्चो के लिए एक से दो चाय के चम्मच।

४१ पाचकगुटी

गुणधर्म–खट्टी डकार, अपचन, अग्निमाद्य, अरुचि, मुंह चिपकना, मचलना वगरह पर इसका उपयोग करना अच्छा हे। यह दीपक एव पाचक हे। इससे मुख शुद्धि होकर अन्न पचता है। उदरशूल पर इसका शीघ्र ही उपयोग होता है। सिर्फ इस गुटी को मुख मे रखकर चूसते रहना।

४२ प्रवाल मिश्रण–

मुख्य द्रव्य–प्रवाल, सुवर्ण, माक्षिकभस्म, जहरमोहर आदि। **गुणधर्म**–पित्ताधिक्य, आँखो मे अधेरी छाना, चक्कर आना, सिरदर्द इत्यादि विकारो मे यह मिश्रण बहुत ही अच्छा काम करता है।

४३ प्रमदा कॉर्डियल–

गुणधर्म–अपने शारीरिक कष्टो को दूसरो को कहने से चुपचाप सहन करते जाना ही प्राय स्त्रियो का स्वभाव होता है। इससे प्राथमिक अवस्था मे सहज ही ठीक होनेवाले विकार बढकर उनका स्वास्थ्य एक कठिन समस्या बन जाती है। इसलिये स्त्रियो की प्रकृति मे थोडासा परिवर्तन मालूम होते ही या अन्य कोई साधारण दोष नजर आते ही प्रमदा कॉर्डियल देना प्रारभ करे।

स्त्रियो के कोष मे अन्तस्राव निर्माण करते हुए सभी जननेन्द्रियो को बल्य याने ताकतवर यह औषध है। तत्सबधी स्त्रियो के सर्व विकारो पर यह अप्रतिम औषध है। कमर, वस्ति स्थान, मासिक धर्म का ठीक न होना, हाथ पैरो का दर्द, कमजोरी, फीका पडना आदि सर्व कष्ट नष्ट होते है। शौच भी साफ होता है। मूत्र भी अधिक मात्रा मे और साफ २ होता है।

मुख्य द्रव्य–मौक्तिकभस्म, शौक्तिक, प्रवाल, इत्यादि भस्म, अशोक लोध्र, दारुहर्दी, पुनर्नवा वगैरह वनस्पति। **अनुपान**–भोजन के पूर्व ही दो चम्मच दुगने पानी के साथ लेना गुणकारी है।

४४ प्रबोधांजन–(शाङर्गधर)

मुख्य द्रव्य–शिरीष बीज, गोमूत्र, पिप्पली, कालीमिर्च, सेधानमक, लहसुन, मैनसील आदि। **मात्रा**– -।- से -।।- रत्ती। **गुणधर्म**–वातरोग, सन्निपातज्वर, अमस्मार की बेहोशी दूर करने के लिये आँखो मे अजन करना चाहिये।

४५ बालार्क रेचक–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–पारा, गधक, हिंगूल, जमालगोटा, दतीमूल आदि। **मात्रा**–१ से २ रत्ती। **गुणधर्म**–छोटे बच्चो को यह शौच शुद्धि की औपधि है।

४६ बकुल तैल

मुख्य द्रव्य–आमलकी, खोपरे का तैल, आदि। **गुणधर्म**–यह तैल सुगधित है। बाल झडना वद होता ह। केशवृद्धि भी होती है। बालो के सब विकारो पर गुणकारी है।

४७ बंदरखांसी मिश्रण–(डां. खो. मिश्रण)

मुख्य द्रव्य–इलायची, प्रवाल, मृगश्रृग, वशलोचन, इत्यादि। **गुणधर्म**–छोटे बच्चो की कष्टदायक खाँसी पर इसका उत्तम उपयोग होता है। इसके अलावा ज्वर, सर्दी, खाँसी आदि विकार इसके सेवन से कम होते है। **अनुपान**–मधु, आवला मुरब्बा, वासावलेह, अडूसा कल्प इनमे मिलाकर थोडा चाटना चाहिए।

४८ बन्देजगुटी

मुख्य द्रव्य–शुद्ध अफीम, शिलाजित, गुग्गुल, जायफल, लोध्र, गुड वगैरह। **गुणधर्म**–रात सोते समय एक गोली एव प्रात उठते ही एक गोली दूध–मिश्री के साथ लेने से निद्रा मे अथवा मूत्र के समय जो वीर्यपात होता है वह इससे जल्दी वद होता है।

४९ बालग्रह की ऊपरी औषध

गुणधर्म–झटके, अकडना आदि विकारो मे यह अमृत के समान गुण देता है। झटका आते ही इस दवा को चाटने को देना चाहिए। इससे बच्चा शीघ्र शुद्धि पर आता है। यह विकार जब तीव्र रहता है तब -।- रत्ती औपध प्रत्येक घटे मे माता के दूध के साथ देना उत्तम है।

५० बालसंजीवनी चूर्ण

गुणधर्म–सर्दी, जुकाम, खाँसी, ज्वर, गले का घुरघुराना, मलबद्धता तथा बच्चो को दूध के निमित्त आनेवाले बच्चो के सर्व विकारो पर यह चूर्ण उत्तम गुणकारी है। **अनुपान**–दूध व शहद।

५१ बालंत काढ़ा नं १ (सूतिका काढ़ा)

मात्रा–२ से ३ चम्मच समभाग पानी मे लेना। **गुणधर्म**–प्रसूती स्त्री को पहले १५ दिन तक देते रहने से अन्य दवा देने की फिर आवश्यकता नही पडती है। इससे गर्भाशय की शुद्धि के साथ प्रसूति के समय किसी प्रकार का भय नही रहता है। इसके अलावा इसके सेवन से प्रसूति की खाँसी, दमा, शरीर कम्पन, बडबड, प्यास, झापड इत्यादि विकार भी अच्छे होते हैं। वातजनक, तैल सबंधी पदार्थ वर्ज्य, पानी गरम करके लेना चाहिए।

५२ बालंत काढ़ा नं. २

मात्रा–२ से ३ चमचे भोजन के बाद समभाग पानी के साथ। **गुणधर्म**–इसके सेवन से प्रसूती स्त्री की उष्णता कम होती है। अन्न उत्तमता से पचता है। शौच भी साफ होता है। शरीरान्तर्गत गरमी को दूर करते हुए प्रसूतिका के सर्व प्रकार के रोगो के भय को दूर करता है। इसके अलावा अस्थिगत ज्वर, अरुचि, अपचन, सग्रहणी आमास, मुरेडना वगैरह प्राय प्रसूति के सर्व विकारो पर यह बहुत ही उपयुक्त है। **विशेष गुण**–दूध आने लगता है। शक्ति बढती है। उपरोक्त बच्चो के विकार भी अच्छे हो जाते है। बच्चे इससे पुष्ट बनते है।

५३ बालकडू

गुणधर्म–छोटे बच्चो को दूध जब नही पचता, तब उनको कै होता है पेट का फूलना, हलकासा ज्वर भी आता है तथा सर्दी खाँसी वगैरह विकार पैदा होते है तब यह दवा देने से शौच को साफ करते हुए बच्चो को बहुत ही फायदा पहुँचता है।

५४ बालगोली–

गुणधर्म–छोटे बच्चो को पान के बीडे की घोट देने की अपनी पुरानी पद्धति है परन्तु आज कल वह रीति चली जा रही है। उसके कारण बच्चे बीमार पडते है। लेकिन हमारी इस औषधि मे उन सब गुणो को अनुभव के द्वारा एकत्र कर लिया है। इससे बच्चो को किसी तरह का कष्ट नही होता है। बच्चो को हर समय दो २ गोलियाँ देनी चाहिए। एक वर्ष के ऊपर के बच्चो को ३ गोलियाँ दे सकते है।

५५ मधुमेहदर्पहारी–(वृ. वै.)

मुख्य द्रव्य–अहिफेन, शिलाजित आदि। **मात्रा**–१ रत्ती। **गुणधर्म**–श्वास, मधुमेह, संग्रहणी, अतिसार, श्वासोच्छ्वास की अनियमितता तथा श्वसनेंद्रिय निर्बलता में विशेष लाभदायक है। **अनुपान**–आवला-चूर्ण और सेंधव।

५६ महाखांडव चूर्ण–(शाङ्गर्धर)

मुख्य द्रव्य– काली मिर्च, नागकेशर, तालीपत्र, पचलवण, पिप्पलमूल, चित्रक, दालचीनी, पिप्पली, जीरा, धनियाँ, आम्लवेत, सोंठ, इलायची अजमोदा, मुस्ता, दाडिमछाल, शर्करा आदि। **मात्रा**–२ से ३ माशा। **गुणधर्म**–अग्निदीपक, रुचिकारक, कंठरोग, मुखरोग, आनाह, गुल्म, श्वास, खाँसी पाच प्रकार की वमन, हृद्रोग, विषूचिका, अतिसार मे लाभदायक है। **अनुपान**–नीबू का रस, शर्करा, उष्णजल।

५७ मंजिष्ठादिकषाय

मुख्य द्रव्य–मजिष्ठा, सनाय, सौंफ आदि। **गुणधर्म**–इसके सेवन से शौच शुद्धि होकर क्षुधावृद्धि होती है। रक्त शुद्ध होकर त्वचा के विकार खाज, दाद, फुन्सियाँ, चट्टे आदि विकार शीघ्र ठीक होते है। भोजन से पूर्व १ तो।

५८ मलेरिया मिक्शचर

गुणधर्म–बुखार, सर्दी, जुकाम, खाँसी तथा बार बार आनेवाला शीतज्वर आदि विकारो पर अक्सीर इलाज। **मात्रा**–१ चम्मच दवा समभाग जल के साथ दिन मे तीन बार।

५९ मूत्रदाह की औषधि

गुणधर्म–यह दवा मूत्रल है। मूत्रघात, जलन, मूत्रोत्पत्ति के समय तिडीका का उठना, परमे को दूसरी अवस्था मे अथवा अन्य समय मे पेशाव का जलना इस दवा से शीघ्र कम होता है। दाह, गरमी, तृषा, सिर चकराना, शिर का दर्द आदि विकारो पर यह दवा उपयुक्त है। **अनुपान**–दूध, चावल का धोया पानी, चीनी, गुलकद व आवले का मुरब्बा।

६० माक्षिक मिश्रण

गुणधर्म–किसी कारण नीद नही आती हो तो इसके सेवन से नीद आने मे मदत मिलती है। पित्ताधिक्य के कारण जो घबराहट होती है उसे यह तुरत दूर करता है। **अनुपान**–आवले का मुरब्बा व पानी।

६१ मादीफलरसायन

गुणधर्म–स्त्रियो को प्रधानतया गर्भधारणा के कारण प्राप्त पित्तविकार व तज्जन्य दाह, जी मचलना, मुँह से पानी टपकना, वाति, अरुचि, अग्निमाद्य एव प्राथमिक अवस्था का अपचन आदि सर्व विकारो पर यह मादीफलरसायन देना चाहिए। इस औषधि के सेवन से अग्निमाद्य नष्ट होता है और भूख अच्छी तरह वृद्धिगत होती है।

६२ मलेरिया टॅब्लेट्स्

गुणधर्म–जब जाडा बुखार एक वार मनुष्य को आ घेरता है तब सारे शरीर को जर्जर, कमजोर बना देता है। जाडा बुखार शुरू होने की पूर्व सूचना स्वरूप सारे शरीर मे दर्द होना प्रारभ होता है। ऐसे समय मलेरिया टॅवलेट्स लेना प्रारभ करे। एक सप्ताह तक इन गोलियो को लेते रहने से जाडा बुखार नष्ट होता है। पुराना मलेरिया क्विनाईन से नही हटता है यह सिद्ध हो चुका है। ऐसी अवस्था मे १ महीना तक रोज दो गोली के हिसाब से लेते रहने से कितना भी पुराना मलेरिया हो इस दवा से जरूर दूर हो जाता है इसमें कोई सदेह नही है। **मुख्य द्रव्य**–निर्गुडी, सुदर्शन, क्विनाईन, सप्तपर्णी इत्यादि ज्वर नाशक औषधियाँ है। **अनुपान**–प्रौढ को ४ गोलिया हर ३ घटे के वाद पानी के साथ दोपहर, साय या बुखार आने से पहले ही याने आधा घटा पहले लेना। छोटे वच्चो को साय, प्रात आधी गोली पानी के साथ देना उत्तम है।

६३ ममता

गुणधर्म–यह नन्हे २ वच्चो का अमृत है। माता का दूध सन्तान के लिए परिपूर्ण अन्न (आहार) होता है। कई कारणो से माता के दूध मे निसर्गत विद्यमान पोषक द्रव्य-क्षार, जीवन सत्व आदि योग्य परिमाण मे न होने से वच्चे

ठीक तौर से नही बढते हैं। पचनेंद्रिय, यकृत्, आदि महत्वपूर्ण इन्द्रियाँ अपना काम नही करती हैं जिससे बच्चे सुदृढ एव पुष्ट नही बनते। ऊपरी दूध न पचने से हमेशा बच्चा चिडचिडाता है । पाखाना भी साफ नही होता । अगर होता भी हैं तो थोडा २ बार २ होता हैं। इससे बच्चा बढता नही और उसके दाँत भी जलदी नही निकलते है। निकलते भी है तो बहुत कष्ट से एव कीडेदार होते है । ऐसी दशा मे पाचक रस को उत्तेजित करते हुए न्युनतम क्षार और जीवन-सत्व युक्त इस दवा को बच्चो को जरूर देना चाहिए।

ममता–यह फलो के रस से एव वनस्पति के रस प्रवाल वर्ग, जीवनसत्व आदि से बनाया गया हैं। बालको के पोषण के लिये यह बहुत उपयुक्त सिद्ध हुआ है। मृद्वस्थी (Rickets), यकृतदुष्टी, खाँसी, हमेशा चिडचिडाना, आँव का गिरना आदि बच्चो के विकारो पर बहुत ही उपयुक्त है।

माताएँ अपने बच्चो को निरोग एव सुदृढ बनाना चाहती है तो और बच्चो मे रोग प्रतिकार शक्ति को बढाना हैं तो इसके लिए ममता इस दवा का सतत सेवन करावे। यह अति मधुर होने से बच्चे खुशी से सेवन करते हैं।

देने की रीति–१ महीने के अन्दर के बच्चे को १ बूद माता के दूध मे या पानी मे २ बार देना। छ मास के अदर के बच्चे को ५ बूंद उपरोक्त रीति से। एक साल तक के बच्चे को १० बूंद और उसके उपरात के बच्चो को १० से ६० बूंद तक रोज दो बार दूध या पानी के साथ देना चाहिए।

मुख्य २ द्रव्य–१ द्राक्षादिक फलो का रस।
२ शतावरी आदि वनस्पतियो का रस।
३ प्रवाल वर्ग।
४ जीवन सत्व वगैरह ।

६४ रोपण तैल

मुख्य द्रव्य–खदिरछाल, लौग, गैरिक, तिल का तैल आदि। **गुणधर्म**–जब तक व्रण (घाव) स्वच्छ न हो शीघ्रता से नही भरते है। इसलिये प्रथम शोधन तैल का उपयोग करके पश्चात इस तैल का उपयोग करना चाहिये। इस तैल मे पट्टी भिगाकर व्रणस्थान पर रखकर उसे बाँधना चाहिये। इससे सद्योव्रण, नाडी

व्रण, कर्णव्रण, भगदर, अपचि, अर्शोव्रण, दतव्रण और अन्य प्रकार के व्रण शीघ्र भरकर ठीक हो जाते है। व्रणमधान कार्य के लिये आज बीस वर्ष से उपयोग किया जा रहा है। व्रणरोपण कार्य तो जादू जैसा आश्चर्यकारक रीति से करता है।

६५ रसभस्म

मात्रा– -।।- से १ गुज। **अनुपान**–दूध, घी। **गुणधर्म**–वातविकार, आध्मान, मलबद्धता, सर्वांगशूल इस पर उत्तम कार्य करता है। छोटे बच्चो को विरेचन के लिये लाभदायी है।

६६ रक्तशोधन

मात्रा–२ चम्मच समभाग पानी के साथ भोजनोत्तर लेना। **मुख्य द्रव्य**–अनन्त, सारिवा, मजिष्टा, उषवा, धनिया आदि। **गुणधर्म**–इससे विगडा रक्त शुद्ध होता है। गर्मी से उत्पन्न विकारो को यह नष्ट करता है। देह के ऊपर के चट्टे, फोडे, फुन्सी, काले दाग, व्रण, वगैरह चर्म के दोषो को दूर करके शरीर को तेज पुज बनाता है, स्त्रियो के विकार जैसे प्रदर, जलन आदि विकार भी इससे अच्छे होते है। यह तो विशेषत अशुद्ध रक्त को परिशुद्ध बनाने मे अचूक गुणकारी औषध है।

६७ रक्तशुद्धिकारक गोलियॉ

भावना–शुद्ध गन्धक, मकोई, त्रिकटु, त्रिफला, चतुर्जात आदि। **गुणधर्म**–प्रति दिन प्रात साय दो बार एक २ गोली दूध व मिश्री के साथ लेने से किसी भी कारण से बिगडे रक्त को शुद्ध बनाकर ताकत को बढाने मे यह अप्रतिम है।

६८ रक्तार्शयोग

मात्रा–१ से १।। माशा। **गुणधर्म**–शौच बहुत ही सख्त होने से बवासीर उत्पन्न होता है तब बहुत ही रक्तस्राव होने लगता है तब रक्तस्राव को बद करने मे बहुत ही इसका उपयोग होता है, शौच भी साफ २ होता है। **अनुपान**–प्रात और साय छाछ के साथ लेना।

६९ रेचकगुटी

गुणधर्म–बडे मनुष्य एक गोली नीद के पहले गरम पानी के साथ लेने से प्रात काल शौच साफ होता है।

७० स्वादिष्ट सुखसारक चूर्ण–

गुणधर्म–यह औषध सारक है। रुक्षता के कारण या शुष्कता के कारण जिस को शौच साफ नही होता है ऐसे मनुष्य को यह दवा अवश्य लेनी चाहिए।

लेने की पद्धति–निद्रा के पूर्व ३ से ६ माशे तक गरम पानी के साथ लेना चाहिए।

७१ सार्सापरिला–

गुणधर्म–सार्सापरिला सेवन करने से बालको को वर्षाकाल और गर्मियो में जो फोडे-फुसियाँ होते है वे मिट जाती है। रक्त-विकार, वातरक्त, रक्तदूषी ज्वर मे इसके देने से लाभ होता है। दाद, खाज, खुजली, फोडा, फुन्सी, हाथ, पाँव, या मुँह पर काले दाग या चट्टे पडना आदि रोगो मे यह अत्यन्त उपयोगी है। शरीर पर शीतला के समान फुसियाँ होना हड्डियो का दर्द घावो मे से पीव बहना, नाक मे से पीव बहना, आँखो की जलन, तालू मे छाले, मुँह से दुर्गन्ध आना, ओठो का अकडना, गडमाला आदि किसी-भी कारण से बिगडे हुए खून को साफ कर शरीर मे शुद्ध रक्त का सचार करने हेतु सार्सा-परिला का सेवन पूर्ण विश्वास के साथ लिया जा सकता है। **सेवन विधि**–बडो के लिए एक से दो चम्मच बच्चो के लिए एक से डेढ चाय का चम्मच सुबह और शाम को बरा-बर पानी मिलाकर देना चाहिए। **पथ्यापथ्य**– जब तक दवा सेवम करे मिर्च, खटाई, तेल, हीग, गूड आदि खून को खराब और गरम करने वाली चीजे सेवन न करे।

७२ लाल औषधि (मुंह में लगाने की)

मुख्य द्रव्य–शखजीरक, सोनकाव, आदि। **गुणधर्म**–मुख का अन्तर्भाग लाल लाल होना, अति गरमी के कारण मुँह मे चट्टे पडना व फोडे पडना एव तीता खट्टा सहन न होना ऐसे समय मे यह दवा शहद मे मिलाकर जीभ और हिरडो को लगाना चाहिए। इससे लार टपकता है उसको पेट मे नही जाने देना। थोडी देर बाद पानी से मुख साफ करना उत्तम है।

७३ वातारिरस (वै. सा. सं.)

मुख्य द्रव्य–शुद्ध अहिफेन, शुद्ध कुचला, काली मिर्च, आदि। **मात्रा**– ।- से १ रत्ती। **गुणधर्म**–कुब्जत्व, गृध्रशी, आमवात, शूल, कफमिश्रितवायु, अपबाहुक

शोथ, अपतानक, कफ, करिस्थवात, विषूचिका, अरुचि, अपस्मार, ग्रहणी में लाभदायक है। **अनुपान**—उष्ण जल।

७४ विजयामृतचूर्ण

मुख्य द्रव्य—हरड, सैधव, यवक्षार, एरडी का तैल। **गुणधर्म**—सारक गुण-युक्त है, रुक्षता तथा उष्णता के कारण शौचशुद्धि न होना और उसी कारण अग्निमाद्य, शिरशूल, शरीरपीडा, कमरपीडा, आदि मे रात को सोते समय ३ से ६ मासे उष्णजल के साथ सेवन करे।

७५ विजयादिवटी

विशेष गुण—यह वटी पाचक, दीपक, वीर्यस्तभक एव वृष्य भी है। जननेन्द्रिय की शिथिलता को हटाते हुए शुक्र—धातु का सवर्धन करना इसका प्रधान गुण है। इसके साथ दूध का अधिक सेवन उत्तम गुणकारी है।

अनुपान—प्रात साय १ से २ गोली तक लेकर ऊपर से १ पाव दूध पीना चाहिए।

७६ विषूचिकादिवटी (Cholera Pills)

विशेष गुण—इस वटिका का पटकी (महामारी, कॉलरा), इस रोग की प्रथमावस्था से लेकर अतिम अवस्था तक अच्छी तरह उपयोग होता है। इस वटिका जैसी रामबाण औषध एव सस्ती दवा कॉलरा के ऊपर अन्य दवा नही है। देहात मे रहनेवालो को इसे सदा अपने पास रखना चाहिए, क्योकि कॉलरा का प्रादुर्भाव होते ही छोटे २ गॉवो मे इस दवा का मिलना दुश्वार होता है। ऐसे समय सग्राह्य औषधि का वहुत ही उपयोग होता है। विपूचिका के सक्रामक रोगो पर यह प्रतिबधक के रूप मे उत्तम रीति से उपयोग हो सकता है।

इसके अलावा अजीर्णता से उत्पन्न जुलाब का होना, पेट का फूलना, पेट मे गैस का भरना, अपचन वगैरह अनेक विकारो मे इसका अच्छा उपयोग होता है। **मात्रा**—कॉलरा मे जुलाब और वाँती के वाद एक एक गोली और अन्य विकारो मे दिन भर मे १ से ४ गोलियाँ तक देना उत्तम है। **अनुपान**—नीव का रस, शक्कर, छाछ, गरम पानी।

७७ वंगमिश्रण

मात्रा–१ रत्ती। **गुणधर्म**–प्रदर, प्रमेह, कमजोरी, वहुमूत्रमेह, शुक्रस्थान की जलन, इन सब विकारो मे इस दवा का उत्तम उपयोग होता है। यह एक उत्तम शक्तिवर्धक दवा है। इसका कार्य या गुण शामक एव वल्यकर है। **अनुपान**–घी, आवला–मुरब्बा, दूध, चीनी। **सूचना**–यह दवा लेते समय शौच को साफ रखने का कार्य अवश्य ध्यान मे रखना चाहिए।

७८ वृष्यवटी नं. १

मात्रा–१ से ४ गो तक प्रात साय व रात मे सोने के पूर्व ही लेना चाहिए। **मुख्य द्रव्य**–मकरध्वज, सुवर्णभस्म, कुचला, कस्तूरी, भाँग, अफीम आदि। **गुणधर्म**–यह वटी कामोद्दीपक है। **अनुपान**–दूध।

७९ वृष्यवटी नं. २

मुख्य द्रव्य–कपूर, जायफल, लौग, काली मिर्च, कस्तूरी आदि। **गुणधर्म**–यह वटी वृष्य है इसके सेवन से रति सुख की इच्छा होती है। हताश हुए रोगी भी पुन पूर्ववत् आनद को प्राप्त होते है। मतलव यह कि यह प्रकृति को आल्हाद दायक एक उत्तम औषधि है। योग्य अनुपान के साथ इसका सेवन करना चाहिए। **अनुपान**–मक्खन, मिश्री, घी व शहद।

८० शक्तिवर्धक मिश्रण (Tonic Mixture)

गुणधर्म–कमजोर वच्चे, रोगी एव नाजुक प्रकृति के लोगो को व औषध की गध को वर्दास्त न करने वाले स्त्री और पुरुष दोनो को यह औषध तो जैसे अमृत के समान है। इससे भूख लगती है, शौच साफ होता है एव उत्साह की काफी वृद्धि होती है। कमजोर दुवले पतले बच्चे हृष्ट और पुष्ट बनते है। किसी विमारी के वाद आनेवाली कमजोरी पर यह अत्युत्तम है। **प्रमाण व अनुपान**–वडे आदमियो को २ से ४ चम्मच। छोटे वच्चो को एक चम्मच गरम पानी के साथ एव नन्हे वच्चो को २० से ३० वूँद गरम पानी के साथ देना चाहिए।

८१ शुद्ध शिलाजित

मात्रा–१ से ८ रत्ती। **गुणधर्म**–यह शिलाजित अत्यत परिश्रमपूर्वक शास्त्रोक्त पद्धति से शुद्ध करके बनाया गया है। इसका विशेष उपयोग शरीरा-

न्तर्गत धातु परिपोषण क्रम को सुधारते हुए धातु को व्यवस्थित रूप से मजबूत बनाना ही है। वैसे ही मूत्रमार्ग के सब विकार इससे अच्छे होते हैं। इसका मज्जा ततु की कमजोरी पर भी उत्तम उपयोग होता हैं। धातुक्षीणता और शुक्र दोष इससे पूर्णरूप से सुधर जाते है। **अनुपान**-दूध।

८२ शूलांजन (पेनबाम)

गुणधर्म—सधिवात, सर्दी, जुकाम, सिर दर्द इत्यादि विकारो पर उपयुक्त है।

८३ शेफालि कल्प—प्रमाण ।। से १ तो.

गुणधर्म—इसका उपयोग शीतपूर्वक विषम ज्वर मे और विशेषत पित्त प्रधान ज्वर मे बहुत ही अच्छा होता हैं। विकार जब तीव्र होते है तब भी इसका उपयोग गुणकारी होता है। इसमे क्विनाईन के दोषो को छोड कर बाकी सब अच्छे गुण विद्यमान हैं। **अनुपान**—पानी के साथ लेना।

८४ शोधन तैल

व्रणशोधन करने मे अत्यन्त सुप्रसिद्ध व अप्रतिम गुणकारी।

गुणधर्म—सद्योव्रण, पृष्ठव्रण, नाडीव्रण, भगदर, शतपीनक, अर्शव्रण, दन्तव्रण, अपचि, कर्णव्रण इत्यादि व्रण विकारो मे यह अचूक दवा है। इसका उपयोग बाहर ही करना चाहिए। **उपयोग**—व्रण की जाति के जैसे पट्टी, कपड़ा, बत्ती इस तेल मे भिगोकर जखम पर इसका उपयोग कर सकते है। सिर्फ व्रण पर इस तेल मे कपडा भिगोकर घुमाने से व्रण की सारी गदगी दूर होती हैं। व्रण भी स्वच्छ होता है। अनतर रोपण तेल का उपयोग जरूर करना चाहिए।

८५ शंखोदर (र. यो. सा. ४८)

मुख्य द्रव्य—शखभस्म, अहिफेन, जायफल, टकण आदि। **मात्रा**—१ से १।। रत्ती। **गुणधर्म**—अपचन, जुल्लाव, कॉलरा, सग्रहणी, आमरक्त, कष्टसाध्य अतिसार, तीव्रशूल, अर्श, रक्तातिसार, पेट मे मरोड, पिडीको, द्वेष्टन, उदरशूल आदि विकार नष्ट होते हैं। **अनुपान**—मक्खन, तक्र, घी।

८६ सहचर तैल

गुणधर्म—अतिशय तीव्र वात विकारो मे भी इस तेल का उपयोग करने से

रोगियो को उत्तम लाभ हुआ है। विशेषत कलाय सज नाम के रोग पर इसका उपयोग करने से विलक्ष गुण प्राप्त होता है। यह तेल पेट मे भी दे सकते हैं। **गुणधर्म**–इस तेल के सेवन से कम्प, शरीर का अड़कना, शोष आदि विकार युक्त कष्ट साध्य वातरोग, गुल्म, उन्माद, सर्दी व योनिरोग वगैरह विकार समूल नष्ट होते है।

८७ सूक्ष्मसिद्ध सुवर्ण कल्प

मुख्य द्रव्य–सूक्ष्म सुवर्ण, सूक्ष्म, अभ्रक, मृगश्रृग, प्रवाल, गुडूची सत्व वगैरह। विशिष्ट तरीके से तैयार किया हुआ सुवर्ण भस्म का कल्प। **गुणधर्म**–क्षय रोग के मूल कारणीभूत एक प्रकार के सूक्ष्म जन्तु होते है यह सब लोग जानते है। इन जन्तुओ के कारण ही रोग वढता है। सुवर्ण के सपर्क से ये जन्तु नष्ट हो जाते है। परन्तु सोना याने सुवर्ण की मात्रा अधिक देने से ज्वर वढता है इसलिए सुवर्ण कम मात्रा मे देना अच्छा है। यह कल्प अनेक प्रयोगो से तैयार किया गया है। इसको सिद्ध करने मे एक विशिष्ट पद्धति स्वीकार की गई है। अत इससे ज्वर किसी तरह वढ नही सकता है। क्षय के सदेह मात्र से ही इस औषध का सेवन प्रारभ करना चाहिए। क्षय की पहली व दूसरी अवस्था तक भी इस दवा का उत्तम गुण प्राप्त होने के कई उदाहरण हमारे पास प्राप्त है। **अनुपान**–दूध के साथ देना।

८८ सुवर्ण मालिनीवसंत (टॅबलेट्स)

गुणधर्म–खरीदने मे सहूलियत को ध्यान मे रखते हुए हमने २८ और ५६ गोलियो की शीशियाँ तैयार की है जो क्रम से १४ व २८ दिन तक काम दे सकती है।

८९ सुलभ प्रसूति चूर्ण नं १

गुणधर्म–यह चूर्ण गर्भधारण होते ही शुरू करना अच्छा है। सतत नौ मास तक इसके सेवन से गर्भपात होने का भय नही रहता है। इसके अलावा अम्लपित्त, चक्कर, धुपणी (प्रदर), कमजोरी, अजीर्ण ये सब शिकायते सुलभ रीति से दूर हो जाती है। **मात्रा**–४ से ८ रत्ती। प्रात और साय पानी से लेना।

९० सुलभ प्रसूति चूर्ण नं. २

गुणधर्म–यह दवा प्रसूति के पूर्व १५ दिन प्रारंभ करना उत्तम है। इससे प्रसूति क्रिया बहुत आसान हो जाती है। प्रसूति शीघ्र होती है और वेदना भी कम होती है। प्रसूति वेदना प्रारंभ होते ही दुगनी मात्रा लेना गुणकारी है। **प्रमाण**–दुगुने पानी के साथ प्रात और सायं लेना चाहिए।

९१ द्राक्षासव

गुणधर्म–प्रतिदिन जीवन में उत्साह और स्फूर्ति न होने के कारण जीवन आनन्ददायक एवं सह्य नहीं होता है। अव्यवस्थित पाचन शक्ति और मंदाग्नि मुख्यतया निरुत्साह के कारणीभूत होते है। स्फूर्ति-द्राक्षासव प्रतिदिन भोजनोत्तर सेवन करते रहने से भूख अच्छी तरह लगती है, पेट साफ रहता है एवं उत्साह ताकत भी बढती है।

दो तीन चम्मच समभाग पानी के साथ प्रात साय दो बार लेना। शौच को साफ रखने के लिये सोते समय २॥ तोले समभाग पानी के साथ लेना उत्तम है।

९२ सौभाग्य सुंठीलेह

मुख्य द्रव्य–पिपली, आस्कंद, अजमोद, दालचीनी, जीरा, जटामासी, तमालपत्र, आदि। **गुणधर्म**–प्रसूतावस्था मे विकार न होने के लिये और अग्निमाद्य, जीर्णज्वर, खाँसी, साँस, वातविकार इनमे लाभप्रद है। **मात्रा**–-।।- से १ तोला। **अनुपान**–दूध के साथ।